नित्यकर्म विधि
तथा
देवपूजा पद्धति

(श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर, वाराणसी)

संस्थापक - श्री ठाकुरदास सुरेका

प्रकाशक - श्री रतनलाल सुरेका

श्री रावणकृतशिवताण्डवस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः ।। जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् । डमड्डमड्डमड्डमन्निनादमड्डमर्वयं चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।१।। जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि । धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिःप्रतिक्षणं मम ।।२।। धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे । कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।।३।। जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे । मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं विभर्तु भूतभर्तरि ।।४।। सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः । भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।५।। ललाटचत्वरज्ज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभानिपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् । सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरोजटालमस्तु नः ।।६।। करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके । धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ।।७।। नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्ध-

(शेषांश कवर पृष्ठ ३ पर देखें)

T

बन्धुकन्धरः । निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥८॥ प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा विडम्बिकण्ठकन्धरारुचिप्रबन्धकन्धरम् । स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥ अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् । स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥ जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमस्फुरद्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट् । धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥ दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः । तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥१२॥ कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् । विमुक्तलोललोचनाललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥ इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरोविशुद्धिमेतिसन्ततम् । हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथागतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥१४॥ पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे । तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१५॥

इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

आरती

भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे ॥
भक्तजनोंके संकट, छिनमें दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसै मनका ॥ प्र० ॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॥ ॐ ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसको ॥ प्र० ॥
तुम बिनु और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्र० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणाके सागर, तुम पालन-कर्ता ॥ प्र० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ प्र० ॥
किस बिधि मिलूँ दयामय ! मैं तुमको कुमती ॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्र० ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्र० ॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा ॥ ॐ ॥

नित्यकर्म-विधि

तथा

देवपूजा-पद्धति

प्रकाशक

रतनलाल सुरेका

ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड

सलकिया, हवड़ा

T

आदि संग्रहीता : स्व० पं० मायाप्रसादजी शास्त्री

प्रथम से त्रयोदश संस्करण तक : २,८०,००० प्रतियाँ

वर्तमान चर्तुदश संस्करण : १५,००० प्रतियाँ

विक्रम संवत् २०३७

मुद्रक :

दी इउरेका प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लि०

गोदौलिया, वाराणसी-२२१००१

प्राप्ति-स्थान

ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड

प्रधान कार्यालय

सेठ हरदयाल सुरेका लेन

सलकिया (हवड़ा)

दूरभाष : ६६४४८०

शाखा कार्यालय

दुर्गाकुण्ड

वाराणसी-५

दूरभाष : { ६३८२०, ५४४८०

विशेष : डाक द्वारा पुस्तक केवल वाराणसी कार्यालय से ही सुलभ हो सकती है।

T

सम्पादकीय

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोक संग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥

—भगवान् श्रीकृष्ण

मानव चरमोत्कर्ष प्राप्तिके लिए सदा सर्वदा प्रयत्नशील रहा है। उत्तमोत्तम कर्मसे ही प्राणी मनुष्यसे देवता एवम् अधमातिअधम कर्मोंसे दानवरूप धारण करता चला आ रहा है। विश्वसभ्यतामें भारत कर्मप्रतापसे ही सदा अग्रणी रहा है। लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णने भी कर्मको ही सर्वोपरि सिद्ध करते हुए अर्जुनको महाभारतके लिए उद्यत किया था। इतना ही नहीं परमवीतराग अमलात्मा परमहंस विदेहराज जनकादि भी आसक्तिरहित कर्मद्वारा ही परम सिद्धिको प्राप्त हुए थे।

सलकिया (हवड़ा) का सुरेकापरिवार सेठ श्रीविष्णुदयाल सुरेकाके समयसे आजतक सत्कर्ममें सदा तत्पर रहा है। इसी वंशमें उत्पन्न परमभागवत सत्कर्मनिष्ठ सेठ श्रीठाकुरदास सुरेकाने अनुभव किया कि कलिजनित क्लेशोंके निवारणार्थ एक उचित शास्त्रविधियुक्त—कर्म निर्देशिकाका निर्माण होना चाहिए, जिससे कि अल्पज्ञ भी समुचित लाभ उठा सकें। ऐसी स्थितिमें उन्होंने अपने पूज्य गुरुवर्य परमवीतराग महात्मा आचार्य मायाप्रसादजी महाराज (जामनगर-सौराष्ट्र) से आग्रह किया कि वे एक ऐसा लघुग्रंथ तैयार करनेकी कृपा करें जिसके अनुसार कर्म करके मानव मात्र ऐहलौकिक एवम् पारलौकिक कल्याणको प्राप्तकर सके।

महाराजश्रीके निर्देश एवम् भारतके गण्यमान्य विद्वानोंके सहयोगसे, श्रुति-स्मृति—पुराण गृहसूत्रोंका सारसर्वस्व यह लघु संग्रह सर्वसाधारणके लाभार्थ प्रकाशित होने लगा तथा आजतक लाखों-लाखों आस्तिक सज्जनोंने इससे लाभ उठाया है।

पूज्यपितामह सेठ श्रीठाकुरदास सुरेकाके स्वर्गवासके पश्चात् वर्तमान प्रकाशक सेठ श्रीरतनलाल सुरेका भी उक्त कार्यमें तनमनधनसे तत्पर हैं। अबतक इस पुस्तकके संस्करणों की लगभग तीन लाख प्रतियाँ प्रकाशित हो धर्मार्थ वितरित हो चुकी हैं।

प्रभुकृपासे अब चतुर्दश संस्करण आपके हाथोंमें है। दुरूहस्थलोंको लोकोपयोगी एवम् सरल बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। इतना ही नहीं आप श्रद्धालु जनोंसे प्राप्त स्तुत्याग्रहसे प्रेरित हो यथासंभव स्थलोंमें परिवर्तन तथा वृद्धि भी की गयी है।

भारतीय धर्म एवम् संस्कृति के आधार स्तम्भ यातिचक्र चूड़ामणि अनन्त श्री विभूषित पूज्य गुरुवर्य स्वामी श्री करपात्रीजी महाराजने कृपाकर जो भूमिका-रूपमें आशीर्वाद प्रदान किया है उससे इस महान संग्रहके गौरवकी वृद्धि हुई है। इसके लिए हम उनकी अहैतुकी कृपाके लिए सदा आभारी हैं।

मानव शिक्षण संस्थान वाराणसीके संस्थापक पंडितराज आचार्य लालबिहारीजी शास्त्रीने अपने अमूल्य एवम् व्यस्त समयमें भी वर्तमान त्रयोदश संस्करणकी सफलताके लिए अनेक स्थलोंपर शास्त्रीय सुझाव दिये हैं, उनके लिए हम सदा आभारी हैं।

सनातन धर्मके सजग प्रहरी एवम् पूज्य स्वामी श्री करपात्री जी महाराज के प्रधान शिष्य श्री सदानन्दजी सरस्वती "वेदान्त स्वामी" के भी हम ऋणि हैं जिन्होंने अनेकों स्थलोंपर शास्त्रीय सुझाव प्रदानकर हमें मार्ग निर्देष किया।

सर्वाधिक साधुवादके पात्र सेठ श्रीरतनलालजी सुरेका तथा इनके उत्साही पुत्र श्री राजकुमार सुरेका हैं जिन्होंने इस धर्मकार्यमें उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान कर आस्तिकोंको लाभान्वित किया। अन्तमें कृपालु पाठकोंसे विनम्र निवेदन है कि मानवीय उन्मादके फलस्वरूप जो भी त्रुटियाँ रह गयी हों उन्हें सुधारकर हमें सूचित करने की कृपा करें, जिससे आगामी संस्करणको और भी उत्तमरूपमें प्रकाशित किया जा सके।

इत्यलम्

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्॥

वैक्रमाब्द २०३७

बटुकप्रसाद शर्मा शास्त्री
पुस्तकालयाध्यक्ष (मानस पुस्तकालय)
श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर,
वाराणसी।

T

॥ श्रीहरिः ॥

परमपूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजकी शुभाशंसा

'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः ।'

वर्णाश्रमानुसारी वैदिक सनातन धर्मशास्त्र-सम्मत स्वधर्मानुष्ठान ही सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् भगवान्‌की महती सपर्या है। इन्हीं श्रौत-स्मार्त-कर्मोंका समावेश अष्टचत्वारिंशत् संस्कारोंमें भी होता है। संस्कार मलापनयन और गुणाधान द्वारा वस्तुको चमत्कृत करते हैं। जैसे हीरक आदि रत्न निघर्षणादि संस्कारों द्वारा मलापनयन पूर्वक संस्कृत होकर चमत्कृत होते हैं, वैसे ही जन्मना ब्राह्मणादि चातुर्वर्ण्य संस्कारोंसे ही प्रदीप्त (तेजस्वी) होते हैं।

गर्भाधानादि सस्कारोंका भी मलापनयन अतिशयाधानादि द्वारा आत्मशुद्धि विधान में ही तात्पर्य है—

'गार्भैर्होमैर्जातकर्म चौड़ मौञ्जी निबन्धनैः ।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपभृज्यते ॥२७॥
स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैः त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥२८॥

(मनुस्मृति—२)

अर्थात् गर्भाधानादि संस्कारोंके द्वारा बीजादि निहित पैतृक दोष और गर्भवासादि प्राप्त अशुचिप्राय मातृक दोष दूर होते हैं तथा स्वाध्याय-व्रतादि द्वारा शरीरावच्छिन्न आत्मामें ब्रह्म-प्राप्तिकी योग्यता आती है। यह भगवान् मनुका कहना है।

भगवदाराधन बुद्धि से अनुष्ठित नित्य नैमित्तिक कर्मों द्वारा अन्तःकरणादि कार्यकरण सङ्घातकी शुद्धि होती है। तथा अन्तःकरणशुद्धि से ही (१) नित्यानित्य वस्तु विवेक, (२) इहामुत्रार्थफलभोगविराग, (३) शमदमादि

षट् साधन सम्पत्ति और (४) मुमुक्षुत्व–यह साधन चतुष्टय प्राप्त होता है। तभी प्राणी भगवत्तत्त्व विज्ञान एवं भगवद् भक्तिमें परिनिष्ठित होकर कृतार्थ होता है।

नित्य नैमित्तिक कर्मोंके अनुष्ठान विना भक्ति अथवा तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति नहीं होती अतः जीवनकी सफलताके लिए नित्य नैमित्तिक कर्मोंका अनुष्ठान अनिवार्य है।

'सन्ध्या हीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।'

अर्थात् सन्ध्यादि नित्यकर्मोंके अनुष्ठान विना द्विज सर्वथा अशुचि (अपवित्र) एवं सभी कर्मोंके अयोग्य रहता है।

जन्मना वर्णव्यवस्था होनेपर भी उसमें सत्कर्मोंसे उत्कर्ष एवं दुष्कर्मोंसे अपकर्ष होता है। इसीलिए आचार्य सर्वप्रथम द्विजका उपनयन (यज्ञोपवीत) करके उसे शौचाचारकी शिक्षा देकर अग्रिम सर्व कर्मों एवम् पुरुषार्थोंके योग्य वनाता है।

यद्यपि धर्मशास्त्रोंमें साङ्गोपाङ्ग सभी विधानोंका वर्णन है ही तथापि अधिकारी जनोंकी सुविधा के लिए ऐसी नित्यकर्म पद्धति का सङ्कलन आवश्यक था जिससे कि अधिकारी लोग अधिकाधिक लाभ उठा सकें।

श्री रतनलालजी सुरेका द्वारा प्रकाशित 'नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति' से यह कार्य अच्छे ढङ्गसे सम्पन्न हो सकता है। इसमें प्रातःस्मरण शौच, दन्त-धावन, स्नान, सन्ध्या, तर्पण, वलिवैश्वदेव एवम् विविध देवोंकी पूजाका सरल तथा प्रामाणिक वर्णन है, और उसके साथ ही संक्षेपमें अनेक ज्ञातव्य वातें लिखी गयी हैं। इस एक पुस्तकके द्वारा संक्षेपमें सनातन धर्मकी आवश्यक ज्ञातव्य वस्तुओंका अनुष्ठानोपयोगी ज्ञान हो सकता है।

करपात्र स्वामी

श्रीगंगादशहरा
२०३७

प्रकाशक वंश-परिचय

'ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड', उसके संस्थापक स्व० सेठ ठाकुरदास सुरेका; सेठ रतनलाल सुरेका एवं उनकी वंश-परम्पराके विषयमें निरंतर जिज्ञासायुक्त पत्र आते रहते हैं। पृथक्-पृथक् व्यक्तिगत रूपसे उन सभीका उत्तर देना संभव नहीं हो पाता। अतः समष्टिरूपसे तत्संबंधी संक्षिप्त परिचय 'नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा-पद्धति के इस चतुर्दश संस्करणमें प्रकाशित किया जा रहा है।

सेठ ठाकुरदास सुरेकाके पितामह सेठ विष्णुदयाल सुरेकाका जन्म राजस्थान स्थित रामगढ़के एक सम्मान्य अग्रवाल वैश्य परिवारमें हुआ था। उस समय राजस्थानमें शिक्षाका विशेष प्रचार न होनेसे व्यापारिक शिक्षामात्र प्राप्त कर सके। किशोरावस्थामें ही व्यापारके लिए घरसे निकल पड़े और मथुरामें अपना कारबार फैलाया, जिसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। इससे प्रोत्साहित होकर वे मथुरा छोड़कर वाणिज्यके प्रमुख केन्द्र कलकत्ता नगरमें आ बसे। यहाँ पहुँचनेपर उनके सुपुत्र सेठ हरदयाल सुरेकाने व्यापार का सम्पूर्ण भार अपने ऊपर ओढ़ लिया। अपनी योग्यता एवं कार्यक्षमताके बल पर उन्होंने व्यापारको बहुत बढ़ाया और भारतके प्रमुख बड़े नगरोंमें अनेक शाखाएँ स्थापित कीं। उनका प्रधान व्यापार किरासन तेलका था और उस समय उसपर उनका एकाधिपत्य था। सेठ विष्णुदयाल सुरेकाने दो बार सम्पूर्ण तीर्थोंकी पद-यात्रा पूर्ण की और अपने सुयोग्य पुत्र सेठ हरदयाल सुरेका द्वारा वाणिज्य तथा गृहस्थी दोनोंका कार्यभार सुचारु-रूपसे सँभाल लेनेपर निश्चित होकर काशीमें रहने लगे। यहाँ उन्होंने मणिकर्णिकाके समीप ब्रह्मनाल मुहल्लेमें 'श्रीविष्णुदयालेश्वर' नामसे शिव-मंदिर प्रतिष्ठित किया और भगवान् शंकरकी आराधना करते हुए शिवलोकवासी हुए। उनके दिवंगत होनेपर सेठ हरदयाल सुरेकाने सलकिया, हवड़ामें श्रीसत्यनारायण-मंदिर एवं धर्मशालाका निर्माण तथा उनके संचालन हेतु 'श्रीसत्यनारायण ट्रस्ट' की स्थापना कर महान् यश अर्जित किया। अन्यान्य स्थानोंपर भी बहुतेरे धर्म-कार्य कर वे स्वर्गवासी हुए। उनके बाद मंदिर तथा न्यासकी सुव्यवस्था उनके सातों पुत्रों क्रमशः सेठ दुर्गाप्रसाद सुरेका, सेठ मथुराप्रसाद सुरेका, सेठ रामप्रसाद सुरेका,

सेठ मुरलीधर सुरेका, सेठ नन्दराम सुरेका, सेठ लक्ष्मीनारायण सुरेका और सेठ ठाकुरदास सुरेकाकी देख-रेखमें सुचारु रूपसे चलती रही। सम्प्रति इन्हीं सातों भाइयोंके पौत्र-प्रपौत्र उनका सफल संचालन कर रहे हैं। यों तो श्रीसत्यनारायण-मंदिरमें वर्षभरके सभी उत्सवादिका आयोजन शास्त्रोक्त विधि-विधानपूर्वक होता ही रहता है, किंतु श्रावण मासमें झूलनोत्सव विशेष समारोहपूर्वक सपन्न होता है, जिसके वैशिष्टच एवं अपूर्वतासे स्थानीय जन भलीभाँति परिचित हैं। इसी न्यासके द्वारायात्रियोंके निवासकी सुख-सुविधाके हेतु मथुरा, वाराणसी, रानीगंज, फतेहपुर, रामगढ़, लोहानी आदि स्थानोंमें धर्मशालाओंका निर्माण कराया गया है।

स्व० सेठ ठाकुरदास सुरेका—सेठ हरदयाल सुरेकाके आत्मज सेठ ठाकुर-दासका जन्म हवड़ा जिलांतर्गत, बांदाघाट, सलकियामें संवत् १९३३ वै० में हुआ। कनिष्ठ पुत्र होनेके कारण वे विशेष लाड़-प्यारमें पले। इनका विवाह किशोरा-वस्थामें ही हो गया था। सौभाग्यसे इनको ऐसी सुशील एवं विदुषी धर्मपत्नी मिलीं, जिनके सुविचार, सुव्यवस्था तथा सत्परामर्शके कारण इन्हें अपने जीवनमें वहुत वड़ा सहारा मिला।

यौवनावस्थामें प्रवेश करते ही इन्हें पितृ-वियोग सहन करना पड़ा। सेठ ठाकुरदासको जो भी पैतृक सपत्ति प्राप्त हुई, वह स्वल्प समयमें ही सट्टा बाजार-में सलट गई। ऐसे विषम समयमें इनकी धर्मपत्नीने सारा गृह-कार्य स्वयं संभाला। प्रतिदिन प्रातःकाल आगत भिक्षुकोंको अपने हाथोंसे भिक्षा अर्पित करना तथा अतिथियोंको स्वयं भोजन वनाकर जिमाना उनकी दैनिक परिचर्या थी। यौवनकालसे प्रौढ़ावस्था तक अपने आत्मज सेठ गोविंदरामके साथ सेठजीने अनेक बार व्यापारमें परिवर्तन किया, फिर भी सफलताने साथ नहीं दिया। सवत् १९७७ की विजयादशमीके शुभ मुहुर्तमें ढलाई कारखानेकी स्थापनाके दिनसे इनकी सफलताका श्रीगणेश होता है। उक्त कारखानेकी उन्नतिके लिए सेठ गोविंदरामने अपना तन निछावर कर दिया। कारखानेकी उत्तरोत्तर उन्नति के साथ-साथ उनका स्वास्थ्य क्रमशः गिरता गया। व्यापारमें अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी सेठ गोविंदराम सुरेकाने दान, धर्म और देवार्चन-की कभी अवहेलना नहीं की। वे परम भावुक, भक्त और धार्मिक मनोवृत्तिके व्यक्ति थे। रोगग्रस्त होनेपर वे प्रायः काशीमें ही रहने लगे, जहाँ ३५ वर्षकी अल्पायुमें ही उनका देहावसान हो गया।

पिता पितामहश्चैव प्रपितामह एव च ।

प्रकाशक के पूज्य प्रपितामह
स्वर्गीय सेठ श्री हरदयालजी सुरेका

प्रकाशक के पूज्य पितामह
स्वर्गीय सेठ श्रीठाकुरदासजी सुरेका

प्रधान पितरः प्रोक्ता श्राद्धतर्पणकर्मणः ॥

प्रकाशक के पूज्य-पिता

स्वर्गीय सेठ गोविन्दरामजी सुरेका

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः ।

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व-देवताः ॥

प्रकाशक

सेठ रतनलाल जी सुरेका

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफल-हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोस्त्वकर्मणि ॥
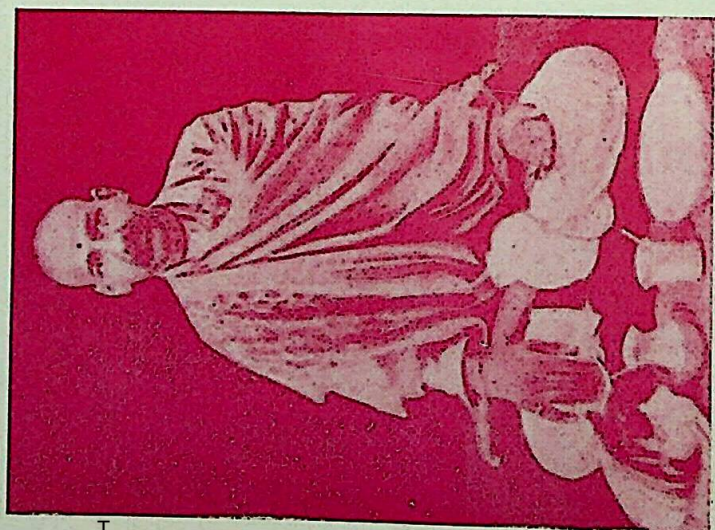
सेठ ठाकुरदास सुरेका, ज्ञानी होनेके कारण पुत्र-शोकके भीषण वज्रपातको ईश्वरेच्छा समझकर सहन कर गए। उनकी विधवा पुत्र-वधू भागीरथी देवीने पति-वियोगके पश्चात् अपना शेष जीवन देवार्चन करते हुए काशीमें ही व्यतीत किया। सेठ ठाकुरदास सुरेका, पौत्र सेठ रतनलाल सुरेकापर अपना ध्यान केन्द्रित-कर व्यापारमें प्रवृत्त हुए और उन्हें बराबर सफलता मिलती गई। इस सफलता का सदुपयोग उन्होंने सर्वप्रथम 'ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड' की स्थापना कर किया। इस न्यासके माध्यमसे उन्होंने लोकहितकारी अगणित कार्य किए, जिनमें वाराणसीके मणिकर्णिका घाटके समीप ब्रह्मनाल मुहल्लेकी तथा बिलासपुर, अमरकटककी धर्मशालाएँ, जयपुरके वनस्थली विद्यापीठके अन्तर्गत निर्मित गृह-शिक्षा-भवन, सलकिया हवड़ाके नंदीबगान मुहल्लेमें स्थित 'ठाकुरदास सुरेका फ्री प्राइमरी स्कूल', वेलूरके दीन-दुखी लाल बाबा आश्रममें स्थित यज्ञशाला और छात्रावास, सलकियाकी श्मशानभूमिका विश्रामगृह तथा सलकियाके बाँदाघाटका प्याऊ विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। वाराणसीके हरिहरक्षेत्र-में आज भी पूर्ववत् चल रहा अन्नक्षेत्र, रामगढ़ (राजस्थान) में वैवाहिक कार्यों-की विधिवत् संपन्नताके हेतु निर्मित नौहरें एवं विभिन्न तीर्थस्थानोंमें जीर्णोद्धार किए गए अनेकानेक देवालय सेठ ठाकुरदास सुरेकाकी महती उदारताके प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनके द्वारा स्थापित न्याससे ही प्रस्तुत पुस्तकका प्रकाशन एवं निःशुल्क धर्मार्थ वितरण अनेक वर्षोंसे निरंतर हो रहा है।

महाप्रस्थानका समय निकट देख सेठ ठाकुरदास सुरेकाने गायत्री-पुरश्चरण महायज्ञ आयोजित किया, जिसमें दूर-दूरसे उक्त विषयके विशेषज्ञ शास्त्रविद् आमंत्रित होकर पधारे थे। स्वरुचिका कार्य होनेसे इस महायज्ञमें उन्होंने मुक्त-हस्तसे अर्जित धनराशिका सदुपयोग किया। संवत् २००५ वै० की मार्गशीर्ष ४ को अर्धरात्रिके समय चिकित्सकोंने सेठजीके शरीरको जीवात्मारहित घोषित कर दिया। अतः भूमि-शय्याके निमित्त उनका शरीर भवनके प्रांगणमें उतारा गया। उस समय उपस्थित सभी व्यक्तियोंने साश्चर्य उन्हें अपने पौत्र सेठ रतनलाल सुरेकाको सम्बोधित कर यह कहतेहुए सुना कि 'तुमने बड़ी शीघ्रता की। इष्टदेव (भगवान् श्रीसत्यनारायणजी) के दर्शन किए बिना मैं कैसे जा सकता हूँ? उनके पट तो ५ बजे खुलेंगे।' सचमुच ही भगवान्के पट खुलते ही उनका अनन्य सेवक अन्योंको स्वकर्मका सत्य-मार्ग प्रदर्शित करता हुआ अनन्तमें विलीन हो गया।

स्वर्गीया श्रीमती भागीरथी देवी सुरेका—सेठ गोविंदराम सुरेकाकी धर्मपत्नी श्रीमती भागीरथी देवी धर्मनिष्ठ महिला थीं। उनका समय अहर्निश पूजार्चनमें ही व्यतीत होता था। उन्होंने ब्रह्मनाल वाराणसी स्थित भागीरथीश्वरके मन्दिरका जीर्णोद्धार तथा दीन-दुखी लाल बाबाके वेलूर स्थित आश्रममें रामायण-भवनका निर्माण कराया। इनके अतिरिक्त अनेक स्थानोंपर धर्मशालाएँ तथा कक्ष भी बनवाए। काशीधाममें एक ऐसे अद्वितीय मंदिरके निर्माणकी उनकी प्रबल आकांक्षा थी, जो इस देवालयपुरीके दर्शनीय स्थानोंमें परिगणित हो। अनेक बार प्रयत्न करनेपर भी अपने जीवनकालमें मनःकामनाकी पूर्ति होते न देख उन्होंने सेठ रतनलाल सुरेकाको उसके लिए वचनबद्ध किया, क्योंकि वे पूर्ण रूपसे आश्वस्त थीं कि उनका पुत्र बातका धनी है, जो प्राणोंकी परवाह न कर अपने प्रणका पालन करता है। पुत्रके प्रतिज्ञाबद्ध होनेपर उनके मनको बड़ी शांति मिली और वे निश्चित होकर सम्वत् २०१० वै० की कार्त्तिक कृष्ण ३० को सदैवके लिए शांत हो गयीं।

पूजनीय माता श्री भागीरथी देवी सुरेकाके स्वर्गारोहणके पश्चात् सेठ रतनलाल सुरेकाने उनकी पावन स्मृतिमें श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिरको प्रतिष्ठितकर उनकी मनःकामनाको साकार रूप प्रदान किया। यह देवालय वाराणसीके सुप्रसिद्ध मंदिरद्वय श्रीदुर्गाजी तथा श्रीसंकट-मोचन-हनुमानजीके मध्यमें स्थित है, और आधुनिक युगकी एक दर्शनीय अनुपम कलाकृति है। इसके निर्माणमें सेठजीने अपने तन-मन-धन तीनोंका सयन्वय कर भारतको एक अमूल्य निधि भेंट की है। इसमें देव-विग्रहोंके तीन मंदिर हैं, जो एक दूसरेसे संयुक्त हैं। मध्यके मंदिरमें परम रामभक्त श्रीहनुमान् सेवित श्रीराम-लक्ष्मण-जानकी उनके दक्षिणके मन्दिरमें माता अन्नपूर्णाके समक्ष खप्पर फैलाए भगवान् भोलेनाथ तथा बाएँ मन्दिरमें भगवान् नारायण श्रीलक्ष्मीसहित विराजमान हैं। 'रामतें अधिक रामकर दासा' के अनुसार सेठजीने इस मंदिरमें रामभक्त गोस्वामी तुलसीदासकी प्रतिमा भी श्रद्धापूर्वक प्रतिष्ठित की है जिनके समक्ष अहर्निश उनकी अद्वितीय विश्वविश्रुत कृति श्रीरामचरितमानसका अखंड पाठ नियमितरूपसे होता है। साथ ही संपूर्ण श्रीरामचरितमानसको मंदिरकी संगमरमरकी भित्तियोंपर उत्कीर्ण कराकर सेठजीने उस अमूल्य राष्ट्र-निधिकी स्थायी सुरक्षा की है। मंदिरके चतुर्दिक् निकुंज वाटिकाएँ, सर और सागरके

साथ-साथ मंदिर, ऋषि-कुटीर आदिसे सुशोभित हिमालयकी धवल चोटीपर विराजमान भगवान् सदाशिवकी जटासे निरंतर प्रवाहमान जटाशंकरीकी कल-कल ध्वनि मनको बरबस मोह लेती है और दक्षिणके रामेश्वर-मंदिरमें भक्तों द्वारा उच्चरित स्तोत्र-पाठ एवं वैदिक विद्वानों द्वारा सस्वर वेद-गान दर्शकोंको त्रेतायुग का स्मरण दिलाता है।

सेठ रतनलाल सुरेका—ये वह व्यक्ति हैं, जिनकी धवल कीर्तिसे सुरेका वंशाकाश चिरंतन काल तक आलोकित होता रहेगा। इनका नाम स्वयं ही इनके परिचयके लिए पर्याप्त है। 'रतनलाल सुरेका' नाम लेनेमात्रसे सुरेका-वंशके वर्तमान ही नहीं, गत और आगत पीढ़ियोंके महानुभावोंका भी परिचय सहज ही मिल जायगा। अपने पितामह स्वर्गीय सेठ ठाकुरदास सुरेकाके जीवनकालमें ही इन्होंने वाणिज्यके साथ-साथ उनके समस्त धार्मिक कार्योंका महत् भार भी सँभाल लिया था। उनके विशिष्ट गुण दया-धर्म एवं श्रद्धा-विश्वासकी प्रतिच्छाया पूर्णरूपसे इनपर पड़ी है। वे उनके सद् उद्देश्योंको अग्रसर करनेमें सदा तत्पर रहते हैं।

प्रातःस्मरणीय संत गोस्वामी तुलसीदासजीपर अटूट श्रद्धा होनेके कारण इन्होंने उन्हींके सुनाम और सदुपदेशोंके प्रचार-प्रसारके लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर, श्री सत्यनारायण तुलसी मानस सेवा संस्थान, तुलसी मानस अंध विद्यालय, तुलसी शोध संस्थान, मानस पुस्तकालय एवं वाचनालय, 'मानस-मयूख' शोध पत्रिका, मोहन मानस पुरस्कार आदि इस तथ्यकी वास्तविकताके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। धर्म या संप्रदाय, जाति या वर्ण, उच्च या नीच, किसी भी प्रकारकी भेद-बुद्धिसे सर्वथा निर्लिप्त होकर, यहाँ तक कि पात्र-अपात्रका विचार भी किए बिना, इनके दानकी अक्षुण्ण धारा निरंतर प्रवाहमान है। धोखेमें कहीं सुपात्रको भी वंचित न रह जाना पड़े और 'ना जाने किस भेषमें नारायण मिल जायँ'—ये तथ्य बराबर इनकी दृष्टिमें रहते हैं।

ये अति विनम्र स्वभावके संकोची व्यक्ति हैं। धोखेमें ही सही यदि किसीकी बाँह पकड़ ली तो स्वयं तो उसे निभाते ही हैं, दूसरोंसे भी उसकी संस्तुति कर देते हैं। अहंका रंचमात्र भी इनमें लवलेश नहीं है। आत्म-प्रशंसा सुननेके ये एकदम अभ्यस्त नहीं हैं।

अपने पितामह द्वारा स्थापित 'ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड' के माध्यमसे इन्होंने बहुतसी लोकोपयोगी सेवाएँ की हैं, जिनमें 'मोहनलाल सुरेका हॉस्पिटल', रामगढ़ (राजस्थान); 'ठाकुरदास सुरेका बाल-उद्यान' तथा 'मोहनलाल सुरेका कमर्शियल एव टेकनिकल स्कूल', सलकिया, हवड़ा; विशुद्धानंद सरस्वती दातव्य औषधालय, कलकत्ताका आपरेशन-रूम, व्रज-सेवा-समिति टी०वी० सैनेटोरियमके भवन-निर्माणमें योगदान, वृन्दावनके परिक्रमा-मार्गमें पुल आदिके निर्माणमें योगदान उल्लेखनीय है। ये तो प्रत्यक्ष दानके संक्षिप्त विवरण हैं, गुप्त दान जो इससे कहीं अधिक हैं, जिनका लेखा-जोखा स्वयं उनके पास नहीं है।

'नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति'के प्रकाशनमें इनकी विशेष अभिरुचि रही है, जिसके परिणामस्वरूप उसके प्रस्तुत संस्करणमें पर्याप्त संशोधन परिवर्तन एवं परिवर्द्धन संभव हो सका। पूर्वकी अपेक्षा उसकी उपयोगितामें महती अभिवृद्धि हुई है। वे बरावर कहते रहते हैं कि ऋषि-प्रोक्त धर्म एवं उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्गका अवलम्बन करनेसे ही हमारा और सभीका कल्याण होना संभव है तथा इस पुस्तकके अनुसार नित्य नियमित रूपसे कर्म करता हुआ प्राणी एकदिन अवश्य अपने ठीक लक्ष्य पर पहुँच जायगा और उसका लोक-परलोक दोनों सुधर जायगा। यदि इससे कुछ लोग भी प्रेरणा प्राप्त कर लाभान्वित हुए, तो इसका प्रकाशन सार्थक होगा।

गृहस्थ और व्यवसायी होते हुए भी सेठ रतनलाल सुरेकाकी प्रवृत्ति विरक्त जैसी है। दुर्दिनकी प्रचंड वर्षा भी आपके धैर्यको विगलित या विचलित नहीं कर पाती। कोई भी परिस्थिति इन्हें धर्म-पथसे विरत करनेमें असमर्थ है। ऐसे ही उच्चादर्शवाले महान् पुरुषसे समस्त मानवका कल्याण होता है। इनका आदर्श वाक्य है—

सीय राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी॥

सत्यनारायण झुनझुनवाला
मंत्री
ठाकुरदास सुरेका चैरिटी फंड

प्रकाशक के ज्येष्ठ पुत्र
स्वर्गीय मोहनलालजी सुरेका

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेह योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥

प्रकाशक के पुत्र
चि० श्रीराजकुमारजी सुरेका

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी ।
जो पितु मातु बचन अनुरागी ।

T

राम बाम दिसि जानकी, लषन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्याणमय, सुरतरु तुलसी तोर।।
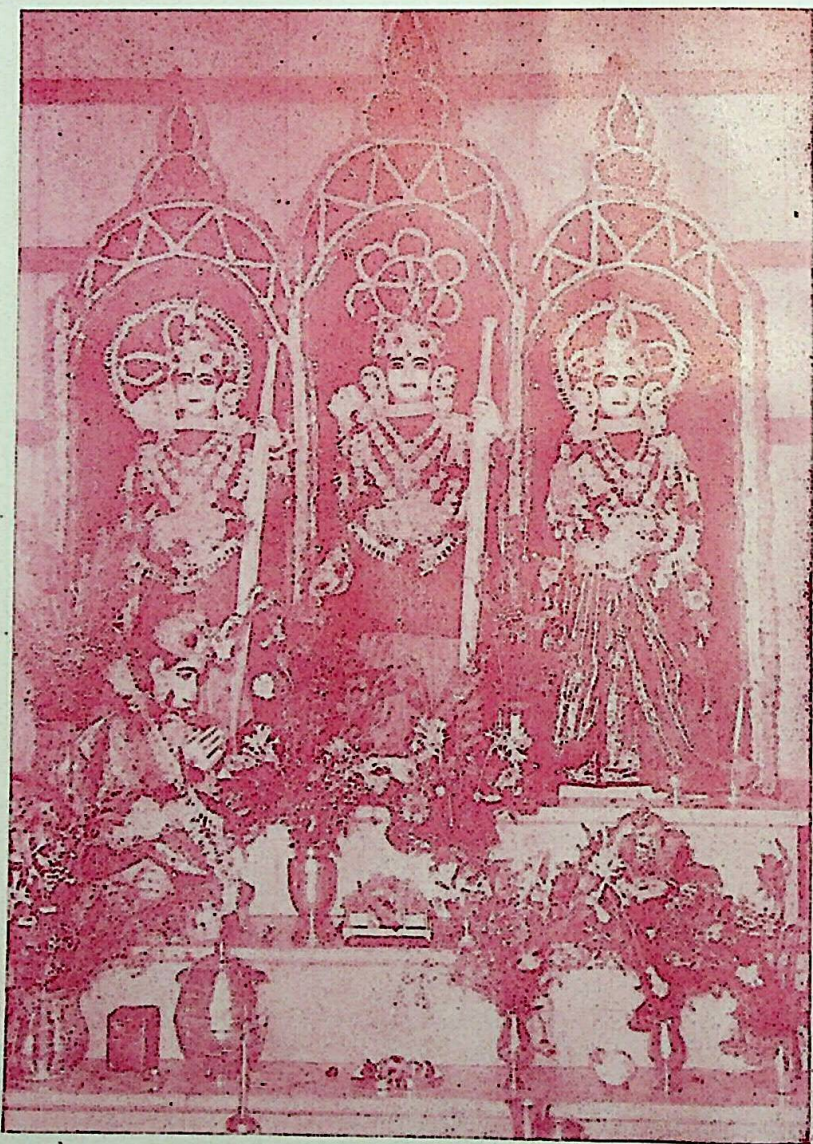
श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर (वाराणसी) में प्रतिष्ठापित
श्रीरामजी, श्रीजानकीजी, श्रीलक्ष्मणजी एवम् श्रीहनुमानजी

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मङ्गलाचरण

श्रीगणेश इह विश्रुत-नामा । रामनाम-महिमाञ्चितधामा ॥
भक्तचित्त-वाञ्छितकृतपूर्तिः । मङ्गलायतन-मङ्गलमूर्तिः ॥ १ ॥

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥ २ ॥

खर्व्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम् ।
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघात-विदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम् ।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कर्मसु ॥ ३ ॥

विघ्नाध्वान्तनिवारणैकतरणिर्विघ्नाटवीहव्यवाट् ।
विघ्नव्याल-कुलाभिमानगरुडो विघ्नेभपञ्चाननः ।
विघ्नोत्तुङ्गगिरिप्रभेदन-पविर्विघ्नाम्बुधेर्वाडवः ।
विघ्नाघौघघनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ॥ ४ ॥

दधानं भृङ्गालीमनिशममले गण्डयुगले ।
ददानं सर्वार्थान्निजचरणसेवासुकृतिने ।
दयाधारं सारं निखिलनिगमानामनुदिनम् ।
गजास्यं स्मेरास्यं तमिह कलये चित्तनिलये ॥ ५ ॥

मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकम् ।
कलाधरावतंसकं विलासि लोकरक्षकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम् ।
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ ६ ॥

यजामो गणेशं भजामो गणेशं जपामो गणेशं वदामो गणेशम् ।
स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशं नमामो गणेशं नमामो गणेशम् ॥ ७ ॥

T

मदनदहनके पुत्रको सुमरूँ वारंवार ।
विघ्न मिटै संकट कटै मङ्गल होय अपार ॥ ८ ॥

लम्वोदर भुज चार हैं, नेत्र तीन रंग लाल ।
नाना वर्ण सुवेश हैं, मुख प्रसन्न शशिभाल ॥ ९ ॥

विघ्ननिवारण सब सुख कारण भक्त उधारण ज्ञानधनम् ।
दैत्यविदारण परशूधारण ऋद्धिकारण देववरम् ॥ १० ॥

गिरिजा माता षरामुखभ्राता शङ्कर तात सौख्यकरम् ।
भूसुररक्षक मोदकभक्षक ज्ञानीलक्षक कीर्तिकरम् ॥ ११ ॥

काटत वंधन सब दुखखण्डन गिरिजानन्दन पाशधरम् ।
दुःखविदारण मङ्गलकारण कविवर धारण शीशवरम् ॥ १२ ॥

शुण्डादण्डं तेजप्रचण्डं इन्दुखण्डं भालधरम् ।
मङ्गलकारण दुर्जनमारण विपतिविदारण ऋद्धिकरम् ॥ १३ ॥

करिवदनविमण्ति ओज अखण्ति पूरणपंडित ज्ञानपरम् ।
गिरिनन्दिनिनन्दन असुरनिकन्दन सुरउर चन्दन कीर्तिकरम् ॥१४॥

भूषण मृगलक्षण वीरविचक्षण जनप्रणरक्षण पाशधरम् ।
जय जय गणनायक खलगणघालक दास-सहायक विघ्नहरम् ॥ १५ ॥

मनाऊँ एकदंत महाराज, सुधारो सभी हमारो काज ।
रूप थारो कनकवरण राजै देख कर महाकाल भाजै ॥ १६ ॥

मूरति अतिसुन्दर साजै, दुःख सब दर्शन से भाजै ।
विनती सुणलीजो गणराज सुधारो सभी हमारो लाज ॥ १७ ॥

विघ्नहरण गणनाथजी, कृपा करो महाराज ।
तुम्हरो अब लियो आसरो, रखियो मेरी लाज ॥ १८ ॥

॥ शुभम् ॥

श्रीसत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर, वाराणसी में प्रतिष्ठापित–

बाबा विश्वनाथजी एवम् माता अन्नपूर्णाजी

भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरं ॥

भगवान श्रीविष्णुजी एवम् भगवती श्रीलक्ष्मीजी

तवनाम जपामि नमामि हरी, भवरोग महागदमान अरी ।
गुनसील कृपा परमायतनं प्रनमामि निरन्तर श्रीरमनं ॥

श्रीगणेशजी

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्त, पीताम्वरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।

उद्यद्दिवाकर-विभोज्वलकान्तिकान्तं, विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥
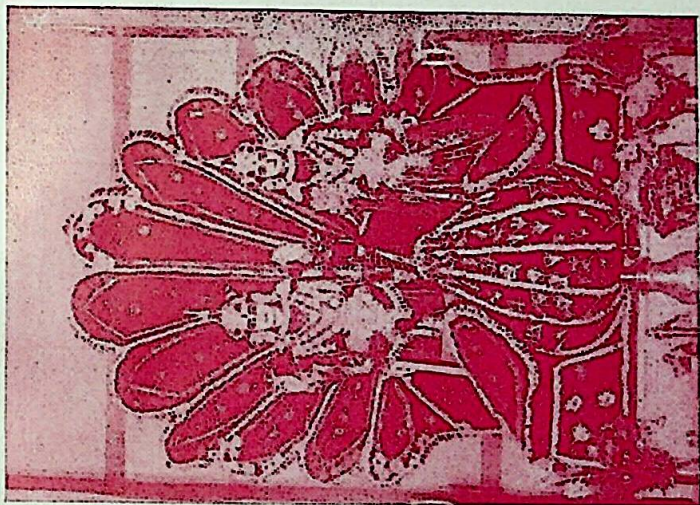
श्रीसत्यनारायण मन्दिर, सलकिया (हवड़ा) में प्रतिष्ठापित
श्रीलक्ष्मीजी, श्रीसत्यनारायणजी एवम् श्रीगङ्गाजी

सत्यनारायणं देव वन्देऽहं कामदं प्रभुम् ।

लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमोनमः ॥
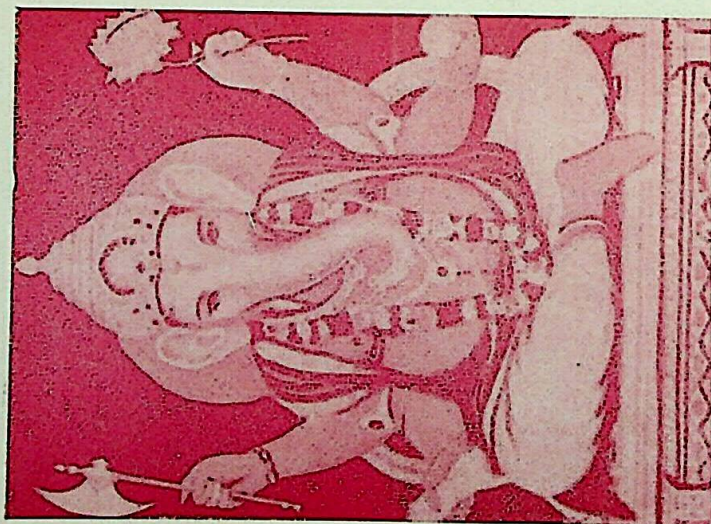
समर्पण

अनाद्यनन्त ऐश्वर्य-विशिष्ट ! अपरिमित-कोटि ब्रह्माण्डनायक !
वेदैकप्रतिपाद्य ! अगणित आर्ताभीष्ट फलप्रद !
दीनबन्धो ! दीननाथ ! भक्तवत्सल ! भगवन् !

श्री श्री सत्यनारायण महाप्रभो !

यह

नित्यकर्म-विधि तथा देवपूजा-पद्धति

रूपी-पुष्प

श्रीचरण-कमलोंमें

सादर समर्पित है ।

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।"

श्रीचरण-सेवक

रत्नलाल सुरेका

T

श्रीसत्यनारायणजी की स्तुति

सत्यदेव भगवानकी सरन सदा सुखखान।
सकल मनोरथ देत प्रभु जो नर कर गुनगान ॥ १ ॥
दीनबंधु श्रीनाथजी निज जन तारक ईस।
द्रवहु सदा इस दास पै करुनामय जगदीस ॥ २ ॥
परम पिता परमेस हे मैं पतितन सिरताज।
वेगि उबारहु जानि निज करहु सकल सुभकाज ॥ ३ ॥
तुम सम हे करुनानिधे करत कौन उपकार।
अगनित गनिकादिक तरे साखि वेद हैं चार ॥ ४ ॥
दयासिंधु नहिं देखते भक्तनके दुखभार।
त्रिविध ताप दुख दूर कर भवसे करते पार ॥ ५ ॥
सत्यदेव भगवानकी कथा जगतमें सार।
सरन तेहिंकी जो लहै ताहि होत उद्धार ॥ ६ ॥
द्विजवर लकड़ीहार अरु साधु वैश्य परिवार।
चंद्रकेतु अरु तुंगध्वज पाँच कथा जग सार ॥ ७ ॥
इन भक्तनके काज प्रभु प्रगटे वारंवार।
सकल मनोरथ सिद्ध करि दिये पदारथ चार ॥ ८ ॥
जन्म जन्म बिनती यही श्रीचरनों में ध्यान।
सज्जन संगति हरि भजन दान धर्म दृढ़ ज्ञान ॥ ९ ॥
स्तुति प्रभुकी जो प्रेमसे पढ़े कपट तजि नित्त।
चार पदारथ देत तेहि प्रभु मन चाहा वित्त ॥ १० ॥
बार बार विनती यही सत्यदेव भगवान।
पार करो भवसिंधु से सेवक अपना जान ॥ ११ ॥

विषय-सूची

T

श्रीः

नित्यकर्म-विधि

तथा

देवपूजा-पद्धति

अथोच्यते गृहस्थस्य नित्यकर्म यथाविधि ।
यत्कृत्वाऽऽनृण्यमाप्नोति दैवात्पैत्र्याच्च मानुषात् ।। (आश्वलायन)

गृहस्थका नित्यकर्म यथाविधि लिखा जाता है जिसके करनेसे देव, ऋषि और पितृ ऋणसे छुटकारा होता है, इसलिए नित्यकर्म अवश्य करें ।

सन्ध्या स्नानं जपश्चैव देवतानाञ्च पूजनम् ।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने ।। (बृ०पा०स्मृ०)

स्नान, सन्ध्या, जप, देवताओंका पूजन, वैश्वदेव और अतिथि-सत्कार ये छः कर्म नित्य करने चाहियें ।

प्रातःस्मरण (शय्यापर भी किया जा सकता है ।)

सूर्योदयसे प्रायः एक घंटा पहले ब्राह्ममुहूर्त होता है । इस समय सोना निषिद्ध है । इस कारण ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए अपने हाथ देखें ।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ।। (आचारप्रदीप)

हाथोंके अग्रभागमें लक्ष्मी, मध्यमें सरस्वती और मूलमें ब्रह्माका निवास है । अतः सुबह (उठते ही) हाथोंका दर्शन करें । पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थनाकर पृथ्वीपर पैर रखें ।

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

हे विष्णुपत्नि ! हे समुद्ररूपी वस्त्रोंको धारण करनेवाली ! तथा पर्वतरूप स्तनोंसे युक्त पृथ्वी देवि ! तुम्हे नमस्कार है, मेरे पादस्पर्शको क्षमा करो ।

पश्चात् मुख धोकर कुल्ला करके नीचे लिखे 'प्रातः-स्मरण' तथा भजनादि करके गणेशजी, लक्ष्मीजी, सूर्य, तुलसी, गौ, गुरु, माता, पिता और वृद्धोंको प्रणाम करें ।

प्रातःस्मरण

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् । उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥१॥ गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः । द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः ॥ विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः । द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् । विश्वं तस्य भवेद् वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित् ॥२॥ सत्यरूपं सत्यसन्धं सत्यनारायणं हरिम् । यत्सत्यत्वेन जगतस्तं सत्यं त्वां नमाम्यहम् ॥३॥ त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेव ! श्रीनाथ ! विष्णो ! भवदाज्ञयैव । प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥४॥ सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् । उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारे ममलेश्वरम् ॥ केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम् । वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ॥ वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने । सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं

च शिवालये ॥ द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् । सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत् ॥५॥ आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयन्तु दिवाकरः । तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः ॥ पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः । सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ॥ नवमं दिनकृत्प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः । एकादशं त्रयीमूर्तिर्द्वादशं सूर्य एव च ॥ द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः । दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥६॥ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥७॥ भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः । रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥८॥ सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च । सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥९॥ सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त । भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥१०॥ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥११॥ सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः ॥१२॥ पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः । पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥१३॥ हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम् । पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम् ॥१४॥ महालक्ष्मि ! नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ! हरिप्रिये !

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ! ।।१५।। उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम् । प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा ।।१६।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके ! शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि ! नमोऽस्तुते ।।१७।। अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा । पञ्च कन्याः[1] स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ।।१८।। अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका । पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।।१९।। कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्याः नलस्य च । ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ।।२०।। अनिरुद्धं गजं ग्राहं वासुदेवं महाद्युतिम् । संकर्षणं महात्मानं प्रद्युम्नं च तथैव च ।। मत्स्यं कूर्मं च वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च । नारसिंहञ्च नागेन्द्रं सृष्टिसंहारकारकम् ।। विश्वरूपं हृषीकेशं गोविन्दं मधुसूदनम् । त्रिदशैर्वन्दितं देवं दृढभक्तिमनूपमम् ।। एतानि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः । सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते स्वर्गलोकमवाप्नुयुः ।।२१।। श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा । प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स विमुच्यते ।।२२।। हे जिह्वे ! रससारज्ञे ! सर्वदा मधुरप्रिये ! नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे ! निरन्तरम् ।।२३।।

शौच-विधि

यज्ञोपवीत कंठीकर दाहिने कानमें लपेट वस्त्र या आधी धोतीसे सिर ढकें। वस्त्रके अभावमें जनेऊको शिरके ऊपरसे लेकर बायें कानके पीछे करें। जलपात्र बायें रख दिनमें

---

1 'पञ्चकं ना, पाठान्तर ।

उत्तर तथा रात्रिमें दक्षिणकी ओर मुखकर नीचे लिखा मन्त्र बोलकर मौन हो मल-त्याग करें।

गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचा ये च गुह्यकाः।
पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम् ॥ (नारद पु०)

पात्रसे जल ले, बायें हाथसे लिंग धोकर उसमें एक बार, पश्चात् गुदा धोकर उसमें तीन बार मिट्टी लगा जलसे शुद्ध करें। बायें हाथको अलग रखते हुए दाहिने हाथसे लाँग (पिछटा) लगाकर उसी हाथमें पात्र लें, मिट्टीके तीन भाग करें, प्रथम से बायाँ हाथ दस बार, दूसरेसे दोनों सात बार और तीसरेसे पात्र तीन बार तथा बायाँ पैर, पश्चात् दाहिना पैर एक-एक बार धो, पात्र शुद्ध करके बची हुई मिट्टी धो दें। सूर्योदयसे पहिले पूर्व, पश्चात् उत्तरकी ओर मुख कर बायीं ओर बारह कुल्ले करें।

दिवा-शौचस्य निश्यर्धं पथि पादो विधीयते।
आर्तः कुर्याद् यथाशक्ति शक्तः कुर्याद् यथोदितम् ॥ (आदित्य पु०)

दिनसे रात्रिमें आधी, यात्रामें चौथाई, तथा आतुरकाल में यथाशक्ति शुद्धि करनी चाहिये किन्तु शक्ति रहते हुए ऊपर लिखे अनुसार कर्म करें।

पुरतः सर्वदेवाश्च दक्षिणे पितरस्तथा।
ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वामे गण्डूषमाचरेत् ॥ (प्रयोग पारिजात)

सामने देवता, दक्षिणमें पितर और पीठ पीछे ऋषियोंका निवास रहता है, इसलिये कुल्ला बायीं ओर करें।

कुर्यात् द्वादश गण्डूषान् पुरीषोत्सर्जने ततः।
मूत्रोत्सर्गे तु चतुरो भोजनान्ते तु षोडश ॥ (आश्वलायन)

मल त्यागके बाद बारह, मूत्र-त्यागके बाद चार और भोजनके बाद सोलह कुल्ले करें।

दन्तधावन-विधि

मुखशुद्धि किये बिना मन्त्र फलदायक नहीं होते। इसलिए सूर्योदयसे पहिले पूर्व, पश्चात् उत्तर अथवा दोनों समय ईशान (पूर्वोत्तर कोण) की ओर मुखकर दतुअन करनी चाहिये। संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्धके दिन, प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और रविवारको दतुअन नहीं करनी चाहिये। इन दिनोंमें मुखशुद्धिके लिए बारह कुल्ले अधिक करें।

मध्यमानामिकाभ्यां च वृद्धाङ्गुष्ठेन च द्विजः।
दन्तस्य धावनं कुर्यान्न तर्जन्या कदाचन॥ (पद्मपुराण)

मध्यमा, अनामिका अथवा अँगूठेसे दाँत साफ करें किन्तु तर्जनी-उँगलीसे कभी न करें।

दतुअन-प्रार्थना

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते॥ (विश्वामित्रकल्प)

मौन-विधि

दतुअन धोकर, नीचे लिखी प्रार्थना करके, करें। पश्चात् दतुअन चीर, जीभी कर, धोकर बाईं ओर फेंक दें।

उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने।
श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्॥ (हारीतस्मृति)

मल, मूत्र, मैथुन, दन्तधावन, श्राद्ध और भोजनके समय मौन रहें।

उवासी, छींक, थूकना

उवासी (जम्हाई) आनेपर "चुटकी" बजायें। छींकनेपर "शतं जीवेम शरदः" कहें। अधोवायु, थूक तथा नेत्रोंमें जल आनेपर दाहिना कान अँगूठेसे स्पर्श करें। (सांख्यायन स्मृति)

क्षौर-विधि

एकादशी, अमावस्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्ध, रवि, मंगल तथा शनिके दिन क्षौर न करायें।

> भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनुः। भौमश्चाष्टौ वितरति शुभान् बोधनः पञ्च मासान्॥ सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति। प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौर-कार्येषु नूनम्॥
>
> (वाराही संहिता)

गर्गादि मुनियोंने कहा है कि रविवारको क्षौर करानेसे एक, मंगलवारको आठ और शनिवारको सात मासकी आयु क्षीण होती है। बुधवारको पाँच, सोमवारको सात, गुरुवारको दस और शुक्रवारको ग्यारह मासकी आयु बढ़ती है। (गृहस्थको सोमवार एवम् गुरुवारको भी क्षौर नहीं कराना चाहिये)।

तैलाभ्यङ्ग-विधि

षष्ठी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा तथा रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवारको तेल न लगायें, किन्तु सुगंधित तेल लगाया जा सकता है।

> तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः। बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्॥ रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका। गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषभाक्॥ नित्यमभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥ (ज्योतिष सार)

रविवारको तेल लगानेसे ताप, मंगलवारको मृत्यु, गुरुवारको हानि तथा शुक्रवारको दुःख होता है। सोमवारको शोभा, बुधवारको धन और शनिवारको सुख होता है। यदि निषिद्धवारोंमें तेल लगाना हो तो रविवारको तेलमें पुष्प, गुरुवारको दूर्वा, मंगलवारको मृत्तिका और शुक्र-

वारको गोबर डालकर लगायें इससे दोष नहीं होता। सुगंधित तेल तथा प्रतिदिन तेल लगानेवालोंको भी दोष नहीं लगता।

अयन—मकरसंक्रान्तिसे मिथुन संक्राति (माघसे आषाढ़) तक "उत्तरायण" सूर्य और कर्क संक्रान्तिसे धनु संक्रान्ति (श्रावणसे पौष) तक "दक्षिणायन" सूर्य रहता है।

ऋतु—वसन्त—मीन और मेषकी संक्रान्ति (चैत्र, वैशाख)। ग्रीष्म—वृष और मिथुन (ज्येष्ठ, आषाढ़)। वर्षा—कर्क और सिंह (श्रावण, भाद्रपद)। शरद्—कन्या और तुला (आश्विन, कार्तिक)। हेमन्त—वृश्चिक और धनु (अगहन, पौष)। शिशिर-मकर और कुम्भ (माघ, फाल्गुन)—इस प्रकार छः ऋतुएं हैं।

सङ्कल्प

स्नान, दान, देवपूजन आदिके आरम्भमें सङ्कल्प करना चाहिये। दायें हाथमें केवल जल या जल-पुष्प आदि लें, नीचे लिखे सङ्कल्पमें (अमुक) के स्थान पर उसके बाद जो शब्द है उसका विशेष नाम पञ्चाङ्ग आदिमें देखकर बोलना चाहिये।

ब्राह्मण नामके अन्तमें **'शर्मा'**, क्षत्रिय **'वर्मा'**, वैश्य **'गुप्त'** और शूद्र **'दास'** कहें। श्राद्धतर्पणादिमें पितरोंके नामके अन्तमें भी इसी प्रकार बोलें।

ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारते वर्षे बौद्धावतारे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते (अमुक) देशे, पुण्य (अमुक) क्षेत्रे, (अमुक) ग्रामे, विक्रमसम्वत्सरे (अमुक) संख्यके, शालिवाहनशाके (अमुक)

संख्यके, (अमुक) नाम्नि सम्वत्सरे, (अमुक) अयने, (अमुक) ऋतौ, (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) वासरे, (अमुक) नक्षत्रे, (अमुक) गोत्रोत्पन्नः (अमुक) नामाहं मम कायिक-वाचिक-मानसिक-ज्ञाताज्ञात-सकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्री-परमेश्वरप्रीत्यर्थं (अमुक) काले, (अमुक) सम्मुखे, (अमुक) कर्म करिष्ये। कहकर जलादि छोड़ें।

विशेष—यजमानके लिये सङ्कल्प करें तो यजमानका षष्ठयन्त गोत्र तथा नाम उच्चारण करें, "मम" के स्थान पर "मम यजमानस्य" और अन्तमें "करिष्ये" की जगह "करिष्यामि" कहें।

स्नान-विधि

मनुष्यके शरीरमें प्रधान ९ छिद्र हैं। वे रात्रिमें शयन करनेसे अपवित्र हो जाते हैं। इसलिए प्रातः स्नान अवश्य करें।

निपानादुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्। ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते। तीर्थतोयं ततः पुण्यं गङ्गातोयं ततोऽधिकम्॥

(अग्निपुराण)

कुएँके जलसे झरनेका, झरनेसे सरोवरका, सरोवरसे नदीका, नदीसे तीर्थका और तीर्थसे गंगाजीका जल श्रेष्ठ-तर है।

संक्रान्त्यां रविवारे च सप्तम्यां राहुदर्शने। आरोग्ये पुत्रमित्रार्थे न स्नायादुष्णवारिणा॥ मृते जन्मनि संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा। अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा॥ (वृद्ध मनु०)

संक्रान्ति, रविवार, सप्तमी, ग्रहण, सन्तानोत्पत्ति, मृताशौच, श्राद्ध, जन्मतिथिके दिन और अस्पृश्यसे छुए जानेपर गरम जलसे स्नान न करें।

न दन्तधावनं कुर्याद् गङ्गागर्भे विचक्षणः ।
परिधेयाम्बराम्बूनि गङ्गास्रोतसि न त्यजेत् ।। (पद्म पु०)

गंगाजीमें दतुअन न करें, स्नानके पश्चात् गंगाजीमें भीगी धोती न बदलें और न ही निचोड़ें ।

वासांसि धावतो यत्र पतन्ति जलबिन्दवः ।
तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलाङ्कितम् ।। (वृ०पा०स्मृ०)

धोबीके कपड़े धोनेका पत्थर तथा जितनी दूरी तक उस वस्त्रका छींटा पड़ता है उतना जल अपवित्र रहता है ।

शौचकालका वस्त्र बदल स्नानीय स्थानपर जा सव्य हो नीचे लिखी वरुण-प्रार्थना करें ।

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव ।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ।।

पवित्र हो स्नानार्थं सङ्कल्प कर नीचे लिखे मन्त्रसे दायें हाथ से कटि-पर्यन्त मृत्तिका लगायें । कटिके नीचे दाहिने हाथ तथा मन्त्रसे न लगायें ।

अश्वक्रान्ते ! रथक्रान्ते ! विष्णुक्रान्ते ! वसुन्धरे !।
मृत्तिके ! हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।। (पद्म पु०)

तीर्थावाहन

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ।।१।।
गङ्गे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वति !
नर्मदे ! सिन्धु ! कावेरि ! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।२।।
कुरुक्षेत्र - गया - गङ्गा - प्रभास - पुष्पकराणि च ।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह ।।३।।
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता ।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज ! नमोऽस्तु ते ।।४।।

भागीरथी (गङ्गाजी) की प्रार्थना

विष्णुपादाब्जसम्भूते! गङ्गे! त्रिपथगामिनि! ।
धर्म्मद्रवेति विख्याते! पापं मे हर जाह्नवि! ॥१॥
गंङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकञ्च गच्छति ॥२॥

नाभि-पर्यन्त जलमें जाकर प्रवाह या सूर्यकी ओर मुख करें। जलके ऊपर ब्रह्महत्या रहती है, इसलिये जल हिलाकर तीन गोते लगाने चाहियें।

घर में स्नान करें तो "पूर्वाभिमुख हो" पात्रमें जल ले वरुण, गङ्गा व तीर्थादिका आवाहन और सङ्कल्प कर पैर तथा मुख धोकर स्नान करें। शूद्रके हाथसे शरीरपर जल न गिरवायें।

यथेच्छ स्नान कर चुकने पर नीचे लिखे मन्त्र से जलके बाहर एक अंजलि दें।

यन्मया दूषितं तोयं मलैः शरीरसम्भवैः ।
तस्य पापस्य शुद्धयर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥

असमर्थ अवस्थामें नीचे लिखी क्रिया करनेसे भी स्नान का फल होता है।

आ-मणिबन्धनाद्धस्तौ पादौ चाजानुतः शुची ।
प्रक्षाल्य चाचामेद्विद्वानन्तर्जानुकरो द्विजः ॥ (बृ॰पा॰स्मृ॰)

मणिबन्ध (पहुँचे) तक हाथ तथा घुटनों तक पैर धो एवम् पवित्र होकर दोनों घुटनोंके भीतर हाथ करके आचमन करनेसे स्नानके समान ही शुद्धि होती है।

स्नानाङ्ग-तर्पण (घरमें न करें)

पूर्वकी ओर मुखकर तथा सव्य हो (जनेऊको बायें कन्धेपर कर) देवतीर्थसे एक-एक अंजलि दें।

ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्देवास्तृ०। ॐ भुवर्देवास्तृ०। ॐ स्वर्देवास्तृ०। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृ०॥

उत्तरकी ओर मुख कर तथा कण्ठी हो (जनेऊको गलेमें मालाकी तरह कर) कायतीर्थसे दो-दो अंजलियाँ दें।

ॐ मरीच्यादि ऋषयस्तृ० २। ॐ सनकादि द्वैपायनान्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भूर्ऋषयस्तृ० २। ॐ भुवर्ऋषयस्तृ० २। ॐ स्वर्ऋषयस्तृ० २। ॐ भूर्भुवःस्वर्ऋषयस्तृ० २॥

दक्षिणकी ओर मुख कर तथा अपसव्य हो (जनेऊको दाहिने कन्धेपर कर) पितृतीर्थसे तीन-तीन अंजलियाँ दें।

ॐ कव्यवाडादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ चतुर्दश यमास्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भूः पितरस्तृ०। ॐ भुवः पितरस्तृ० ३। ॐ स्वः पितरस्तृ० ३। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृ० ३। ॐ अमुकगोत्रा अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृ० ३। ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातापितामहीप्रपितामह्यस्तृ० ३॥ ॐ अमुकगोत्रा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकास्तृ० ३। ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यन्ताम् ३॥

नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर एक अंजलि दें।

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर दाहिनी ओर शिखा निचोड़ें।

लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः॥

"सव्य हो" आचमनकर जलके बाहर एक अंजलि दें।

यन्मया दूषितं तोयं शरीर-मल-सम्भवम्।
तस्य पापस्य शुद्धयर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम्॥

वस्त्र-धारण-विधि

पुण्यकर्मोंमें दो वस्त्र धारण करें। अभावमें आधी धोती ओढ़ नया या धोबीका धोया हुआ वस्त्र धारण करें। अमावस्या, संक्रान्ति, रवि और श्राद्धके दिन साबुनसे वस्त्र न धोयें तथा धोबीको न दें। नीचे लिखे मन्त्रसे नया वस्त्र धारण करें।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।
शतञ्च जीवामि शरदः पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये॥

(पारस्करगृह्यसूत्र)

विशेष—जलमें सूखे तथा स्थलपर भींगे वस्त्रसे सन्ध्यादि न करें। (वृ० स्मृ०)

आसन

मृगचर्म तथा कुशा और ऊनके आसन पवित्र होते हैं। आसन झाड़कर व कुशासनकी ग्रन्थि उत्तर-दक्षिण करके बिछायें।

शिखा-बन्धन-मन्त्र

शिखा बाँधकर सभी कर्म करने चाहियें। इसलिये नीचे लिखे मन्त्रसे या गायत्रीमन्त्रसे शिखा बाँधें। यदि शिखा न हो तो शिखा-स्थानका स्पर्श करें।

चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः-समन्विते!।
तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

तिलक

तिलक किये बिना सन्ध्या, पितृकर्म और देवपूजा आदि न करें। चन्दनादिके अभावमें जलादिसे तिलक करें।

अनामिका शान्तिदोक्ता मध्यमायुष्करी भवेत्।
अङ्गुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तः तर्जनी मोक्षदायिनी ॥ (स्क० पु०)

तिलक करनेमें अनामिका शान्ति देनेवाली, मध्यमा आयु बढ़ानेवाली, अंगुष्ठ पुष्टि देनेवाला और तर्जनी मोक्ष देनेवाली है। चकलेपरसे चन्दन नहीं लगाना चाहिये।

चन्दन-धारण-मन्त्र

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ॥

तिलक-धारण-विधि

ललाटमें केशव, कण्ठमें पुरुषोत्तम, हृदयमें वैकुण्ठ, नाभिमें नारायण, पीठमें पद्मनाभ, बायें पार्श्व (पसवाड़ा) में विष्णु, दाहिनेमें वामन, बायें कानमें यमुना, दाहिनेमें गङ्गा, बाईं भुजामें कृष्ण, दाहिनीमें हरि, मस्तकमें हृषीकेश और गर्दनमें दामोदरका स्मरण करते हुए इन तेरह स्थानोंपर चन्दन लगायें।

भस्म-धारण-विधि

प्रातः जलमिश्रित, मध्याह्नमें चन्दनमिश्रित और सायंकालमें सूखी भस्म लगायें। बायें हाथमें भस्म ले दाहिने हाथसे नीचे लिखे मन्त्रसे अभिमन्त्रित करें।

ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म।
ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म।
ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वꣳह वा इदं भस्म।
ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति ॥

भस्म-धारण-मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्रोंसे यथास्थान भस्म लगायें ।

ॐ 'त्र्यायुषं जमदग्नेः' ललाटमें । ॐ 'कश्यपस्य त्र्यायुषम्' कण्ठमें । ॐ 'यद्देवेषु त्र्यायुषम्' भुजाओंमें । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' हृदयमें ।

यज्ञोपवीत-धारण-विधि

सङ्कल्पकर दो यज्ञोपवीत धारण करें। यदि मलमूत्र त्यागते समय यज्ञोपवीत कानमें टाँगना भूल जायें तो नया बदलें ।

श्रावणी कर्ममें पूजन किया हुआ न हो तो नूतन यज्ञोपवीतको जलसे शुद्ध कर दश बार गायत्री मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर नीचे लिखे मन्त्रोंसे प्रत्येक सूत्र एवम् ग्रन्थिमें नीचे लिखे अनुसार देवताओंका आवाहन करें।

प्रथमतन्तौ—ॐ कारमावाहयामि । द्वितीयतन्तौ—ॐ अग्निमावाहयामि । तृतीयतन्तौ— ॐ सर्पानावाहयामि । चतुर्थतन्तौ— ॐ सोममावाहयामि । पञ्चमतन्तौ— ॐ पितॄनावाहयामि । षष्ठतन्तौ—ॐ प्रजापतिमावाहयामि । सप्तमतन्तौ—ॐ अनिलमावाहयामि । अष्टमतन्तौ—ॐ सूर्यमावाहयामि । नवमतन्तौ—ॐ विश्वान्देवानावाहयामि । ग्रन्थि में—'ॐ ब्रह्मणे नमः' ब्रह्माणमावाहयामि । 'ॐ विष्णवे नमः' विष्णुमावाहयामि । 'ॐ रुद्राय नमः' रुद्रमावाहयामि ।।

इस प्रकार आवाहन करके नीचे लिखे मन्त्रसे धारण करना चाहिये ।

यज्ञोपवीत-धारण-मन्त्र

विनियोग—ॐ यज्ञोपवीतमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः ।

जनेऊ धोकर प्रत्येक बार मंत्र बोलते हुए एक-एक धारण करें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

जीर्ण-यज्ञोपवीत-त्याग-मन्त्र

पुराने जनेऊको कंठीकर सिरपरसे पीठकी ओर निकालकर यथासंख्य गायत्रीमन्त्रका जप करना चाहिये।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।।

कुशा-ग्रहण-विधि

भाद्रपद मासकी कुशोत्पाटिनी अमावस्याको ग्रहण की हुई कुशा बारह मास; अन्य अमावस्याकी एकमास, पूर्णिमाकी पन्द्रह दिन और प्रत्येक अन्य दिनकी उसी दिन तक पवित्र रहती है। सन्ध्या, पितृकार्य और देवपूजनमें अग्र और मूल सहित दो कुशाओंकी पवित्री दाहिने, और तीनकी बायें हाथकी अनामिका की जड़में धारण करें।

प्रादेशमात्रं दर्भः स्याद् द्विगुणं कुशमुच्यते ।
कृतरत्निर्भवेद्बर्हिस्तदूर्ध्वं तृणमुच्यते ।। (कर्मकाण्ड समु०)

एक प्रादेश (अँगूठा और तर्जनी फैलाना) का दर्भ, दो प्रादेशकी कुशा और हाथकी कोहनीसे कनिष्ठा अँगुलीकी जड़ पर्यन्तका बर्हि कहा जाता है, इससे लम्बा तृण कहलाता है।

पूर्व या उत्तरमुख हो कुशाका पूजनकर नीचे लिखी प्रार्थना करें। पश्चात् प्रत्येक बार "हूँ फट्" बोलकर जड़ सहित उखाड़ें। हाथसे छोटी अर्थात् उपर्युक्त श्लोकानुसार ही लें।

कुशा-ग्रहण-मन्त्र

विरञ्चिना सहोत्पन्न ! परमेष्ठिनिसर्गज ! ।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ ! स्वस्तिकरो भव ।। (मार्कं०पु०)

त्यागयोग्य कुशा

ये तु पिण्डास्तृता दर्भा यैः कृतं पितृतर्पणम् ।
अमेध्याशुचिलिप्ता ये तेषां त्यागो विधीयते ॥

(गृहपरि०)

पिण्डके नीचे तथा ऊपरकी, तर्पणकी तथा अपवित्र जगहमें पड़ी हुई कुशाओंको त्याग देना चाहिये ।

जप-विधि

जप करते समय दाहिना हाथ गोमुखीमें डालें या वस्त्रसे ढक लें । शिरपर हाथ तथा वस्त्र न रखें । "वाचिक जप" धीरे-धीरे बोलकर, "उपांशु" दूसरे नहीं सुनें तथा "मानस" जिह्वा और होंठ न हिलाकर करना उत्तरोत्तर उत्तम है । जप करते समय हिलना, ऊँघना, बोलना और मालाका गिरना निषिद्ध है । यदि बोल लें तो भगवत्-स्मरण कर फिरसे जप आरम्भ करें ।

गृहे चैकगुणः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः ।
पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुण उच्यते ॥
अयुतं पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः ।
कोटिर्देवालये प्राप्ते अनन्तं शिवसन्निधौ ॥

घरमें जप करनेसे एक गुना, गौओंके समीपमें सौ गुना, पवित्र वन या बगीचे और तीर्थमें हजार गुना, पर्वतपर दश हजार गुना, नदी तीरपर लाख गुना, देवालयमें करोड़ गुना तथा शिवके समीपमें अनन्त गुना फल होता है ।

प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने हृदि संस्थितम् ।
सायं जपति नासाग्रे जपस्तु त्रिविधः स्मृतः ॥ (धर्म प्रकाश)

T

कृत्वोत्तानौ करौ प्रातः सायं न्युब्जौ करौ तथा।
मध्याह्ने हृदयस्थौ तु कृत्वा जपमुदीरयेत्॥
प्रातर्मध्याह्नयोस्तिष्ठन् गायत्री-जपमारभेत्।
ऊर्ध्वजानुस्तु सायाह्ने ध्यानालोकनतत्परः॥ (आह्निक)

प्रातःकालमें हाथको सीधा तथा अँगुलियोंको ऊपरकी ओर कर नाभिके समीप, मध्याह्नमें हृदयके समीप और सायं-कालमें दाहिना घुटना खड़ाकर नासिकाके समीप उलटा हाथ करके जप करें।

यस्मिन्स्थाने जपं कुर्यात् शक्रो हरति तज्जपम्।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृति॥ (व्यास-स्मृति)

जिस आसनपर बैठकर जप किया हो, उसके नीचेकी मृत्तिका मस्तकमें लगायें। ऐसा न करनेसे जपके फलको इन्द्र ले लेता है।

माला-विधि

प्रत्येक मणिके बीचमें ग्रन्थि दी हुई, सुमेरुको छोड़कर १०८ मणियोंकी माला सबसे उत्तम है। मालाको अनामिका पर रखकर अँगूठेसे स्पर्श करते हुए मध्यमासे फेरें। सुमेरुका उल्लंघन न करें। दोबारा फेरते समय सुमेरुके पाससे माला घुमाकर जप करें।

माला-प्रार्थना

मालाका पूजन तथा प्रार्थना करके फेरनेसे विशेष फल होता है।

ॐ महामाये! महामाले! सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

देवमन्त्रकी कर-माला
(शक्तिकी करमाला सन्ध्यामें देखें)

दाहिने हाथकी अँगुलियोंको मिलाकर हथेलीकी ओर कुछ टेढ़ी करें। अलग-अलग रहनेसे जपका पूर्ण फल नहीं मिलता है।

अङ्गुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्।
पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत्॥

अँगुलीके अग्रभाग (नखके पास) तथा पर्वकी लकीरपर और सुमेरुका उल्लंघनकर किया हुआ जप निष्फल होता है।
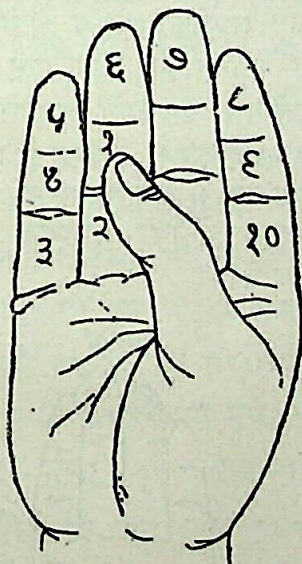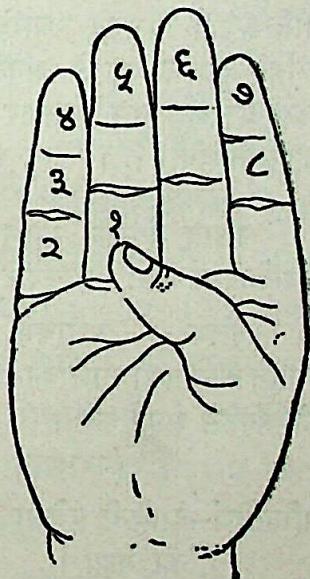
नं० १ नं० २

चित्र सं० १ के अनुसार अंक १ से आरंभ करके १० अंक तक अँगूठेसे जप करनेसे एक करमाला होती है। इसी प्रकार दस करमाला जप करके चित्र सं० २ के अनुसार अंक १ से आरंभ कर ८ अंक तक जप करनेसे १०८ संख्याकी माला होती है।

आरभ्यानामिकामध्यं पर्वाण्युक्तान्यनुक्रमात् ।
तर्जनी—मूल—पर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु ।।
मध्यमाङ्गुलिमूले तु यत्पर्वद्वितयं भवेत् ।
तं वै मेरुं विजानीयाज्जाप्ये तं नातिलङ्घयेत् ।। (गायत्री कल्प)

आचमन-विधि

पुण्यकर्मोंके आरंभमें आचमन अवश्य करें। ब्राह्मणके हृदय, क्षत्रियके कंठ तथा वैश्यके तालुमें जल पहुँचने से आचमन होता है। प्रथम आचमनसे "आध्यात्मिक", दूसरेसे "आधिभौतिक" व तीसरेसे "आधिदैविक" तापोंकी शान्ति होती है। दाहिने हाथमें जल ले अँगूठे तथा कनिष्ठाको अलग कर नीचे लिखे प्रत्येक नाम बोलकर ब्रह्मतीर्थसे आचमन करनेसे एक आचमन होता है। किन्तु ओष्ठका शब्द करना निषिद्ध है।

ॐ केशवाय नमः ।। ॐ नारायणाय नमः ।। ॐ माधवाय नमः ।।

पश्चात् अँगूठेके मूलसे दो बार होंठोंको पोंछकर "ॐ हृषीकेशाय नमः" बोलकर हाथ धोयें।

जलके अभावमें दाहिने कान तथा नासिकाको अँगूठेसे स्पर्श करें। (पराशर)

अग्नितीर्थ—दाहिनी हथेली का मध्य।

ब्रह्मतीर्थ—अँगूठेका मूल।

देवतीर्थ—अँगुलियोंका अग्र भाग।

कायतीर्थ—कनिष्ठाका मूल।

पितृतीर्थ—तर्जनीका मूल।

अर्घ-विधि

चित्रके अनुसार पूर्वाभिमुख खड़ा हो, दोनों पैरोंके अग्रभाग बराबर कर जल तथा पुष्पादि ले, तर्जनी-से अँगूठेको अलग रखते हुए नीचे लिखे प्रत्येक नामसे एक-एक अर्घ दें।

ॐ श्रीगणेशाय नमः। ॐ सत्यनारायणाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ देव्यै नमः। ॐ नवग्रहेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ पञ्चलोकपालेभ्यो नमः। ॐ दशदिक्पालेभ्यो नमः। ॐ अष्टकुलनागेभ्यो नमः। ॐ अष्टवसुदेवताभ्यो नमः। ॐ पञ्चभूतेभ्यो नमः। ॐ भूरादिलोकेभ्यो नमः। ॐ साक्षीभूताय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ श्रवणदेवताभ्यो नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ कुबेराय नमः।

नीचे लिखे मन्त्रसे सूर्यनारायणको अर्घ दें।

ऐहि सूर्य ! सहस्रांशो ! तेजोराशे ! जगत्पते ! ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

सन्ध्या-विधि

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्योंको सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये।

सन्ध्या न करनेसे शुभ कर्मोंका पूर्णफल प्राप्त नहीं होता। जलमें सूखा वस्त्र और स्थलमें गीला वस्त्र धारणकर सन्ध्या-तर्पण न करें।

सन्ध्या-हीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।
यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फलभाग् भवेत्॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य यदि सन्ध्या नहीं करते, तो वे अपवित्र हैं और उन्हें किसी पुण्यकर्म करनेका फल प्राप्त नहीं होता।

प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्।
ससूर्यां पश्चिमां सन्ध्यां तिस्रः सन्ध्या उपासते॥ (दे० भा०)

प्रातःकाल तारोंके रहते हुए, मध्याह्नमें जब सूर्य आकाशके मध्यमें हो और सायंकालमें सूर्यास्तके पहले ही सन्ध्या करनी चाहिये।

जपन्नासीत सावित्रीम्प्रत्यगातारकोदयात्।
सन्ध्यां प्राक् प्रातरेवं हि तिष्ठेदासूर्यदर्शनात्॥

सायंकालमें पश्चिमकी तरफ मुख करके जब तक तारोंका उदय न हो और प्रातःकालमें पूर्वकी ओर मुख करके जब तक सूर्यका दर्शन न हो, तब तक जप करता रहे।

एकं वाहननाशाय द्वितीयं शस्त्रनाशनात्।
असुराणां वधार्थाय तृतीयार्घ्यं विदुर्बुधाः॥ (मदन पारिजात)

पहले अर्घसे असुरोंके वाहनका नाश, दूसरेसे शस्त्रनाश और तीसरेसे असुरों का वध होता है।

गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्।
अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ वृद्धिमवाप्नुयात्॥ (आह्निक)

गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्रीके आदिमें ॐ का उच्चारण करके जप करें किन्तु अन्तमें ॐ का उच्चारण न करें क्योंकि ऐसा करनेसे वृद्धि नहीं होती।

चतुष्षष्टिकला विद्या सकलैश्वर्यसिद्धिदम् ।
जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत् ॥

(विश्वामित्र कल्प)

जपके आदि में चौसठ कलायुक्त विद्या तथा संपूर्ण ऐश्वर्यों-की सिद्धि देनेवाले **"गायत्री हृदय"** का तथा अन्तमें **"गायत्री कवच"** का पाठ करें ।

गृहेषु प्राकृती सन्ध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता ।
नदीषु शतसाहस्री अनन्ता शिवसन्निधौ ॥

घरमें सन्ध्यावन्दन करनेसे एक, गोस्थानमें सौ, नदी किनारे लाख तथा शिवके समीपमें अनंत गुना फल प्राप्त होता है ।

पादशेषं पीतशेषं सन्ध्याशेषं तथैव च ।
शुनो मूत्रसमं तोयं पीत्वा चन्द्रायणं चरेत् ॥

पैर धोनेसे, पीनेसे और सन्ध्या करनेसे बचा हुआ जल श्वानमूत्रके तुल्य हो जाता है, उसके पीनेपर चन्द्रायण-व्रत करनेसे मनुष्य पवित्र होता है । इसलिये बचे हुए जलको फेंक दें ।

प्रातः-सन्ध्या

आसनकी ग्रन्थि उत्तर तथा दक्षिणकी ओर करके बिछायें । गमछा आदि दूसरा वस्त्र ले, पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा बाँध, तिलक करके, नीचे दिये चित्रके अनुसार पात्रादि रखें ।

लोटा—प्रधान जलपात्र—अन्य कृत्यके लिए, घराटी—सन्ध्याका विशेष जल-पात्र, छन्नी—चन्दन, पुष्पादिके लिए, पञ्चपात्र—विनियोग आदिके लिए, छोटा पञ्चपात्र—आचमन के लिए, अर्घा—अर्घ तथा तर्पणके लिए ।

पूर्व

T

दाहिनी अनामिकाकी जड़में दो कुशाओंकी और बाईंमें तीनकी पवित्री धारण कर, बायें हाथमें बहुत-सी कुशाओंकी तथा दाहिनेमें तीनकी गुच्छी ले, ईशान-मुख होकर आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। पश्चात् अँगूठेकी जड़से दो बार होंठोंको पोंछकर "**ॐ हृषीकेशाय नमः**" बोलकर हाथ धोयें।

विनियोग (पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ें)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः॥
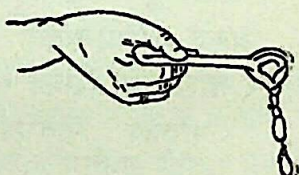
पवित्र-करण-मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्रसे शरीरपर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

विनियोग

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः॥

आसन-पवित्र-करण-मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्रसे आसन पर जल के छींटे दें।

ॐ पृथ्वी! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

दाहिने हाथमें जल आदि ले संकल्प(पृ० ८-९ के अनुसार) कर अंतमें **प्रातःसन्ध्योपासन-कर्म करिष्ये'** कहकर जल छोड़ें।

विनियोग

ॐ ऋतं चेत्यघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता आचमने विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्र से आचमन करें

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥

ततो वारिणात्मानं वेष्टयित्वा सप्रणवगायत्र्या रक्षां कुर्यात्॥

अपनी रक्षाके लिए दाहिने हाथमें जल लेकर बायें हाथसे ढक तीन बार गायत्रीमन्त्रसे अभिमन्त्रितकर, उस जलको दाहिनी तरफसे अपने चारों ओर छोड़ें।

विनियोग

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः॥

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र-जमदग्नि-भरद्वाज-गौतमाऽत्रि-वसिष्ठ-कश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती-पङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्र-विश्वेदेवादेवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः॥

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता-देवताऽग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः॥

ॐ शिरसः प्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माऽग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

प्राणायाम-विधि

इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा बद्धासनः सम्मीलितनयनो मौनी प्राणायामत्रयं कुर्यात्। तत्र वायोरादानकाले पूरकनामा प्राणायामस्तत्र नीलोत्पलदलश्यामं चतुर्भुजं विष्णुं नाभौ ध्यायेत्। धारणाकाले कुम्भकस्तत्र कमलासनं रक्तवर्णं चतुर्मुखब्रह्माणं हृदि ध्यायेत्। त्यागकाले रेचकस्तत्र

श्वेतवर्णं त्रिनयनं शिवं ललाटे ध्यायेत् । त्रिष्वप्येतेषु प्रत्येकं त्रिर्मन्त्राभ्यासः । प्रत्येकमोङ्कारादि सप्तव्याहृतयः ॐकारादि सावित्री ॐकारद्वयमध्यस्थः शिरश्चेतिमन्त्रस्तस्य स्वरूपम् ।

पद्मासन करके ऋषियोंका स्मरणकर मौन हो नेत्रोंको बंदकर तीनों प्राणायाम करें।

१—पूरक-प्राणायाम

नासिकाके दाहिने छिद्रको अँगूठेसे दबाकर बायें छिद्रसे श्वास खींचते हुए नील कमलके सदृश श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुका अपनी नाभिमें ध्यान करें।

२—कुम्भक-प्राणायाम

उपर्युक्त छिद्रको दबाते हुए नासिकाके बायें छिद्रको भी कनिष्ठा और अनामिकासे दबाकर श्वासको रोक कमलके आसनपर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माका अपने हृदयमें ध्यान करें।
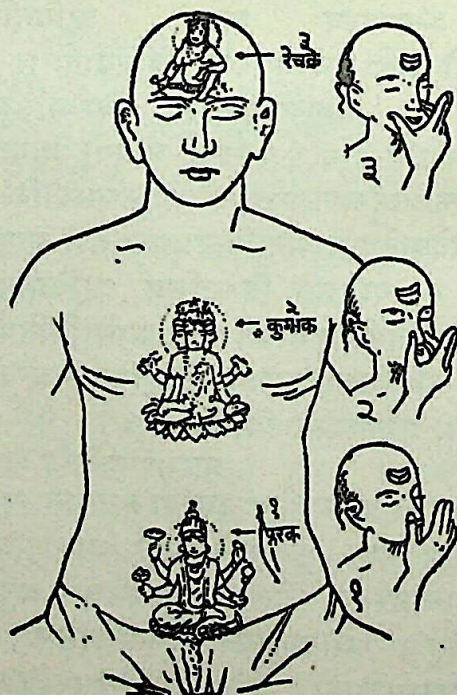
३—रेचक- प्राणायाम

श्वेतवर्ण त्रिनेत्र शिवजीका अपने ललाटमें ध्यान करते हुए नासिकाके दाहिने छिद्रको खोलकर धीरे-धीरे श्वास छोड़ें।

प्राणायाम-मन्त्र

पृष्ठ २६ के चित्रके अनुसार ध्यान करते हुए नीचे लिखे मंत्रको प्रत्येक प्राणायाममें तीन-तीन बार एक साथ जपें अथवा प्रत्येक प्राणायाममें एक-एक बार जप कर इस प्रकार तीन बार करें।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

विनियोग

ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमन

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

विनियोग

ॐ आपो हिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री-छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः॥

बायें हाथमें जल ले, कुशा या दाहिने हाथकी तीन बड़ी अँगुलियोंसे नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए, एकसे साततक अपने शरीरपर, आठवेंसे पृथ्वीपर और नौवेंसे मस्तकपर जल छोड़ें।

ॐ आपो हिष्ठामयो भुवः १। ॐ ता न ऊर्जे दधातन २। ॐ महेरणाय चक्षसे ३। ॐ यो वः शिवतमो रसः ४।

ॐ तस्य भाजयते ह नः ५ । ॐ उशतीरिव मातरः ६ । ॐ तस्मा अरङ्गमामवः ७ । ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ८ । ॐ आपो जनयथा च नः ९॥

विनियोग

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ।

नीचे लिखे मन्त्रसे तीन या एक बार मस्तकपर जल छोड़ें ।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचान स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

विनियोग

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः ।

दाहिने हाथमें जल ले, नासिकाके समीप करके नीचे लिखा मंत्र तीन बार या एक बार पढ़ें और ध्यान करें कि यह जल श्वासके साथ नासिकाके बायें छिद्रसे भीतर जाकर अन्तः-करणको शुद्ध करके दाहिने छिद्रसे बाहर निकल आया है । उस जलको बिना देखे बाईं ओर फेंक दें । पश्चात् हाथ धोयें ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः । समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी । सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ।

विनियोग

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

आचमन

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम् ।।

विनियोग

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता । ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंदांसि । ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः, अर्घ्यदाने विनियोगः ।

अर्घ-विधि (चित्र पृ० २१ देखिये)

जलाक्षत, पुष्पादि ले, खड़े हो, चित्रके अनुसार पैरोंके अग्रभाग बराबर तथा तर्जनीसे हाथोंके अँगूठोंको अलगकर नीचे लिखा मन्त्र प्रत्येक बार बोलते हुए थोड़ा झुककर सूर्य-की ओर उछालते हुए तीन अर्घ दें ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः ।।

प्रातः सूर्योदयसे तथा सायं सूर्यास्तसे ३ घड़ी बाद सन्ध्या करें तो प्रायश्चित्तके निमित्त नीचे लिखे मन्त्रसे एक अर्घ और दें ।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन् ।।

उपस्थान

प्रातःकालमें दाहिना पैर या एड़ी उठाकर दोनों हाथों-को सीधा रखते हुए, मध्यान्हमें दोनों हाथोंको ऊपर करके और सायंकालमें बैठे हुए हाथोंको बंद कमलके समान जोड़-कर उपस्थान करें । उपर्युक्त विधिसे प्रत्येक विनियोगके साथ एक-एक मन्त्र बोलकर भी उपस्थान कर सकते हैं ।

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, ॐ उदुत्यमिति प्रष्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता, ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।।

मन्त्र-ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवन्देवत्रा सूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ।।१।। ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।२।। ॐ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षᳪंसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।।३।। ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतᳪं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।४।।

षडङ्गन्यास

बैठकर नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए पृष्ठ ३० के चित्र संख्या १-६ के अनुसार दाहिने हाथसे अङ्गोंका स्पर्श करें।

१—ॐ हृदयाय नमः (हृदयमें हथेली)। २—ॐ भूः शिरसे स्वाहा (मस्तकमें चारों अँगुलियोंका अगला पर्व)। ३—ॐ भुवः शिखायै वषट् (शिखामें अँगूठा)। ४—ॐ स्वः कवचाय हुम् (हाथोंको कुछ ऊँचा कर दाहिनी कनिष्ठाके मूलसे बाईं तथा बाईं कनिष्ठाके मूलसे दाहिनी भुजाका स्पर्श)। ५—ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् (मध्यमा तथा तर्जनीसे नेत्रोंका स्पर्श)। ६—ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् (बायें हाथकी हथेलीपर दायें हाथ की मध्यमा तथा तर्जनीसे ताली बजायें)। इस प्रकार तीन बार कर पश्चात् अपने चारों ओर चुटकी बजायें।

नीचे लिखे मन्त्रसे अंगोंका स्पर्श करें या केवल मंत्र बोलें।

ॐ तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घेमे सवितुः पदम्।
वरेण्यं कटि-देशन्तु नाभिं भर्गस्तथैव च॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा।
धियो मे पातु जिह्वायां यत्पदं पातु लोचने॥
ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्।

विनियोग

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता, ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवता, ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता जपे विनियोगः॥

ध्यान

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता॥

आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ।।

विनियोग

ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

आवाहन-मन्त्र

ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि । प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।।

विनियोग

ॐ तुरीयस्य विमल ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।।

उपस्थान-मन्त्र

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ।।

गायत्री-शापविमोचन

ब्रह्मा, वसिष्ठ और विश्वामित्रने गायत्री मन्त्रको शाप दे रखा है, अतः शाप-निवृत्तिके लिये शाप-विमोचन करें ।

(यथेच्छ है)

ब्रह्म-शापविमोचन

विनियोग—ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनीगायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः ।।

मन्त्र—ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः । तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः । ॐ वेदान्तनाथाय

विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् । ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ।।

वसिष्ठ-शापविमोचन

विनियोग—ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ।। मन्त्र—ॐ सोहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योती रसोऽस्म्यहम् ।

योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री जपें ।

ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ।

विश्वामित्र–शापविमोचन

विनियोग—ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्त्ता विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ।। मन्त्र—ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः । देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये । यन्मुखान्निःसृतोऽखिलवेदगर्भः ।। शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन । शापादुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।। ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।।

प्रार्थना—ॐ अहो देवि ! महादेवि ! सन्ध्ये ! विद्ये ! सरस्वति ! अजरे ! अमरे ! चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते ।। ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ठ शापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।।

T

प्रातःकाले ब्रह्मरूपा-गायत्री-ध्यानम्

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम् । रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा ॥ कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम् । ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ॥ मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ॥

ब्रह्मलोक में रहनेवाली, ब्रह्माणी, कन्यारूप, हंसपर बैठी हुई, लाल रंग, चार भुजाओं तथा चार मुखोंवाली, दो लाल वस्त्र धारण की हुई, हाथोंमें रुद्राक्षकी माला, दंडकमण्डलु तथा ऋग्वेद लिये हुए सूर्यमण्डलसे आती हुई गायत्रीका ध्यान करें ।

गायत्री-हृदय

ॐ अस्य श्रीगायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिर्गायत्री छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्रीहृदयजपे विनियोगः ॥ अथाङ्गन्यासः ॥ द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम् । दन्तपङ्क्तावश्विनौ । उभे सन्ध्ये चोष्ठौ । मुखमग्निः । जिह्वा सरस्वती । ग्रीवायां तु बृहस्पतिः । स्तनयोर्वसवोऽष्टौ । बाह्वोर्मरुतः । हृदये पर्जन्यः । आकाशमुदरम् । नाभावन्तरिक्षम् । कटचोरिन्द्राग्नी । जघने विज्ञानघनः प्रजापतिः । कैलाशमलये उरः । विश्वेदेवा जान्वोः । जङ्घायां कौशिकः । गुह्यमयने । ऊरू पितरः । पादौ पृथ्वी । वनस्पतयोऽङ्गुलीषु । ऋषयो रोमाणि । नखानि मुहूर्तानि । अस्थिषु ग्रहाः । असृङ्मासं ऋतवः । संवत्सरा वै निमिषम् । अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः । प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये । ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः । ॐ तत्पूर्वा जयाय नमः ।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चैह च पावनम् ॥
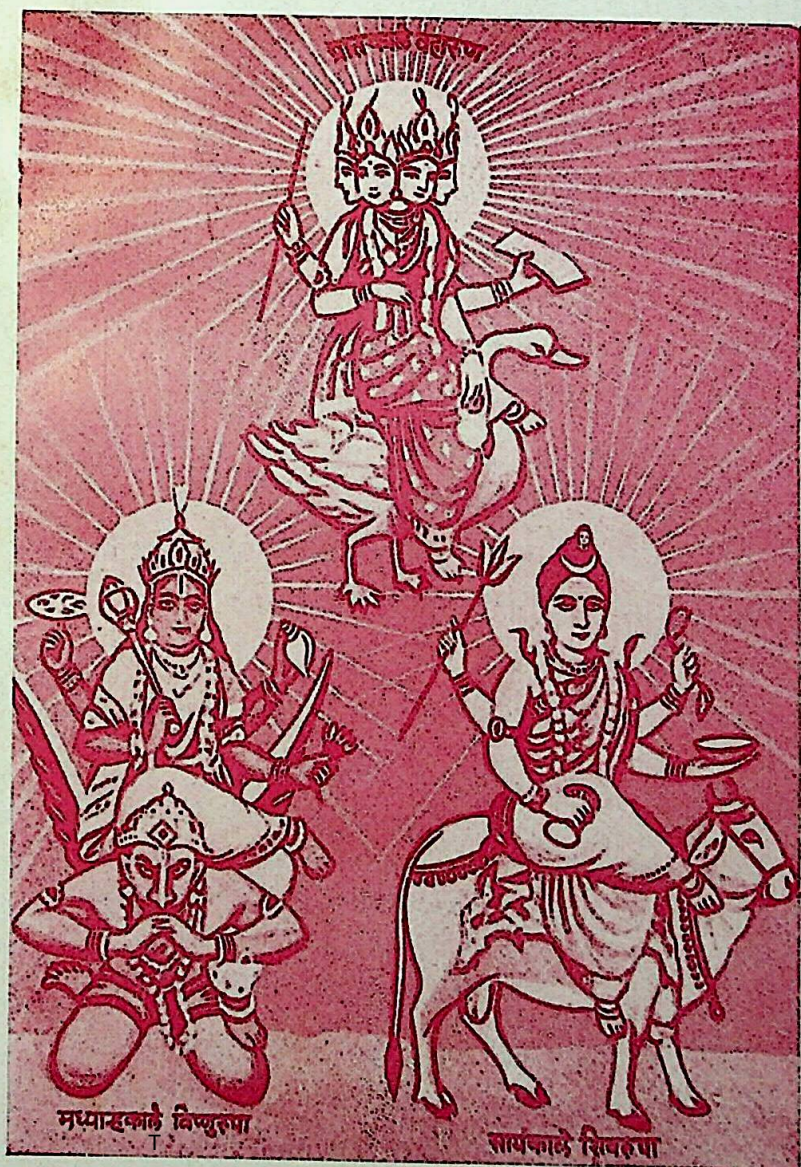
ॐ तत्प्रातरादित्याय नमः। ॐ तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातरधीयानोऽपापो भवति। सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। अवाच्य-वचनात्पूतो भवति। अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति। अभोज्य-भोजनात्पूतो भवति। अचोष्यचोषणात्पूतो भवति। असाध्यसाधनात्पूतो भवति। दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति। सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति। पङ्क्तिदूषणात्पूतो भवति। अनृतवचनात्पूतो भवति। अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति। षष्ठिशतसहस्रगायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयेत्। तस्य सिद्धिर्भवति। य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यत इति॥ ब्रह्मलोके महीयते॥ इत्याह भगवान् श्रीनारायणः॥ (देवी भा०)

जपके पूर्वकी २४ मुद्राएँ

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा॥ षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम्॥ प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः॥

जपके पूर्वकी २४ मुद्राएँ करने की विधि

आकुञ्चिताङ्गुलिकरौ संयुतौ सुमुखं भवेत्॥१॥ कोषाकारं सम्पुटं स्याद् विततं विस्तृतं भवेत्॥२-३॥ विस्तीर्णौ विततौ हस्ता-

वन्योऽन्याङ्गुलि संयुतौ ।।४।। कनिष्ठानामिकायुक्तौ हस्तौ द्वौ द्विमुखं भवेत् ।।५।। तदेव मध्यमायुक्तं त्रिमुखं परिकीर्तितम् ।।६।। तदेव तर्जनीयुक्तं चतुर्मुखमुदीरितम् ।।७।। तदेव स्यात् पञ्चमुखं मिलिताङ्गुष्ठकं यदि ।।८।। तदेव षण्मुखं प्रोक्तं यद्यश्लिष्टकनिष्ठकम् ।।९।। आकुञ्चिताग्रौ संयुक्तौ न्युब्जौ हस्तावधोमुखम् ।।१०।। उत्तानौ तादृशावेव व्यापकाञ्जलिकं करौ ।।११।। अङ्गुष्ठ-द्वय-संयुक्तं मुष्टिद्वयमधोमुखम् । सम्प्रसार्य च तर्जन्यौ शकटं मुनिसत्तमाः ।।१२।। मुष्टिं कृत्वा करौ योज्यौ तर्जन्यौ सम्प्रसार्य च । आकुञ्चिताग्रौ संयोज्य यमपाशं विदुर्बुधाः ।।१३।। अन्यान्यायतसंश्लिष्टदशाङ्गुलिकरावुभौ । अन्योन्यमभिवध्नीयात् ग्रन्थितं परिकीर्तितम् ।।१४।। कृत्वा करौ सम्पुटकौ पूर्वं वामकरं सुधीः । अधोमुखेन दक्षेण योजयेत् चोन्मुखोन्मुखम् ।।१५।। अधः कोषाकृतिकरौ प्रलम्बं कोविदो विदुः ।।१६।। युतं मुष्टिद्वयं चैव सम्यङ् मुष्टिकमीरितम् ।।१७।। दक्षपाणि-पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत् । अङ्गुष्ठौ चालयेत् सम्यङ् मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी ।।१८।। वामहस्ते च तर्जन्यां दक्षिणस्य कनिष्ठिका । तथा दक्षिणतर्जन्यां वामाङ्गुष्ठं नियोजयेत् ।। उन्नतं दक्षिणाङ्गुष्ठं वामस्य मध्यमादिकाः । अङ्गुलोर्योजयेत् पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च ।। वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा । अधोमुखे च ते कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च ।। कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षपाणिं च सर्वतः । कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि ।।१९।। तर्जनीं दक्षहस्तस्य वामाङ्गुष्ठे निवेश्य च । हस्ते हस्तं च वध्नीयात् कोलमुद्रा समीरिता ।।२०।। प्रसारिताङ्गुलिकरौ समीपं कर्णयोर्नयेत् । सिंहाक्रान्तं समुदितं गायत्रीजपतत्परैः ।।२१।। दर्शयेच्छ्रोत्रयोर्मध्ये हस्तावङ्गुलिपञ्चकौ । महाक्रान्ता भवेन्मुद्रा गायत्रीहृदयं गता ।।२२।। मुष्टिं कृत्वा करं दक्षं वामे करतले न्यसेत् । उच्छ्रितश्च करं कृत्वा मुद्गरं समुदाहृतम् ।।२३।। दक्षिणेन करेणैव चलिताङ्गुलिना करः । वदनाभिमुखं चैव पल्लवं मुनिभिस्स्मृतम् ।।२४।।

नीचे लिखे अनुसार चित्र देखकर मुद्रा बनायें ।
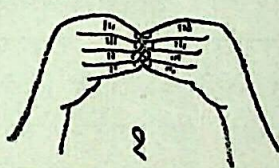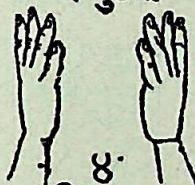
सुमुखम्—दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको मोड़कर परस्पर मिलायें ॥१॥ **सम्पुटम्**—दोनों हाथोंको फुलाकर मिलायें ॥२॥ **विततम्**—दोनों हाथोंकी हथेलियाँ परस्पर सामने करें ॥३॥ **विस्तृतम्**—दोंनों हाथोंकी अँगुलियाँ खोलकर दोनोंको कुछ अधिक अलग करें ॥४॥ **द्विमुखम्**—दोनों हाथोंकी कनिष्ठासे कनिष्ठा तथा अनामिकासे अनामिका मिलायें ॥५॥ **त्रिमुखम्** दोनों मध्यमाओंको भी मिलायें ॥६॥ **चतुर्मुखम्**—दोनों तर्जनियाँ और मिलायें ॥७॥ **पंचमुखम्**—दोनों अँगूठे और मिलायें ॥८॥ **षण्मुखम्**—हाथ वैसे ही रखते हुए दोनों कनिष्ठाओंको

T

खोलें ॥९॥ **अधोमुखम्**—उलटे हाथोंकी अँगुलियोंको मोड़ तथा मिलाकर नीचेकी ओर करें ॥१०॥ **व्यापकाञ्जलिकम्**—वैसे ही मिले हुए हाथोंको शरीरकी तरफसे घुमाकर सीधा करें ॥११॥ **शकटम्**—दोनों हाथोंको उलटाकर अँगूठेसे अँगूठा मिला तर्जनियोंको सीधा रखते हुए मुट्ठी बाँधें ॥१२॥ **यमपाशम्**—तर्जनीसे तर्जनी बाँधकर दोनों मुट्ठियाँ बाँधें ॥१३॥ **ग्रन्थितम्**—दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको परस्पर गूँथे ॥१४॥
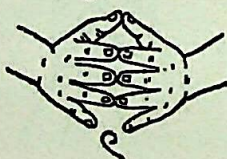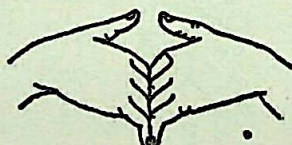
उन्मुखोन्मुखम्—हाथोंकी पाँचों अँगुलियोंको मिलाकर प्रथम, बाएँपर दाहिना, फिर, दाहिनेपर बायाँ हाथ रखें ॥१५॥ **प्रलम्बम्**—अँगुलियोंको कुछ मोड़ दोनों हाथोंको उलटाकर

T

नीचेकी ओर करें ॥१६॥ **मुष्टिकम्**—दोनों अँगूठे ऊपर रखते हुए दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर मिलायें ॥१७॥ **मत्स्यः**—दाहिने हाथकी पीठपर बायाँ हाथ उलटा रखकर दोनों अँगूठे हिलायें ॥१८॥ **कूर्मः**—सीधे बायें हाथकी मध्यमा, अनामिका तथा
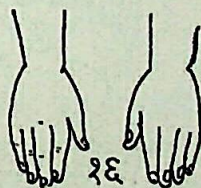
कनिष्ठा मोड़कर उलटे दाहिने हाथकी मध्यमा, अनामिकाको उन तीनों अँगुलियोंके नीचे रखकर तर्जनीपर दाहिनी कनिष्ठा और बायें अँगूठेपर दाहिनी तर्जनी रखें ॥१९॥ **वराहकम्**—दाहिनी तर्जनीको बायें अँगूठेसे मिला, दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको परस्पर बाँधें ॥२०॥ **सिंहाक्रान्तम्**—दोनों हाथोंको कानोंके समीप करें ॥२१॥ **महाक्रान्तम्**—दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको

कानोंके समीप करें ॥२२॥ **मुद्गरम्**—मुट्ठी बाँध, दाहिनी कुहनी बाईं हथेली पर रखें ॥२३॥ **पल्लवम्**—दाहिने हाथकी अँगुलियोंको मुखके सम्मुख हिलायें ॥२४॥
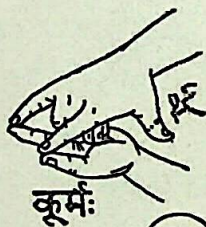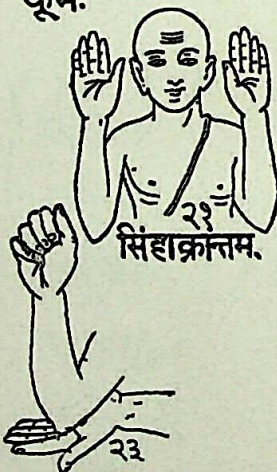
गायत्री-मन्त्र

नीचे लिखे गायत्री मन्त्रका करमालापर भी जप करना चाहिये। गायत्री मन्त्रका २४ लक्ष जप करनेसे एक पुरश्चरण होता है। अतः स्वयं करें अथवा ब्राह्मणसे जप करायें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

शक्तिमंत्र जपनेकी कर-माला

चित्र सं० १ के अनुसार अङ्क १ से आरम्भकर १० अङ्क तक अँगूठेसे जप करनेसे एक करमाला होती है। तर्जनीका मध्य तथा अग्रपर्व सुमेरु है। इसी प्रकार दश करमाला जपते
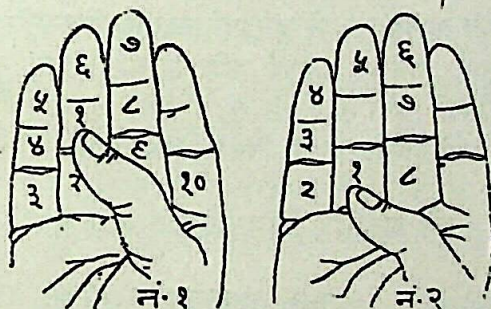
समय बायें हाथकी कनिष्ठिकाकी जड़की लकीरसे आरम्भ कर, तर्जनीकी जड़की लकीर तक दश गिनकर पश्चात् चित्र सं० २ के अनुसार अङ्क १ से आरम्भकर अङ्क ८ तक जप करनेसे १०८ की एक माला होती है।

जपके बादकी आठ मुद्राएँ

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गनिर्वाणमुद्रा श्च जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्॥

जपके बादकी ८ मुद्राएँ करनेकी विधि

अन्योन्याभिमुखी श्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः। तथैव तर्जनी-मध्या धेनुमुद्रा समीरिता ॥१॥ तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत्। वामहस्ताम्बुजं वामे जानुमूर्द्धनि विन्यसेत्। ज्ञानमुद्रा भवेदेषा रामचन्द्रस्य प्रेयसो ॥२॥ तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तौ जान्वन्ते च विनिर्दिशेत्। वैराग्या ह्यस्ति मुद्रा च मुक्तिसाधनकारिका ॥३॥ मिथः कनिष्ठिके वद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके। अनामिकोद्ध्वंसंश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ। अङ्गुष्ठाग्रद्वये न्यस्य योनिमुद्रेयमीरिता ॥४॥

वामाङ्गुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना। कृत्वोत्तानां ततो मुष्टिमङ्गुष्ठन्तु प्रसारयेत् ॥ वामाङ्गुल्यस्तथा श्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः। दक्षिणाङ्गुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रैषा शंखमुद्रिका ॥५॥ हस्तौ तु सम्मुखौ कृत्वा संहतप्रोन्नताङ्गुली। तलान्तमिलिताङ्गुष्ठौ कृत्वैषा पद्ममुद्रिका ॥६॥ उच्छ्रितं दक्षिणाङ्गुष्ठं वामाङ्गुष्ठेन वध्नयेत्। वामाङ्गुलीर्दक्षिणाभिरङ्गुलीभिश्च वध्नयेत्। लिङ्गमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी ॥७॥ अधोमुखं वामकरं तदूर्ध्वं दक्षिणन्तथा उत्तानं स्थापयित्वा च संयुक्ताङ्गुलिकौ तदा ॥ हस्तौ तु मुष्टिकौ कृत्वा श्रोत्रपार्श्वे च कारयेत्। तर्जन्यौ दर्शयेदूर्ध्वमेषा निर्वाणसंस्मृता ॥८॥

नीचे लिखे अनुसार चित्र देखकर मुद्रा बनायें।

सुरभिः—दोनों हाथोंकी अँगुलियाँ गूँथकर बायें हाथकी तर्जनीसे दाहिने हाथकी मध्यमा, मध्यमासे तर्जनी, अनामिकासे कनिष्ठा और कनिष्ठासे अनामिकाको मिलायें ॥१॥ **ज्ञानम्**—दाहिने हाथकी तर्जनीसे अँगूठा मिलाकर हृदयमें तथा इसी प्रकार बायाँ हाथ बाएँ घुटने पर सीधा रखें ॥२॥ **वैराग्यम्**—दोनों तर्जनियोंसे अँगूठे मिलाकर घुटनोंपर सीधा रखें ॥३॥ **योनिः**—दोनों मध्यमाओंके नीचेसे बाईं तर्जनीके ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी
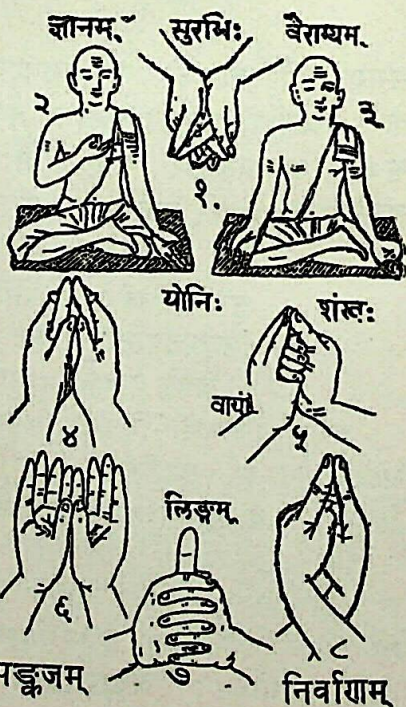
तर्जनीपर बाईं अनामिका रख दोनों तर्जनियोंसे बाँध; दोनों मध्यमाओंको ऊपर रखें ॥४॥ **शंखः**—बायें अँगूठेको दाहिनी मुट्ठी में बाँध, दाहिने अँगूठेसे बाईं अँगुलियोंको मिलायें ॥५॥ **पङ्कजम्**-दोनों हाथोंके अंगूठे तथा अँगुलियोंको मिलाकर ऊपरकी ओर करें ॥६॥ **लिङ्गम्**—दाहिने अँगूठेको सीधा रखते हुए दोनों हाथोंकी अँगुलियोंको गूँथकर बायाँ अँगूठा दाहिने अँगूठेकी जड़के ऊपर रखें ॥७॥ **निर्वाणम्**—उलटे बायें हाथपर दाहिना हाथ सीधा रख, अँगुलियोंको परस्पर गूँथ, दोनों हाथ अपनी तरफसे घुमा, दोनों तर्जनियोंको सीधा कानके समीप करें ॥८॥

गायत्री-कवच

ॐअस्य श्रीगायत्री कवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो गायत्री-देवता, ॐभूः बीजम्, भुवः शक्तिः, स्वः कीलकम्, गायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानम् ॥ पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम् । सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटि-सुशीतलाम् ॥ त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम् । वराभयांकुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाः ॥ शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं वराम् । सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम् ॥ ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्रीकवचं जपेत् ॥ ॐ ब्रह्मोवाच । विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्रीकवचं शृणु । यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत्क्षणात् ॥१॥ सावित्री मे शिरःपातु शिखायाममृतेश्वरी । ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी ॥२॥ कर्णौमे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बिके । गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ ॥३॥ द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती । सांख्यायनी

नासिका मे कपोलौ चन्द्रहासिनी ॥४॥ चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी । स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी ॥५॥ उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया । जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ॥६॥ पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु । ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः सन्ध्यात्मिकाऽवतु ॥७॥ जङ्घयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका । सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादाङ्गुलीषु च ॥८॥ सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा । इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्या सर्वपावनम् । पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ॥९॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः ॥१०॥ सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात् । प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान् ॥११॥

॥ श्रीविश्वामित्रसंहितोक्तं कवचं सम्पूर्णम् ॥

गायत्रीतर्पण (केवल प्रातः-सन्ध्यामें करें)

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता-देवता गायत्री छन्दः गायत्री-तर्पणे विनियोगः ॥ ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि । ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं त० । ॐ स्वः सामवेदपुरुषं त० । ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त० । ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं त० । ॐ तपः सर्वागम पुरुषं त० । ॐ सत्यं सत्यलोक पुरुषं त० । ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त० । ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त० । ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त० । ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त० । ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त० । ॐ स्वः त्रिपदां

गायत्रीं त० । ॐ भूर्भुवः स्वः चतुष्पदां गायत्रीं त० ।
ॐ उषसीं त० । ॐ गायत्रीं त० । ॐ सावित्रीं त० ।
ॐ सरस्वतीं त० । ॐ वेदमातरं त० । ॐ पृथिवीं त० ।
ॐ अजां त० । ॐ कौशिकीं त० । ॐ सांकृतिं त० ।
ॐ सार्वजितीं त० ।। ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ।। (देवी भागवत)

प्रदक्षिणा-मन्त्र

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण—पदे पदे ।।

क्षमा-प्रार्थना

यदक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ।।

विनियोग

ॐ उत्तमे शिखरे इत्यस्य वामदेव ऋषिः गायत्री देवता
अनुष्टुप्छन्दः गायत्री-विसर्जने विनियोगः ।।

विसर्जन

ॐ उत्तमे शिखरे देवि ! भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि ।
ब्राह्मणेभ्यो मनुज्ञाता गच्छ देवि ! यथासुखम् ।।

सन्ध्या समाप्त होनेपर पात्रोंमें बचा हुआ जल अपवित्र हो जाता है, इसलिए उसे फेंक देना चाहिए । जपादि समाप्त होनेके पश्चात् आसनके नीचे जल छोड़कर मस्तकमें लगायें ।

मध्याह्न-सन्ध्या—(प्रातः-सन्ध्याके अनुसार करें)

प्राणायामके बाद "ॐसूर्यश्चमेति" के विनियोग तथा आचमनमन्त्रके स्थानपर नीचे लिखा विनियोग व मन्त्र पढ़ें ।

विनियोगः—ॐ आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।।

आचमन—**ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनातु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु मां, यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रह ँ स्वाहा ।**

उपस्थान—चित्रके अनुसार दोनों हाथ ऊपर करें।

अर्घ—सीधे खड़े हो सूर्यको एक अर्घ दें।

विष्णुरूपा-गायत्री-ध्यानम् (प्रातः-सन्ध्या में चित्र देखें)।

ॐ मध्यान्हे विष्णुरूपां च ताक्ष्र्यस्थां पीतवाससाम् । युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ।

सूर्यमण्डलमें स्थित, युवावस्थावाली, पीला वस्त्र, शंख, चक्र, गदा तथा पद्म, धारणकर गरुड़पर बैठी हुई यजुर्वेदसे युक्त गायत्रीका ध्यान करें।

सायं-सन्ध्या (प्रातः-सन्ध्याके अनुसार करें)

पश्चिमाभिमुख हो सूर्य रहते करना उत्तम है। प्राणायामके बाद 'ॐ सूर्यश्चमेति' के विनियोग तथा आचमन मन्त्रके स्थानपर नीचे लिखे विनियोग व मन्त्र पढ़ें।

विनियोग—**ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।।**

आचमन—**ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्यु-**

कृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

अर्घ—बैठे हुए तीन अर्घ दें ।

उपस्थान—चित्रके अनुसार दोनों हाथ बन्दकमलके सदृश करें।

शिवरूपा-गायत्री-ध्यानम् (प्रातः-सन्ध्यामें चित्र देखें)–

ॐ सायान्हे शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ॥

सूर्यमण्डलमें स्थित, वृद्धारूपा, त्रिशूल, डमरू, पास तथा पात्र लिये बैलपर बैठी हुई सामवेदसे युक्त गायत्रीका ध्यान करें।

पञ्च-महायज्ञ

पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली-पेषण्युपस्कराः । कण्डनी उदकुम्भश्च वध्यते यास्तु वाहयन् ॥ तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः । पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमोदैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥मनु०॥

चूल्हा (अग्नि जलानेसे), चक्की (पीसनेमें), बुहारी (बुहारनेसे), ओखली (कूटनेसे) और जलके स्थानमें (जल पात्रके नीचे जीवोंके दबनेसे) जो पाप होते हैं, उन पापोंके लिये ब्रह्मयज्ञ—वेद, वेदाङ्ग तथा पुराणादिका पढ़ना और पढ़ाना,

T

पितृयज्ञ—श्राद्ध तथा तर्पण, देवयज्ञ—देवताओंका पूजन और हवन, भूतयज्ञ—बलि वैश्वदेव, मनुष्ययज्ञ—अतिथि-सत्कार—इन पञ्चयज्ञोंको नित्य प्रति अवश्य करना चाहिये।

तर्पण-विधि

आचारादर्शादि ग्रन्थोंमें लिखा है कि घरमें अमावस्या, पितृपक्ष, विशेष तिथि तथा श्राद्धके दिन तिलसे तर्पण करें। किन्तु अन्य दिन घरमें तिलसे तर्पण न करें।

तर्पणका जल सूर्योदयसे आधे पहर तक अमृत, एक पहर तक मधु, डेढ़ पहर तक दूध और साढ़े तीन पहर तक जल रूपसे पितरोंको प्राप्त होता है। इसके उपरान्तका दिया हुआ जल राक्षसोंको प्राप्त होता है।

अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः।
पितॄंस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम्॥

कुशाके अग्र भागसे देवताओंका, मध्यसे मनुष्योंका और मूल तथा अग्र भागसे पितरोंका तर्पण करें।

तर्पण

पूर्वाभिमुख बैठ दूसरा वस्त्र ले आचमनकर दो कुशाओंकी पवित्री दाहिने तथा तीनकी बायें हाथकी अनामिकाकी जड़में धारण करें। तीन कुशाओंको सीधी बंटकर ग्रन्थी लगा कुशाओंका अग्रभाग पूर्वमें रखते हुए दाहिने हाथमें जलादि लेकर संकल्पमें नाम पर्यन्त बोलकर **"श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्त्यर्थं देवर्षि-मनुष्य-पितृतर्पणं करिष्ये"** कहकर जलादि छोड़ें।

आवाहन (तीर्थोंमें न करें)

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः॥

देव–तर्पण

देव-तीर्थ (चित्र पृष्ठ २० में देखें) अर्थात् अँगुलियोंके अग्रभाग तथा कुशाओंके अग्रभागसे चावल सहित प्रत्येकको एक-एक अंजलि दें।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् १। ॐ विष्णुस्तृप्यताम् १। ॐ रुद्रस्तृप्यताम् १। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् १। ॐ देवास्तृप्यन्ताम् १। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् १। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् १। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् १। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् १। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् १। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् १। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम् १। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् १। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् १। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् ९। ॐ नागास्तृप्यन्ताम् १। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् १। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् १। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् १। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् १। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम् १। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् १। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्१। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम् १। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् १। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् १। ॐ औषधयस्तृप्यन्ताम् १। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् १।

ऋषि-तर्पण (ऋषियोंको भी उसी प्रकार दें)

ॐ. मरीचिस्तृप्यताम् १। ॐ अत्रिस्तृप्यताम् १। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम् १। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम् १। ॐ पुलहस्तृप्यताम् १। ॐ क्रतुस्तृप्यताम् १। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् १। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् १। ॐ भृगुस्तृप्यताम् १।

T

ॐ नारदस्तृप्यताम् १ । ततः उत्तराभिमुखः कण्ठीकृत्वा ।

दिव्य मनुष्य-तर्पण

उत्तराभिमुख हो जनेऊ तथा गमछेको कण्ठीकर "कायतीर्थ" (कनिष्ठाका मूल) तथा कुशाग्रोंके मध्यसे जौ सहित प्रत्येकको दो-दो अंजलि दें ।

ॐ सनकस्तृप्यताम् २ । ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २ । ॐ सनातनस्तृप्यताम् २ । ॐ कपिलस्तृप्यताम् २ । ॐ आसुरिस्तृप्यताम् २ । ॐ वोढुस्तृप्यताम् २ । ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् २ । ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः ।

दिव्य पितृ-तर्पण

दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना मोड़ अपसव्य हो अर्थात् जनेऊ तथा अङ्गोछेको दाहिने कन्धेपर कर पितृतीर्थ (चित्र पृष्ठ २० पर देखें) तर्जनीके मूल तथा कुशाके अग्रभाग और मूलसे तिल सहित प्रत्येक नामसे तीन-तीन अंजलियाँ दक्षिणामें दें ।

ॐ कव्यवाट् तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ । ॐ अनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ । ॐ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ । ॐ यमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ । ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ । ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३ । ॐ सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३ । ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३ ।

T

यम-तर्पण

चौदह यमोंको भी उसी प्रकार तीन-तीन अंजलियाँ दें।

ॐ यमाय नमः ३। ॐ धर्मराजाय नमः ३। ॐ मृत्यवे नमः ३। ॐ अन्तकाय नमः ३। ॐ वैवस्वताय नमः ३। ॐ कालाय नमः ३। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३। ॐ औदुम्बराय नमः ३। ॐ दध्नाय नमः ३। ॐ नीलाय नमः ३। ॐ परमेष्ठिने नमः ३। ॐ वृकोदराय नमः ३। ॐ चित्राय नमः ३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३।

पितृ-तर्पण

पितृ आवाहनके लिये नीचे लिखे वाक्यसे एक अंजलि दें।

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्त्वपोऽञ्जलिम् ॥

नीचे लिखे वेद मंत्र यदि शुद्ध उच्चारण न कर सकें तो केवल "ॐ अद्य अमुक गोत्रः" से बोलकर प्रत्येकको तीन-तीन अंजलियाँ दें। "अमुक" शब्द तथा पितरोंकी उपाधिके लिये "संकल्प" पृ० ८-९ पर देखें।

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुकः वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (पिताको पहली अंजलि दें) ॥ ॐ अङ्गिरसो नः पितरो न वग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः तेषां वय ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुकः वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (दूसरी अंजलि दें) ॥ ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पिता अमुकः वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं

तस्मै स्वधा ।। (तीसरी अंजलि दें) ।। ॐ ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकः रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।। (दादाको पहली अंजलि दें) ।। ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकः रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।। (दूसरी अंजलि दें) ।। ॐ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म । त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ ᳪ सुकृतञ्जुषस्व । ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकः रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।। (तीसरी अंजलि दें) ।। ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।। (परदादा को पहली अंजलि दें) ।। ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ᳪ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता ।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।। (दूसरी अंजलि दें) ।। ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।। ॐ अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ।। (तीसरी अंजलि दें) ।।

नीचे लिखे वाक्य बोलकर एक-एक अंजलि दें।

ॐ तृप्यध्वम् १। ॐ तृप्यध्वम् १। ॐ तृप्यध्वम् १।

माता, दादी और परदादीको तीन-तीन अंजलियाँ दें।

ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मन्माता अमुकी देवी गायत्रीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (माता)

ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मत्पितामही अमुकी देवी सावित्रीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (दादी)

ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी सरस्वतीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (परदादी)

ॐ अद्य अस्मत् सापत्नमाता अमुक गोत्रा अमुकी देवी गायत्रीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (सौतेली माता)

नीचे लिखा मंत्र प्रत्येक बार बोलकर नानाको तीन अंजलियाँ दें।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त ॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रोऽस्मन्मातामहः अमुकः अग्निस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ ॥ (नाना)

नीचे लिखा मंत्र प्रत्येक बार बोलकर परनानाको तीन अंजलियाँ दें।

ॐ नमो वः पितरो ० ॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रोऽस्मत् प्रमातामहः अमुकः वरुणस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ ॥ (परनाना)।

नीचे लिखा मंत्र प्रत्येक बार बोलकर वृद्ध परनानाको तीन अंजलियाँ दें।

ॐ नमो: व: पितरो० ॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रोऽस्मद्-वृद्धप्रमातामहः अमुकः प्रजापतिस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ ॥ (वृद्ध परनाना)।

नानी, परनानी और वृद्धपरनानीको तीन-तीन अंजलियाँ दें।

ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मन्मातामही अमुकी देवी गङ्गा-रूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (नानी)।

ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मत्प्रमातामही अमुकी देवी यमुनारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (परनानी)

ॐ अद्य अमुक गोत्राऽस्मद्वृद्धप्रमातामही अमुकी देवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (वृद्ध परनानी)।

नीचे लिखे स्वर्गीय सम्बन्धियोंका गोत्र, सम्बन्ध तथा नाम उच्चारणकर प्रत्येकको तीन-तीन अंजलियाँ दें। गुरु, दादा, परदादा, ताऊ, चाचा, भ्राता, पुत्र, श्वसुर, मामा और फूफा आदि तथा उन लोगों की पत्नियाँ, अपनी पत्नी, बहिन और पुत्री आदिको अंजलियाँ दें। पश्चात् पूर्वाभिमुख हो जनेऊ एवं अंगोछेको बायें कंधेपर रखकर देवतीर्थसे नीचे लिखे मंत्रसे जल-धारा छोड़ें।

ॐ देवाऽसुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्व-राक्षसाः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥ जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाऽम्बुनाखिलाः॥

दक्षिणाभिमुख हो जनेऊ एवम् अंगोछेको दाहिने कंधेपर रखकर पितृतीर्थसे नीचे लिखे मंत्रोंको पढ़कर जल-धारा छोड़ें।

ॐ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ॥ ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवांछति ॥ ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् ॥ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ ॐ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

"अंगोछेकी" चार तहकर उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर बायीं ओर पृथ्वीपर निचोड़ें।

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते तृप्यन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥

हाथमें बँटी हुई जो कुशाएँ हैं उन्हें खोलकर त्याग दें किन्तु पवित्री न त्यागें। पश्चात् नीचे लिखे मंत्रसे भीष्मपितामहको एक अंजलि दें।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
एभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् ॥

पूर्वाभिमुख तथा सव्य हो आचमन करें तथा नीचे लिखे प्रत्येक नामसे एक-एक अंजलि दें।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ दिग्भ्यो नमः। ॐ दिग्देवताभ्यो नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ औषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ मित्राय नमः।

ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

नीचे लिखे मन्त्रसे सूर्यको अर्घ दें, पश्चात् जलको नेत्रों-पर लगायें।

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने॥
ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः॥
"कृतेनानेन तर्पणेन पितृरूपी जनार्दनः प्रीयताम्"।

क्षमा प्रार्थना—प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

ब्रह्म-यज्ञ

मण्डल ब्राह्मण तथा उपनिषदादि श्रुति पाठ करें या नीचे लिखा पाठ करें।

"अनुवाकम्"—ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यस्मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति॥ "पुरुषसूक्तम्"—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि ँ सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ "शिवसंकल्पः"—ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ "मण्डल-ब्राह्मणम्"—ॐ यदेतन्मण्डलं तपति तन्महदुक्थन्ता ऋचः स ऋचां लोकोथ यदेतदर्चिर्दीप्यते तन्महाव्रतं तानि सामानि स साम्नां लोकोथ य एष एतस्मिन् मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजू ँ षि स यजुषां लोकः। "यजुर्वेदः"—ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय

भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश ँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात्बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥ "ऋग्वेदः"—ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ "सामवेदः"—ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ "अथर्ववेदः"—ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

"अनेन ब्रह्मयज्ञाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥"

नित्य-होम

तिलसे आधे चावल, चावलोंसे आधे जौ, जौसे आधी चीनी और यथेष्ट घृत तथा मेवा मिलाकर साकल्य बनायें। संकल्प वाक्यके अन्तमें "श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं नित्य-होमं करिष्ये" कहें। वेदीपर पञ्च भूसंस्कार करें। कुशाओंसे वेदी साफकर उन्हें ईशान-कोणमें फेकें १। गोबर और जल लेपन करें २। स्रुवाके मूलसे पूर्वकी ओर उत्तरोत्तर प्रादेश मात्रकी तीन लकीरें खीचें ३। अनामिका और अंगूठेसे उन लकीरोंमें से किञ्चित मिट्टी निकालें ४। वेदीपर जल छिड़कें ५। अग्निकोणसे अग्नि लाकर नीचे लिखे मंत्रसे नैर्ऋत्यकोणमें किञ्चित् अग्नि छोड़ें।

ॐक्रव्यादमग्निमिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवताऽग्निसंस्कारे विनियोगः ॥

मन्त्र—ॐ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्।

नीचे लीखे मन्त्रसे अग्निस्थापन करें।

विनियोग—अयं ते योनिरिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता अग्निस्थापने विनियोगः ॥

मन्त्र—ॐ अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। तञ्जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धया रयिम् ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके पूर्वमें उत्तराग्र कुशा रखें।

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके दक्षिणमें पूर्वाग्र कुशा रखें।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावती-रनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात् बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके पश्चिममें उत्तराग्र कुशा रखें।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके उत्तरमें पूर्वाग्र कुशा रखें।

ॐ शं नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः ॥

अग्नि प्रज्वलितकर नीचे लिखे मन्त्रसे अग्निका ध्यान करें।

ॐ चत्वारि शृङ्गात्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश ॥

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा।
पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने ॥

प्रार्थना—ॐ अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषध्वज ! मम सम्मुखो भव ॥

"ॐ पावकाग्नये नमः" इस मन्त्रसे अग्निका पूजन करें और कनिष्ठाको अलग रखते हुए सीधे हाथसे आहुति दें।

ॐभूः स्वाहा। इदमग्नये न मम १। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम २। ॐस्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ३। ॐअग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम ४। ॐधन्वन्तरये स्वाहा। इदं धन्वन्तरये न मम ५। ॐविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम ६। ॐप्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ७। ॐअग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ८। ॐदेवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम ९। ॐमनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १०। ॐपितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम ११। ॐआत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १२। ॐएनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १३। ॐयच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वांस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा। इदमग्नये न मम १४॥ प्रार्थना॥ ॐसप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥१५॥ "अनेन होमेन श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु"॥

स्रुवासे भस्म ले मन्त्रसे लगा वेदीकी कुशाओंको अग्निमें डालें।

देवपूजा-विधि

पूजन-सामग्रीको शुद्ध करके यथास्थान रखकर विधिपूर्वक पूजन करें।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधः पुष्पैः समर्चयेत् ।
कुशाग्रैर्न क्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ॥

—आचारमयूख

देवताओंको अँगूठेसे न मलें और पुष्प अधोमुख करके न चढ़ायें तथा कुशाके अग्रभागसे देवताओंपर जल न छिड़कें। ऐसा करना वज्रपातके तुल्य है।

त्रिर्देवेभ्यः प्रक्षालयेत् सकृत् पितृभ्यः ॥

—आपस्तम्ब

देवताओंको तीनबार और पितरोंको एकबार धोकर अक्षत चढ़ायें।

नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम् ।
न दूर्वया यजेद् दुर्गां विल्वपत्रैश्च भास्करम् ॥
दिवाकरं वृन्तहीनैर्विल्वपत्रैः समर्चयेत् ॥

—आह्निक

विष्णुको चावल, गणेशको तुलसी, दुर्गाको दूर्वा और सूर्यनारायणको विल्वपत्र न चढ़ायें। किन्तु डंडी तोड़कर विल्वपत्र सूर्यनारायणको चढ़ा सकते हैं।

अधोवस्त्रधृतं चैव जलेऽन्तःक्षालितं च यत् ।
देवतास्तन्न गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ॥

—आह्निक

धोतीमें रखा हुआ और जलमें डुबोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है। इसलिये देवता उसे ग्रहण नहीं करते हैं।

शिवे विवर्जयेत् कुन्दमुन्मत्तं च तथा हरौ ।
देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ॥

शिवजीको कुन्द, विष्णुको धतूरा, देवीको आक तथा मदार और सूर्यको तगरका पुष्प न चढ़ायें।

तुलसी-मञ्जरीभिर्यः कुर्यात् हरिहरार्चनम्।
न स गर्भगृहं याति मुक्तिभागी न संशयः॥

तुलसीकी मञ्जरीसे जो विष्णु भगवान् तथा शिवकी पूजा करता है। उसको गर्भमें वास नहीं करना पड़ता, वह अवश्य मुक्ति पाता है।

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्।
यथोत्पन्नं तथा देयं विल्वपत्रमधोमुखम्॥ —आह्निक

पत्र, पुष्प तथा फलका मुख नीचे करके न चढ़ायें। वे जैसे उत्पन्न होते हैं, उनको वैसे ही चढ़ाना चाहिये। किन्तु विल्वपत्र उलटा करके चढ़ायें।

पर्णमूले भवेद् व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः।
जीर्णपत्रं हरत्यायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी॥-आचारार्क

पानकी डंडीसे व्याधि और अग्रभागसे पाप होता है। सड़ा पान आयु और शिरा बुद्धिको नष्ट करती है। इसलिये डंडी, अग्रभाग और शिरा निकाल दें।

वृक्ष से तुलसीग्रहण-मन्त्र

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया।
केशवार्थं चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने!॥

संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्याके समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध है। यदि विशेष आवश्यक हो तो नीचे लिखे मन्त्रसे तोड़ सकते हैं।

त्वदङ्गसम्भवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम्।
तथा नाशय विघ्नं मे ततो यान्ति पराङ्गतिम्॥

पूर्वाभिमुख बैठकर बायीं ओर घण्टा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जल-पात्र तथा पूजनकी सामग्री रख आचमन, प्राणायाम करके संकल्प वाक्यके अन्तमें "शालग्रामपूजनं तदङ्गत्वेन गणपत्यादिदेवानां मण्डले स्थापनं पूजनञ्च करिष्ये" कहकर जलादि छोड़ें।

दीपक-पूजन

घृतका दीपक अपनी बाईं तथा तैलका दाहिनी ओर पूर्व या उत्तरमुख करके चावल आदिपर रख प्रज्वलितकर हाथ धो नीचे लिखी प्रार्थना करें।

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

घंटा-पूजन

आवाहन के लिये घंटा बजा पश्चात् घंटेका पूजन करें।

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् ।
घण्टा-नादं प्रकुर्वीत पश्चात् घण्टां प्रपूजयेत् ॥

शंख-पूजन

शंखमें जल भरकर शंख-मुद्रा दिखा पूजाकर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुनाविधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य ! नमोस्तुते ॥

स्वस्तिवाचन

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः १ । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः २ । उमामहेश्वराभ्यां नमः ३ । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ४ । शचीपुरन्दराभ्यां नमः ५ । मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः ६ । इष्टदेवताभ्यो नमः ७ । कुलदेवताभ्यो नमः ८ ।

ग्रामदेवताभ्यो नमः ९। वास्तुदेवताभ्यो नमः १०। स्थान देवताभ्यो नमः ११। एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः १२। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः १३। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः १४। अविघ्नमस्तु १५। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु १६। ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् १७। ॐविष्णो रराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णो-र्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा १८। ॐअग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता-ऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देव-तेन्द्रो देवता वरुणो देवता १९। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि २०। ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्नि-मातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह २१। ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै-स्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः २२। ॐ शत-मिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः। ॐअदिति-द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्। ॐ यतो

यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयंनः पशुभ्यः २५ । ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव २६ । ॐएतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव २७। ॐमनो जूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳬसमिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामो ३ म् प्रतिष्ठ २८ । एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति २९ । ॐगणानां त्वा गणपतिᳬहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳬहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिᳬहवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ३० । ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ३१ । सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ३२।६

पुण्याहवाचन

तत्रादौ युग्मब्राह्मणानां हस्तेषु ।

(यजमानः) "शिवा आपः सन्तु" । (ब्राह्मणाः) "सन्तु शिवा आपः ।" इति जलम् । (यजमानः) "सुगन्धाः पान्तु ।" (ब्राह्मणाः) "सौमङ्गल्यं चास्तु ।" इति गन्धम् । (यजमानः) "सौमनस्यमस्तु ।" (ब्रा०) "अस्तु सौमनस्यम् ।" इति

पुष्पम् । (यज०) "अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।" (ब्रा०) "अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।" इत्यक्षतान् । (यज०) "सफल-ताम्बूलानि पान्तु ।" (ब्रा०) "ऐश्वर्यमस्तु ।" इति सफल-ताम्बूलम् । (यज०) "दक्षिणाः पान्तु ।" (ब्रा०) "बहुदेयं चास्तु ।" इति दक्षिणा । (यज०) "ॐ स्वर्चितमस्तु ।" (ब्रा०) "अस्त्वर्चितं मङ्गलं च ।" इति जलम् । दीर्घायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं बहुधनं चास्तु । यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वृषिसमनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । वाच्यतामिति ब्राह्मणवचनम् । (पुनः यजमानो ब्रूयात्) "व्रत-नियमतपस्स्वाध्यायक्रतुदमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्"। (ब्राह्मणाः) "समाहितमनसः स्मः"। (यज-मानो ब्रूयात्) "प्रसीदन्तु भवन्तः"।(ब्राह्मणाः) "प्रसन्नाः स्म" । ततो यजमानः अवनीकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना जलपूर्णं (सुवर्णयुक्त) कलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रे किंचिदुदकं पातयेत् ।

(ततः ब्राह्मणा वदेयुः) ॐ शान्तिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । ऋद्धिरस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । शिवमस्तु । शिवं कर्मास्तु । कर्मसमृद्धिरस्तु । पुत्रसमृद्धि-रस्तु । वेदसमृद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु । धनधान्यसमृद्धि-रस्तु । इष्टसम्पदस्तु ।। अरिष्टनिरसनमस्तु । यच्छ्रेयस्तदस्तु । ततो द्वितीय पात्रे पातयेत् । यत्पापमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहत-मस्तु । पुनः प्रथमपात्रे पातयेत् । उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्न-

मस्तु । उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्ताम् । तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे सुमुहूर्ते सुनक्षत्रे सुग्रहे सुदैवते प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । भगवती कात्यायिनी प्रीयताम् । भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । पुनः द्वितीयपात्रे पातयेत् । हताश्च ब्रह्मद्विषः । हताश्च परिपन्थिनः । हताश्च विघ्नकर्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वीतयः । पुनः प्रथमपात्रे पातयेत् । शुभानि वर्द्धन्ताम् । शिवा आपः सन्तु । शिवा ऋतवः सन्तु । शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु । शिवा वनस्पतयः सन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु । अहोरात्रे शिवे स्याताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् । योगक्षेमो नः कल्पताम् । शुक्रांगारकबुध-

बृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमादित्यरूपाःसर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् । भगवान्नारायणः प्रीयताम् । भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् । पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु । वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ।

ततो यजमानः सुवर्णकलशं भूमौ निधाय प्रथमपात्रपातित-जलेन शिरः संमृज्य सपरिवारगृहांश्चाभिषेचयेत् । द्वितीय-पात्रजलमेकान्ते पातयेत् ।

[यजमानो ब्रूयात्] ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्टच्युत्पादन कारकम् । वेदवृक्षोद्भवं पुण्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥ भो ब्राह्मणाः ! मम सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु । [ब्राह्मणाः] ॐ पुण्याहम् ३ । ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः । पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ [यजमानः] पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत् कल्याणं पुराकृतम् । ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ।। भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु । [ब्राह्मणाः]ॐ कल्याणम् ३ । ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्या ঁ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय । प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्धय-तामुप पादो नमतु ।। [यजमानः] सागरस्य च या लक्ष्मीर्महा-लक्ष्म्यादिभिः कृता । संपूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ।। भो ब्राह्मणाः ! मम सपिरवारस्य गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।। [ब्राह्मणाः] ॐ ऋद्धयताम् ३ । ॐ सत्रस्य ऋद्धि-

रस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम । दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामा-विदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ।। [यजमानः] स्वस्त्यस्तु ह्यवि-वाशाख्या नित्यं मङ्गलदायिनी । विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः ।। भो ब्राह्मणाः ! मम सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।। [ब्राह्मणाः] ॐ स्वस्ति ३ ।। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।। [यजमानः] समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका । हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ।। भो ब्राह्मणाः ! मम सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु [ब्राह्मणाः] ॐ अस्तु श्रीः ३ ।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप-मश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म ईषाण सर्वलोकं म ईषाण । [ततस्तिलकाशीर्वादः ।] अथ दक्षिणादानम् ।। ॐ अद्य पुण्याह-वाचनसाङ्गतासिद्ध्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां यथाशक्ति हिरण्यमूल्य-द्रव्यदक्षिणां संप्रददे ।। इति पुण्याहवाचनम् ।।

अङ्गन्यास । पूरे मन्त्र शालग्राम पूजन में लिखे हैं ।

ॐ सहस्रशीर्षा०—वामकरे । ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं०-दक्षिणकरे । ॐ एतावानस्य महिमा०—वामपादे । ॐ त्रिपा-दूर्ध्वं०—दक्षिणपादे । ॐ ततो विराड०—वामजानुनि । ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहुत०—दक्षिणजानुनि । ॐतस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः०—वामकट्याम् । ॐ तस्मादश्वा०—दक्षिणकट्याम् । ॐ तं यज्ञम्०—नाभौ । ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः०—हृदि ।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य—कण्ठे । ॐ चन्द्रमा मनसो०—वामबाहौ । ॐ नाभ्या आसी०—दक्षिणबाहौ । ॐ यत्पुरुषेण०—मुखे । ॐ सप्तास्या०—अक्ष्णोः । ॐ यज्ञेन यज्ञ०—मूर्ध्नि ।

पञ्चाङ्गन्यास

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः०—हृदये ॐ वेदाहमेतम्०—शिरसि । ॐ प्रजापतिश्च०—शिखायाम् । ॐ यो देवेभ्य आतपति०—कवचाय हुम् । ॐ रुचं ब्राह्मम्०—अस्त्राय फट् ।

करन्यास

ॐ ब्राह्मणोऽस्य०—अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ चन्द्रमा०—तर्जनीभ्यां नमः । ॐ नाभ्या०—मध्यमाभ्यां नमः । ॐ यत्पुरुषेण०—अनामिकाभ्यां नमः । ॐ सप्तास्यासन्०—कनिष्ठाभ्यां नमः । ॐ यज्ञेन०—करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

गणपति तथा अम्बिका-पूजन

सुपारीपर मौली लपेट चावलोंपर स्थापितकर नीचे लिखा ध्यान करके आवाहनमंत्रसे अक्षत छोड़ें। मूर्ति हो तो पुष्प छोड़ें।

ध्यानम्

ॐ गजाननंभूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

आवाहन—आगच्छ भगवन् देव ! स्थाने चात्र स्थिरो भव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आवाहयामि

प्रतिष्ठा—अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ प्र०

T

आसन—रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥आसनं स०

पाद्य—उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥ पा० स०

अर्घ्य—अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।
करुणां कुरु मे देव! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ अ० स०

आचमन—सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥ आ० स०

स्नान—गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥स्ना० स०

दुग्धस्नान—कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ दु० स०

दधिस्नान—पयसस्तुसमुद्भूतंमधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ द० स०

घृतस्नान—नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ घृ० स०

मधुस्नान—तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ म० स०

शर्करास्नान—इक्षुसारसमुद्भूताशर्करापुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श० स०

पञ्चामृत—पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पं० स०

शुद्धस्नान—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

वस्त्र—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ व० स०

उपवस्त्र-सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः ।
वासोऽअग्ने विश्वरूपᳪसं व्ययस्व विभावसो ॥ उ० स०

यज्ञोपवीत—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ य० स०

मधुपर्क—कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः ।
मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ म० स०

गन्ध—श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ गं० स०

रक्तचन्दन—रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥ र० स०

रोली—कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामनाकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ! ॥ कुं० स०

सिन्दूर-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ सिं० स०

अक्षत-अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ! ॥ अ० स०

T

पुष्प—पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ।। पु० स०
माला-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ! ।।पु०मा०स०
विल्वपत्र-त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ! ।।वि०प०स०
दूर्वा—त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि ।
सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव ।। दू० स०
दूर्वाङ्कुर-दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मंगलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ! ।। दूर्वा०स०
शमीपत्र—शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टका ।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ।। श० स०
आभूषण—अलङ्कारान्महादिव्यान्नानारत्न-विनिर्मितान् ।
गृहाण देवदेवेश ! प्रसीद परमेश्वर ! ।। आ० स०
अबीरगुलाल—अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च ।
अबीरेणार्चितो देव ! अतः शान्ति प्रयच्छ मे ।। अ० स०
सुगन्ध तैल—चम्पकाशोकवकुलमालतीमोगरादिभिः ।
वासितं स्निग्धताहेतुं तैलं चारु प्रगृह्यताम् ।। सु०स०
धूप—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। धू०आ०
दीप—आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।। दी०द०

T

नैवेद्य—शर्करा घृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।। नै०निवे०

मध्ये पानीयं—अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च पिबेच्छया ।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि ।। म०पा०स०

ऋतुफल—नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम् ।
कूष्माण्डं पुरतो भक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम् ।।ऋ० स०

आचमन—गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम् ।
आचम्यतां सुरश्रेष्ठ! शुद्धमाचमनीयकम् ।। आ० स०

अ० ऋ०—इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।। अ०ऋ०स०

ताम्बूलपूगीफल—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।। तां०पू०स०

दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।। द्रव्यं स०

आरती—चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ।। आ० स०

पुष्पाञ्जलि—नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ! ।। पु० स०

प्रार्थना—रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ! ।।
भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम ।।

T

अष्टदल कमल बना धान्य रख उसपर कलश-स्थापन करें।

भू० स्प०—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं मा हिँसीः ॥

धान्य—ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥

सप्तधान्यपर कलश-स्थापन—ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥

कलशमें जल—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

कलशमें गन्ध—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ गं० स०

कलशमें सर्वौषधि—ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहँशतं धामानि सप्त च ॥

कलशमें दूर्वा—ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ दू०स०

कलशपर पञ्च-पल्लव—ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ प.प.

कलशमें सप्तमृत्तिका—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ स० मृ० स०

पूगीफल—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ऽँ हसः ॥ पू० स०

कलशमें पञ्चरत्न—ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ पं० स०

कलशमें सुवर्ण या द्रव्य—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ द्र० स०

वस्त्र—ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ वस्त्रं स०

पूर्णपात्र—ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ऽँ शतक्रतो ॥ पू० पा० स०
(पूर्णपात्रको कलशपर रखें)

श्रीफल—ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वंलोकं म इषाण ॥ श्रीफलं स०
(नारियलपर लाल वस्त्र लपेटकर पूर्णपात्रपर रखें ।)

वरुणावाहन—ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ऽँ स मा न आयुः प्र मोषीः ॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं

सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि ॥

आवाहन—सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः । कुक्षौ तु सागरा सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः । अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

प्रतिष्ठा—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्ता मो३म् प्रतिष्ठ ॥

कलशे वरुणाद्यावाहिताः देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ पूजनकर नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः । त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः । आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः । त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः । त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ (अक्षत छोड़ें)

T

नवग्रह-पूजन

बायें हाथमें अक्षत ले दाहिने हाथसे प्रत्येक मन्त्रके बाद अक्षत छोड़ें।

सूर्य-'मण्डलके मध्यमें' (गोलाकार, लाल)

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ, इह तिष्ठ। सूर्याय नमः।

चन्द्र—'अग्निकोणमें' (अर्धचंद्र, श्वेत)

ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्र-ममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्म-णाना ँ राजा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ, इह तिष्ठ। सोमाय नमः।

मङ्गल—'दक्षिणमें' (त्रिकोण, लाल)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ, इह तिष्ठ। भौमाय नमः।

बुध—'ईशानकोणमें' (हरा बाण)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बुध, इहागच्छ, इह तिष्ठ। बुधाय नमः।

बृहस्पति—'उत्तरमें' (पीला अष्टदल)

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ, इह तिष्ठ । बृह० नमः ।

शुक्र—'पूर्वमें' (श्वेत पञ्चकोण)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ᳪ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ । शुक्राय नमः ।

शनि—'पश्चिममें' (काला मनुष्य)

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ । शनै०नमः ।

राहु—'नैर्ऋत्य कोणमें' (काला मकर)

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ । राहवे नमः ।

केतु—'वायव्य कोण में' (काली ध्वजा)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भि-रजायथाः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ । केतवे नमः ।

ॐ सूर्यादि-नवग्रहेभ्यो नमः ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

"अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम।" अक्षत छोड़ें ।

पञ्चलोकपाल-पूजन

बायें हाथमें अक्षत ले दाहिने हाथसे प्रत्येक मंत्रके बाद अक्षत छोड़ें ।

गणपति—ॐ गणानां त्वा गणपति ᳪ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ᳪ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ᳪ हवामहे वसो मम। आहमजानिगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॥ गणपतये नमः ।

देवी—ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममारातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे ! इहागच्छ, इह तिष्ठ। दुर्गायै नमः ॥

वायु—ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ᳪ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ । वायवे नमः ॥

आकाश—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश ! इहागच्छ, इह तिष्ठ । आकाशाय नमः ॥

अश्विनी—ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ।। उपयाम गृहीतोऽस्यश्विभ्यांत्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ।। ॐ भूर्भुवः स्वरश्विना ! इहागच्छतम्, इह तिष्ठतम्, अश्विभ्यां नमः । (इत्यावाह्य) ॐगणपत्यादिपञ्चलोकपालेभ्यो नमः ।।

पूजन करें। पश्चात् "अनया पूजया पञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम" बोलकर अक्षत छोड़ें ।

दश दिक्पाल-पूजन

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक मंत्रके बाद अक्षत छोड़ें ।

इंद्र—(पूर्वमें) ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँशूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।। (इन्द्राय नमः)

अग्नि—(अग्निकोणमें) ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ आ सादयादिह ।। (अग्नये नमः)

यम—(दक्षिणमें) ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ।। (यमाय नमः)

निर्ऋति—(नैर्ऋत्य कोणमें) ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।। (नि० नमः)

वरुण—(पश्चिममें) ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचक्रे ।। (वरुणाय नमः) व० आ० स्था० ।

वायु—(उत्तरकोणमें) ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः ॥ (वायवे नमः)वा०ग्रा०

कुबेर—(उत्तरमें) ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥ (कुबेराय नमः) कु० ग्रा० स्था०

ईशान—(ईशान कोणमें) ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसाम-सद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ (ईशानाय नमः)

ब्रह्मा—(ईशानपूर्वके मध्यमें) ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ (ब्रह्मणे नमः)

अनन्त—(नैर्ऋत्य पश्चिमके मध्यमें) ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ (अनन्ताय नमः) अनन्तं ग्रा० स्था०

"ॐ इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यो नमः" से पूजन करें पश्चात् "अनया पूजया दशदिक्पालदेवताः प्रीयन्तां न मम" कहकर अक्षत छोड़ें।

षोडशमातृका-पूजन

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक नामपर अक्षत छोड़ें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

"ॐभूर्भुवः स्वः षोडशमातृकाभ्यो नमः इहागच्छत इह तिष्ठत" ॥
ॐगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः ॥
पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

'अनया पूजया गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम' (अक्षत छोड़ें)।

चतुःषष्टि-योगिनी-पूजन

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे नीचे लिखे मंत्र-से छोड़ते जायें।

आवाहयाम्यहं देवीः योगिनीः परमेश्वरीः।
योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यानसमन्विताः।
चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः ॥

"ॐचतुःषष्टियोगिनीमातृकाभ्यो नमः" कहकर पूजन करें। पश्चात् "अनया पूजया चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्तां न मम" कहकर अक्षत छोड़ें।

रक्षा-विधान

बायें हाथमें पीली सरसों अथवा चावल, द्रव्य और तीन तारकी मौली लेकर दाहिने हाथसे ढककर नीचे लिखे मंत्र बोलें।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्। धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ शक्राद्या देवताः

सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ।। वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् । व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ।। विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः । तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ।।

नीचे लिखे मन्त्रोंसे दशों दिशाओंमें पीली सरसों या चावल छोड़ें ।

पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः । दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ।। पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः । उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ऐशान्यां तु महेश्वरः ।। ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु । एवं दशदिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ।। रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो समाद्रिधृक् । यदत्र संस्थितं भूतं स्थान-माश्रित्य सर्वदा ।। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु । अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः ।। ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया । अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।। सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

पश्चात् मौली गणेशजीके सम्मुख रख दें । फिर उस मौलीमें से गणपत्यादि समस्त देवताओंको चढ़ाकर रक्षाबन्धन करें ।

ब्राह्मण-रक्षाबन्धन मन्त्र

ब्राह्मणके हाथमें दक्षिणा देकर रक्षा बाँधें ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

ब्राह्मण-तिलक-मन्त्र

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

यजमान-रक्षाबन्धन-मन्त्र

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

यजमान-तिलक-मन्त्र

शतमानं भवति शतायुर्वै पुरुषः ।
शतेन्द्रिय आयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन् धत्ते ।।

शालग्राम-पूजन

शालग्राम तथा प्रतिष्ठित मूर्तियोंमें आवाहन न करें, केवल पुष्प छोड़ें ।

आवाहन—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ँ सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।। आवा०
आसन—ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ।। आ० स०
पाद्य—ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।। पा०
अर्घ्यं—ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।। अ० स०
आचमन—ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ।। आ०स०

स्नान—ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ।। स्ना०स०
दुग्ध—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।। दु०स्ना०स०
दधि—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयूꣳषि तारिषत् ।। द०स्ना०
घृत स्नान—ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः
पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश
आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।। घृ०स्ना०स०
मधु स्नान—ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।। मधुनक्तमुतोषसो मधुम-
त्पार्थिव ꣳ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ।। मधुमान्नो
वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।।
म० स्ना० स० पुनर्जलस्नानं समर्पयामि
शर्करा—ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम् ।
अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम
गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय
त्वा जुष्टतमम् ।। श० स्ना० स० पु० समर्पयामि
पञ्चामृत स्नान—ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ।। पं०स्ना०स०
शुद्धोदक स्नान—कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती ।
गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ।।
गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम्।।शु०स्ना०स०

T

वस्त्र—तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाᳬंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ।।
व० उपवस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत—ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ।। य०स०

मधुपर्क—दधि मध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्म-समन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदो भव शोभन ।। म०स०आ०स०

गन्ध—ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् जातमग्रतः । तेन देव
अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ।। गन्धं समर्पयामि

अक्षत—(श्वेततिल चढ़ायें किन्तु चावल नहीं) ॐ अक्षन्नमी-
मदन्त ह्यव प्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा
नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी ।। अक्षतान् स०

पुष्प—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य
पाᳬंसुरे स्वाहा ।। पु० समर्पयामि

पुष्पमाला—ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ।। पु० स०

तुलसीपत्र—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुख-
ङ्किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ।। तु० स०
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम् ।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ।। तु० स०
ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ।। तु० समर्पयामि

विल्वपत्र—तुलसीविल्वनिम्बैश्च जंबीरैरामलैः शुभैः ।
पञ्चविल्वमिति ख्यातं प्रसीद परमेश्वर ! ।। वि० स०

दूर्वा—विष्णवादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं! प्रीतिदा सदा ।
क्षीरसागरसंभूते ! वंशवृद्धिकरी भव ।। दू० स०

शमीपत्र—शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी ।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ।। श० स०

आभूषण—ॐ रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः ।। आ० स०

अबीर-गुलाल—नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम् ।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम् ।। अ०स०

सु० तै०—ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च ।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ।। सु० तैलं स०

धूप—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत ।।

धूप—ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं
धूर्व यं वयं धूर्वामः । देवानामसि वह्नितमँसस्नितमं
पप्रितमं जुष्टतमन्देवहूतमम् ।। धूपमाघ्रापयामि

दीप—ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।।
दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य (तुलसी छोड़कर पाँच ग्रास-मुद्रा दिखायें)

'प्राणाय स्वाहा'—कनिष्ठा, अनामिका और अँगूठा मिलायें ।।१।।
'अपानाय स्वाहा'—अनामिका, मध्यमा और अँगूठा मिलायें ।।२।।

T

'व्यानाय स्वाहा'—मध्यमा, तर्जनी और अँगूठा मिलायें ॥३॥
'उदानाय स्वाहा'—तर्जनी, मध्यमा अनामिका और
अँगूठा मिलायें ॥४॥
'समानाय स्वाहा'—सब अँगुलियाँ तथा अँगूठा मिलायें ॥५॥

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥ यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन् पुरुषम्पशुम् ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ॥ नैवेद्यं निवे० मध्ये पानीयं—एलोशीरलवङ्गादि कर्पूरपरिवासितम्। प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ! ॥ म० पा० स०।

T

ऋतुफल—बीजपूराम्र-पनस-खर्जूरी-कदली-फलम् ।
नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर ! ॥ ऋ० स०

आचमन—कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम् ।
आचम्यतां जगन्नाथ ! मया दत्तं हि भक्तितः ॥ आ०स०

अखण्ड ऋतुफल—फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ अ०स०

ताम्बूल पूगीफल—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ तां०स०

दक्षिणा—पूजाफलसमृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः ।
स्थापिता तेन मेप्रीतः पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥ दक्षिणां स०

आरती

प्रथम चरणोंकी चार, नाभीकी दो, मुखकी एक या तीन बार और समस्त अङ्गोंकी सात बार आरती करें। पश्चात् शंखजल भक्तोंपर छिड़कें।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव ॥

श्रीसत्यनारायणजीकी आरती

जय लक्ष्मीरमणा श्रीलक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा ॥ जय० ॥टेर॥
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे ।
नारद करत निराजन घण्टाध्वनि बाजे ॥ जय० ॥
प्रकट भये कलिकारण द्विजको दरश दियो ।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके कञ्चनमहल कियो ॥ जय० ॥

दुर्बल भील कठारो जिनपर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी ।।जय०।।
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ।।जय०।।
भावभक्ति के कारण छिन-छिन रूप धरचा ।
श्रद्धा धारण कीनी तिनका काज सरचा ।।जय०।।
ग्वालबाल संग राजा वनमें भक्ति करी ।
मनवाञ्छित फल दीन्यो दीनदयाल हरी ।।जय०।।
चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल मेवा ।
धूप दीप तुलसीसे राजी सतदेवा ।।जय०।।
श्री सत्यनारायणजीकी आरती जो कोई नर गावे ।
भरणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति
(मनवांछित फल) पावे ।।जय०।।

विष्णु-स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।१।।
आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनम् ।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम् ।।२।।
आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम् ।
मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ।

T

कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम् ।
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥३॥
कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥४॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियम् ।
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोप-सङ्घावृतम् ।
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥५॥
यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥६॥
आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनम् ।
द्यूतस्त्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालयावेधनम् ।
लीला गोहरणं रणे विचरणं सन्ध्याक्रियावर्धनम् ।
पश्चाद्भीष्मसुयोधनादिहननं चैतन्महाभारतम् ॥७॥

श्रियः पतिर्यज्ञपतिः प्रजापतिर्धियांपतिर्लोकपतिर्धरापतिः ॥ पतिर्गतिश्चान्धकवृष्णिसात्वतां प्रसीदतां मे भगवान् सतां पतिः ॥८॥ मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंस-राजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः ॥ त्वं पाहि नस्त्रिभुवनञ्च यथाधुनेश ! भारं भुवो हर यदूत्तम ! वन्दनं ते ॥९॥ सत्यव्रतं सत्यपरं

त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितञ्च सत्ये। सत्यस्य सत्यामृत-सत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥१०॥ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥११॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१२॥ आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेव-नमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥१३॥ मूकं करोति वाचालं पंगु लङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥१४॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥१५॥ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष! सर्व-पापहरो भव ॥१६॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दाय च। नन्द-गोपकुमाराय गोविन्दाय नमोनमः ॥१७॥ ध्येयं सदा परि-भवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१८॥ त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्। मायामृगं दयितयेप्सित-मन्वधावन् वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१९॥ अपराध सहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे। अगतिं शरणागतं हरे! कृपया केवलमात्मसात् कुरु ॥२०॥ एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः। दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥२१॥

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः ॥ पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । संबाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः । कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वानुसृतस्वभावात् । करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत् ॥

प्रदक्षिणा

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः ।
तेषाꣳसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

क्षमा-प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर! ॥

विसर्जन

यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च ।
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः! स्वस्थानं परमेश्वर! ॥

यजमान-आशीर्वाद-मन्त्र (अक्षत दें)

अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः ।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुर्विद्यायशो बलम् ॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥

चरणामृत-ग्रहण-विधि

बायें हाथपर दोहरा वस्त्र रखकर दाहिना हाथ रखें, पश्चात् चरणामृत लेकर पान करें। जमीन पर न गिरने दें।

तुलसी-ग्रहण-मन्त्र

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम् ।
भक्षये देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम् ॥

चरणामृत-ग्रहण-मन्त्र

कृष्ण! कृष्ण! महाबाहो! भक्तानामार्तिनाशनम् ।
सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे ॥

पश्चात् नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए चरणामृत पान करें।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

पञ्चामृत-ग्रहण-मन्त्र

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च।
विष्णोः पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

नैवेद्य-ग्रहण-मन्त्र

नैवेद्यमन्नं तुलसीविमिश्रितं विशेषतः पादजलेन विष्णोः।
योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम्॥

शिव-पूजन

पवित्र होकर आचमन-प्राणायाम करके संकल्प वाक्यके अन्तमें "श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं गणपत्यादि-सकलदेवता-पूजन-पूर्वकं श्रीभवानीशंकरपूजनं करिष्ये" कहकर संकल्प करें। नीचे लिखे आवाहन मन्त्रोंसे मूर्तियोंके समीप पुष्प छोड़ें। मूर्ति न हो तो आवाहन करके पूजन करें।

गणपति-पूजन—**आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे॥**

पूजन करके निची लिखी प्रार्थना करें।

प्रार्थना—**लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥**

पार्वती-पूजन—**हिमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥**

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

नन्दीश्वर-पूजन

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निपुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्र-पूजन

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः॥

स्वामीकार्तिक-पूजन

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु॥

कुबेर-पूजन

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

वयꣳसोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ॥

कीर्तिमुख-पूजन

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मे आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

जलहरीमें सर्पका आकार हो तो सर्पका पूजनकर पश्चात् शिव-पूजन करें ।

पाद्य—ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरं नमः ॥ पा० स०

अर्घ्य—ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह । बृहत्यु-
ष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥ अ० स०

आचमन—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥आ०स०

स्नान—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ।। स्नानं समर्पयामि

दुग्धस्नान—गोक्षीरधामन् देवेश ! गोक्षीरेण मया कृतम् ।
स्नपनं देवदेवेश ! गृहाण शिवशंकर ।।
दु० स्ना० स० । पुनर्जलस्नानं समर्पयामि

दधिस्नान—दध्ना चैव मया देव ! स्नपनं क्रियते तव ।
गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय! ।।द०स०,पु०स०

घृतस्नान—सर्पिषा देवदेवेश ! स्नपनं क्रियते मया ।
उमाकान्त! गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम! ।।घृ०स०,पु०स०

मधुस्नान—इदं मधु मया दत्तं तव तुष्टयर्थमेव च ।
गृहाण शम्भो! त्वं भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव ।।म०स०,पु०स०

शर्करास्नान—सितया देवदेवेश ! स्नपनं क्रियते मया ।
गृहाण शम्भो ! मे भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव ।।श०स०,पु०स०

पञ्चामृतस्नान—पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधिसमन्वितम् ।
घृतं मधु शर्करया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।पं० स०

शुद्धोदकस्नान—ॐ शुद्धबालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।।
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।।

T

अभिषेक (जलधारा छोड़ें)

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमना असत् ॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहीꣳश्च सर्वाञ्जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥५॥ यसौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेड ईमहे ॥६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनङ्गोपा अदृशन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम् याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवो वप ॥९॥ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ॥ तस्यास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥११॥ परि ते धन्वेनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिन्नि धेहि तम् ॥१२॥ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ॥ निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमता भव ॥१३॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥१४॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकम्मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् । मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥१५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान्रुद्र भमिनो व्वधी-र्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥ अभिषेकं समर्पयामि ।

विजया—ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत । अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ वि० स०

वस्त्र उपवस्त्र—ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम् याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥ वस्त्रंउपवस्त्रं स०

यज्ञोपवीत—ॐ व्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि-मसतश्च विवः । य० स० आचमनं समर्पयामि

गन्ध—ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ गन्धं समर्पयामि

अक्षत—ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च । अ०स०

पुष्प—ॐ नमः पर्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तर-णाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥ पुष्पं समर्पयामि

पुष्पमाला—नानापङ्कजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि । विल्वपत्र-युतां मालां गृहाण सुमनोहराम् ॥ मा० स०

विल्वपत्र—ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च

वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥१॥ काशीवास निवासी च कालभैरव-पूजनम् । प्रयागे माघमासे च विल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥ दर्शनं विल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् । अघोरपापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३।। अखण्डैर्विल्वपत्रैश्च पूजये शिवशंकरम् । कोटिकन्यामहा-दानं विल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥ गृहाण विल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर । सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय ॥ विल्वपत्राणि समर्पयामि

तुलसी मंजरी—ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वम-ङ्गिरः। मा द्यावापृथिवी अभि शोचीर्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन् ॥ तुलसी-पत्राणि समर्पयामि

दूर्वा—ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च ॥ दूर्वां समर्पयामि

शमीपत्र—अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च । दुःस्वप्न-नाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ॥ श० समर्पयामि

आभूषण—वज्र-माणिक-वैदूर्य-मुक्ता-विद्रुममण्डितम् । पुष्पराग-समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स०

सुगन्ध तैल—(अतर)—अहिरिव भोगैः पर्येति बाहु ज्याया हेतिं परिबाधमानः। रस्तघ्नो विश्वा वायुनानि विद्वान्पुमान् पुमाꣳसं परि पातु विश्वतः॥ सु० तैलं स०

धूप—ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च

शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमिते च। धूपमाघ्रापयामि

दीप—ॐनमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीभ्याय च नमः ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्

नैवेद्य—ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ॥ नैवेद्यं निवेदयामि

मध्ये पानीयं—ॐनमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम ऊर्वर्याय च खल्याय च ॥ मध्ये पानीयं समर्पयामि

ऋतुफल—फलानि यानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ ऋ० स०

अखण्ड फल—कूष्माण्डं मातुलुङ्गञ्च नारिकेलफलानि च।
रम्याणि पार्वतीकान्त सोमेश प्रतिगृह्यताम्। अ०ऋ०

ताम्बूल पूगीफल—ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ तां० पू० फ० समर्पयामि

दक्षिणा—न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे।
दक्षिणां काञ्चनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः। द० द्रव्यं स०

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

शिवजी की आरती

जै शिव ओंकारा, हो शिव-पार्वती प्यारा,
हो शिव ऊपर जलधारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥१॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥टेक॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥२॥ॐ हर०॥

दोय भुज चार चतुर्भुज दशभुज तें सोहै ।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवनजन मोहै ॥३॥ॐ हर०॥
अक्षमाला वनमाला रुण्डमालाधारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥४॥ॐ हर०॥

श्वेताम्बर पीताम्बर वाघम्बर अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥५॥ॐ हर०॥

करमध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जगपालनकर्त्ता ॥६॥ॐ हर०॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणव अक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥७॥ॐ हर०॥

त्रिगुण स्वामीकी आरती जो कोई नर गावै ।
भणत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावै ॥८॥ॐहर०॥

जै शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा,
हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गल रुण्डनमाला,
हो शिव ओढ़त मृग छाला, हो शिव पीते भंगप्याला,

T

हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वतीप्यारा, हो शिव ऊपर जलधारा ॥ ब्रह्माविष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥६॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

शिव-स्तुति (पुष्पांजलि)

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे, सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमूर्वी ॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥१॥ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत् कारणं वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् । वन्दे सूर्य-शशांक-वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् । वन्दे भक्तजनाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥२॥ शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं । शूलं बज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् । नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे । नानालङ्कार-युक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥३॥ श्मशाने-ष्वाक्रीड़ा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः । अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामेवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि ॥४॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥५॥ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः । त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ॥

"कालहर कण्टकहर दुःखहर दारिद्रचहर ।"

आगे लिखे मन्त्रोंसे गाल बजाते हुए बम्बम् बोलकर जलहरी का जल नेत्रोंपर लगायें ।

निरावलम्बस्य समावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम् ।
मदीयपापाचलपातशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम् बम् ।

पञ्चाङ्ग-प्रणाम, मनमें स्मरण, नेत्रोंसे दर्शन, वाणीसे नामोच्चारण करते हुए, दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर प्रणाम करें ।

प्रदक्षिणा (अर्ध प्रदक्षिणा करें)

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे-पदे ।।

क्षमा-प्रार्थना—**प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ।**
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन रक्ष मां परमेश्वर ।।

"अनेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम्"

पार्थिव-शिव-पूजन

पवित्र होकर संकल्पवाक्यके अन्तमें "पार्थिवलिङ्गपूजनं करिष्ये" कहकर सङ्कल्पका जल छोड़ें ।

भूमि-प्रार्थना

ॐ सर्वाधारे धरे देवी त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम् ।
ग्रहिष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे ।।
"ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः ।"

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना । मृत्तिके त्वां चगृह्णामि प्रजया च धनेन च ।। ॐ हराय नमः मृत्तिका ग्रहण करें ।। "ॐबं अमृताय नमः" जलको अभिमन्त्रित करें । "ॐमहेश्वराय नमः मूर्ति बनायें । "ॐ शूलपाणये नमः" मूर्ति-स्थापना करें ।

ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पूजने जपे च विनियोगः ।

अङ्गन्यासः—ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसि । ॐअनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । ॐ सदाशिवदेवतायै नमः हृदि । ॐ बीजाय नमो गुह्ये । ॐ शक्तये नमः पादयोः । ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।ॐनं तत्पुरुषाय नमो हृदये । ॐमं अघोराय नमः पादयोः । ॐ शिं सद्योजाताय नमो गुह्ये । ॐवां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि । ॐ यं ईशानाय नमो मुखे। ॐअङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुँ । ॐ वां कनिष्ठाभ्यां वौषट् । ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् । ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे स्वाहा । ॐ मं शिखायै वषट् । ॐ शिं कवचाय हुँ । ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं अस्त्राय फट् ।

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानिच्छदांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं, ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं, देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥

प्रतिष्ठाः—ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमो मुखे । प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदि । आं बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । इति अङ्गन्यासं कृत्वा ।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रौं यं रं० शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं० शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्ति स्वाहा ॥

नीचे लिखे मन्त्र से पुष्प समर्पण करें।

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि। इत्यावाहयेत्। ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत्त्वम्प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।

पूजन करके नीचे लिखे मन्त्र से विसर्जन करें।

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव-विसर्जनम्।

दूर्गा-पूजन

शुद्धमृत्तिका में यव अथवा गेहूँ रोपण कर उसपर कलश-स्थापनविधिसे कलश स्थापन करें, आचमन प्रणायाम करके संकल्पवाक्यके अन्तमें "ममेहजन्मनि दुर्गा-प्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थ–सिद्ध्यर्थं कलशस्थापनं दूर्गापूजनं तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचनम्, पुण्याहवाचनम्, गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये" कहकर संकल्प करें। पश्चात् नीचे लिखे संकल्प से ब्राह्मण का वरण करें।

T

ॐअद्य दुर्गापूजनपूर्वकं मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत दुर्गासप्तशतीपाठकरणार्थं एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ॥ पश्चात् ब्राह्मण "वृतोस्मि" कहें ।

पूर्वोक्त विधिसे स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणपति-गौरीपूजन, कलश-स्थापन, नवग्रह, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल, षोडषमातृका तथा चतुःषष्ठियोगिनी पूजन करके भगवती-वाहन, भैरव, क्षेत्रपाल तथा ध्वजा आदिका पूजन करें ।

भैरव-पूजन

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिर-नीलो व्यालयज्ञोपवीती । क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।

देवीध्यान

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

आवाहन—आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥

आसन—अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स०

पाद्य—गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पा० स०

अर्घ्य—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥ अ० स०

आचमन—आचम्यतां त्वया देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥ आ० स०

स्नान—जाह्नवी तोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम् ।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम् ॥ स्ना० स०

पञ्चामृतस्नान—पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम् ।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे ॥ पं० स०

शुद्धोदकस्नान—ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशिते॥शु०स्ना०स०

वस्त्र—वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥ व० स०

उपवस्त्र—ॐ यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥ उपवस्त्रं स०

मधुपर्क—दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भवशोभने ॥ म० स०

गन्ध—परमानन्दसौभाग्य-परिपूर्णदिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ॥ ग० स० ॥

कुंकुम—कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम् ।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ कुं० स०

आभूषण—हारकङ्कणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥आ० स०

सिन्दूर—सिन्दूरमरुणाभासं जपा-कुसुम-सन्निभम् ।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ सिं० स०

T

कज्जल—चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्तिकारिके!।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरी ॥ क० स०

सौभाग्यद्रव्य—सौभाग्यसूत्र वरदे ! सुवर्णमणिसंयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेश! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥ सौ०द्र०स०

सुगन्ध तैल (अतर)—चन्दनागरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम् ॥ सु० स०

परिमलद्रव्य—हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि ।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र सुखशान्ति प्रयच्छ मे ॥परि०द्र०स०

अक्षत—रञ्जिताः कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने ॥अ० स०

पुष्प—मन्दारपारिजातादि-पाटलीकेतकानि च ।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥ पु० स०

पुष्पमाला—सुरभिपुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥पु०मा०स०

विल्वपत्र—अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि ! प्रियः सदा ।
विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ विल्वपत्रं स०

धूप—दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम् ।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रगृह्यताम् ॥

धूपमाघ्रापयामि

दीप—घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥

दीपं दर्शयामि । हस्त-प्रक्षालनम् ।

नैवेद्य—अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥
नैवेद्यं निवेदयामि । मध्ये पानीयम् ।

ऋतुफल—द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्बादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥ ऋ० स०

आचमन—कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके ।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके ॥ आ० स०

अखण्ड-ऋतुफल—नारिकेलं च नारिङ्गं कलिङ्गं मञ्जिरं तथा ।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ॥ अ०ऋ०स०

ताम्बूलपूगीफल—एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ॥ तां०पू०स०

दक्षिणा—पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे द्रव्यमीश्वरि !
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥द०द्र०स०

पुस्तक पूजन (जलसे नहीं करें)

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ज्योतिः पूजन (पूजन करके प्रार्थना करें)

शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।
आत्मतत्त्वप्रबोधाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

कुमारीपूजन

२ वर्ष से १० वर्ष तक की कन्याका पूजन करके भोजन करायें ।

प्रार्थना—सर्वस्वरूपे ! सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणी ।
पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥

आरती—नीराजनं सुमाङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि ! नमोऽस्तु ते ॥

दुर्गाजी की आरती

जय अम्बे गौरी! मैया जय मंगलमूरती! मैया जय आनन्दकरणी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ॥जय अम्बे ॥टेर॥

माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको ।
उज्वलसे दोऊ नैना चन्द्रवदननीको ॥जय अम्बे०॥
कनकसमानकलेवर रक्ताम्बर राजैं ।
रक्तपुष्प बनमाला कण्ठन पर साजैं ॥जय अम्बे०॥
केहरिवाहन राजत खड्ग खप्परधारी ।
सुरनरमुनिजनसेवत तिनके दुःखहारी ॥जय अम्बे०॥
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ।
कोटिकचंद्रदिवाकर राजत सम ज्योती ॥जय अम्बे०॥
शुम्भनिशुम्भ विडारे महिषासुरघाती ।
धूम्रविलोचननाशिनि निशिदिन मदमाती ॥जयअम्बे०॥
चौंसठ योगिनि गावत नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥जय अम्बे०॥
भुजा चार अति शोभित खड्गखप्परधारी ।
मनवाञ्छित फल पावत सेवत नरनारी ॥जय अम्बे०॥
कञ्चनथाल विराजत अगरकपूरबाती ।
श्रीमालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योति ॥जय अम्बे०॥
या अम्बेजीकी आरती जो कोई नर गावैं ।
भणत शिवानन्द स्वामी सुखसम्पति पावैं ॥जय अम्बे०॥

पुष्पांजलि—दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्रदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

प्रदक्षिणा—नमस्ते देवि-देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ॥

दण्डवत् प्रणाम—नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः ॥

प्रार्थना—पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मङ्गले ।
अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥

विसर्जन—इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम् ॥

श्रीमहालक्ष्मी-पूजन

आचमन प्राणायाम करके संकल्पवाक्यके अन्तमें "स्थिर-लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वक-सर्वाभीष्टफलप्रात्यर्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं व्यापारे लाभार्थञ्च गणपतिनवग्रहकलशादिपूजनपूर्वकं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-लेखनी कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये" कहकर जल छोड़ें। पश्चात् गणपति, कलश और नवग्रहादि का पूर्वोक्त विधिसे पूजन करके महालक्ष्मीका पूजन करें।

ध्यान—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

आवाहन—ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम् ।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥ आवाहयामि

आसन—ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स०

पाद्य—ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते ॥ पा०स०

अर्घ्यं—ॐ अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ॥ अ०स०

आचमन—ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्ण्वादिभिः स्तुता ।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥ आ०स०

स्नान—ॐ मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमाम्भोरुहवासितैः ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ स्ना० स०

दूध, दही, घृत, मधु और शर्करास्नान पृष्ठ - ७०,८५ ।

पंचामृतस्नान—ॐ पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवीसलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्वजननि ! स्नानार्थं भक्तवत्सले ! ॥ पं० स०

शुद्धोदकस्नान—ॐ तोयं तव महादेवि ! कर्पूरागरुवासितम् ।
तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शु०स०

वस्त्र—ॐ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम् ।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥ व०स०

उपवस्त्र—कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि ॥ उ०स०

मधुपर्क—ॐ कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम् ।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि ! मधुपर्कं गृहाण भोः ॥ म०स०

आभूषण—ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥ आ०स०

गन्ध—ॐ श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम् ।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले ॥ गं० स०

T

रक्त चन्दन—ॐ रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥ र०स०

सिन्दूर—ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये ।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ सिं०स०

कुंकुम—ॐ कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम् ।
अखण्डकामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम् ॥ कुं०स०

अक्षत—ॐ अक्षतान्निर्मलाञ्छुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् ।
गृहाणेमान्महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥ अ०स०

पुष्प—ॐ मन्दारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा ।
मरुवा मोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः ॥ पु०स०

पुष्पमाला—ॐ पद्मशङ्खजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ! ॥ मा०स०

दूर्वा—ॐ विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम् ।
क्षीरसागरसम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥ दू० स०

अतर—ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि! दयानिधे ।
सर्वलोकस्य जननि ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥ सु०स०

अथाङ्गपूजा

'ॐ चपलायै नमः', पादौ पूजयामि ॥१॥ 'ॐ चञ्चलायै नमः' जानुनि पूजयामि ॥२॥, ॐ कमलायै नमः', कटिं पूजयामि ॥३॥ 'ॐ कात्यायिन्यै नमः', नाभिं पूजयामि ॥४॥ 'ॐ जगन्मात्रे नमः', जठरं पूजयामि ॥५॥ 'ॐ विश्ववल्लभायै

नमः', वक्षःस्थलं पूजयामि ॥६॥ 'ॐ कमलवासिन्यै नमः', भुजौ पूजयामि ॥७॥ 'ॐ पद्मकमलायै नमः', मुखं पूजयामि ॥८॥ 'ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः'। नेत्रत्रयं पूजयामि ॥९॥ 'ॐ श्रियै नमः', शिरः पूजयामि ॥१०॥ इत्यङ्गपूजा ॥

अथ पूर्वादिक्रमेण अष्ठदिक्षु अष्टसिद्धीः पूजयेत्

ॐ अणिम्ने नमः ॥१॥ ॐ महिम्ने नमः ॥२॥ ॐ गरिम्णेनमः ॥३॥ ॐ लघिम्ने नमः ॥४॥ ॐ प्राप्त्यै नमः ॥५॥ ॐ प्राकाम्यै नमः ॥६॥ ॐ ईशितायै नमः ॥७॥ ॐ वशितायै नमः ॥८॥ इति अष्टसिद्धिपूजनम् ।

तथैवं पूर्वादि-क्रमेण अष्टलक्ष्मी-पूजनम्

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ॥१॥ ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः ॥२॥
ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः ॥३॥ ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः ॥४॥
ॐ कामलक्ष्म्यै नमः ॥५॥ ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः ॥६॥
ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः ॥७॥ ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ॥८॥

इति अष्टलक्ष्मी-पूजनम्

धूप—ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूपमाघ्रा०

दीप—ॐ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ! ॥ दी०द०, ह०प्र०

नैवेद्य—ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि ! देवि ! नमोऽस्तुते ॥
नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयम् ॥

ऋतुफल—ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।

तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ ऋ०स०

आचमन—ॐशीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।

आचम्यतामिदं देवि ! प्रसीद त्वं महेश्वरि ! ॥ आ०स०

अखण्डऋतुफल—ॐ इदं फलं मयाऽनीतं सरसं च निवेदितम् ।

गृहाण परमेशानि! प्रसीद प्रणमाम्यहम् ॥ अ०ऋ०स०

ताम्बूलपूगीफल—एलालवङ्गकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम् ।

पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ तां०पू०स०

दक्षिणा—ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ द०स०

प्रार्थना—ॐ सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव-पादपङ्कजम् । परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये ॥ भवानि ! त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम-प्रदायिनी । सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि! नमोऽस्तु-ते ॥ नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये । या गति-स्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ॥

दवातमें मोली बाँधकर तथा स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करें—

ॐ मषि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता । सदक्ष-राणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम । या माया प्रकृतिः शक्ति-श्चण्डमुण्डविमर्दिनी । सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव॥ ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

T

या कालिका रोगहरा सुवन्द्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः ।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री ॥

लेखनी-पूजन

कलमपर मौली बाँधकर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें ।

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥
लेखिन्यै नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

प्रार्थना—कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते ।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥

वही, बसना आदिमें केसर या रोलीसे स्वस्तिक बनाकर नीचे लिखा ध्यान करके पूजन करें ।

ॐ या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणावर-दण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना । या ब्रह्माच्युतशङ्कर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें ।

प्रार्थना—ॐ शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥

कुबेर-पूजन

संदूक आदिमें सिन्दूरसे स्वस्तिक बनाकर आवाहन करके पूजन करें।

आवाहयामि देव ! त्वमिहायाहि कृपां कुरु ।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ! ॥

प्रार्थना—धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने ।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

तुला तथा मान-पूजन

सिन्दूरसे स्वस्तिक बनाकर पूजन करें। पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करें।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता ।
साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥

दीपावली-पूजन

दीपक जलाकर पात्रमेंरख पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें।

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक ।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय ॥
ॐ दीपेभ्यो नमः ॥

आरती—ॐ चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥

श्री लक्ष्मीजीकी आरती

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमकूं निशि दिन सेवत हर विष्णु धाता ॥ टेर ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तूही है जगमाता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥जय०॥

T

दुर्गारूप निरञ्जनि सुख सम्पति दाता ।
जो कोइ तुमको ध्यावत ऋधि सिधि धन पाता ।।जय०।।
तूही है पाताल वसन्ती तूही है शुभदाता ।
कर्मप्रभाव - प्रकाशक जगनिधिसे त्राता ।।जय०।।
जिस घर थारो बासो वाहिमें गुण आता ।
कर न सकै सोई करले मन नहिं धड़काता ।।जय०।।
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता ।
खान पानको विभवै तुम बिन कुण दाता ।।जय०।।
शुभ गुण सुन्दरयुक्ता क्षीरनिधी जाता ।
रत्न चतुर्दश तोकूं कोई भी नहिं पाता ।।जय०।।
या आरती लक्ष्मीजीकी जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द अति उमँगे पाप उतर जाता ।।जय०।।
स्थिर चर जगत बचावै कर्म प्रेरल्याता ।
राम प्रताप मैयाकी शुभ दृष्टि चाहता ।।
जय लक्ष्मी माता ।।

श्री सङ्कटनाशन-गणेश स्तोत्र

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् । भक्तावासं स्मरे-न्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ।।१।। प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।२।। लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च । सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।३।। नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् । एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।४।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः। न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिश्च जायते ॥५॥ विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥ जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्। संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥ अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्। तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

श्रीनारदपुराणे संकटनाशननाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीसत्यनारायणाष्टक

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं, लोकनाथं विभुं व्यापकं शङ्करम्। सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं, सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे ॥१॥ सर्वदा लोककल्याणपारायणं, देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम्। दीनहीनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरं, सत्य० ॥२॥ दक्षिणे यस्य गङ्गा शुभा शोभते, राजते सा रमा यस्य वामे सदा। यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं, सत्य० ॥३॥ सङ्कटे सङ्गरे यं जनः सर्वदा, स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीडितः। पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं, सत्य० ॥४॥ वाञ्छितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः, साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः। सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं, सत्य० ॥५॥ ब्राह्मणः साधु-वैश्यश्च तुङ्गध्वजो, येऽभवन् विश्रुता यस्य भक्त्याऽमराः। लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं, सत्य० ॥६॥ येन चाब्रह्मबालतृणं धार्यते, सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत्।

T

भक्तभावप्रियं श्रीदयासागरं, सत्य० ॥७॥ सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं, वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम् पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शाश्वतं, सत्य० ॥८॥ अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत् ॥ तस्य नश्यन्ति पापानि तेनाग्निना, इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि वै ॥९॥

श्रीसत्यनारायणाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्रीमहालक्ष्म्यष्टक

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सूरपूजिते । शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥ नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि० ॥२॥ सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि। सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि० ॥३॥ सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी । मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि० ॥४॥ आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि। योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि० ॥५॥ स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे । महापापहरे देवि महालक्ष्मि० ॥६॥ पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि० ॥७॥ श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि० ॥८॥ महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः। सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा ॥९॥ एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् । द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥ त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् । महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

इन्द्रकृतं श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

कनकधारा-स्तोत्र

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् । अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥१॥ मुग्धा मुहुर्विदधती वदनं मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि । मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥२॥ विश्वामरेन्द्र—पदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि । ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥३॥ आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् । आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥४॥ बाह्वन्तरे मधुजितःश्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति । कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥५॥ कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव । मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥६॥ प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन । मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसञ्च मकरालयकन्यकायाः ॥७॥ दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे । दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥८॥ इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते । दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥ गोर्देवतेति गरुड-

T

ध्वजभामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति । सृष्टि-स्थिति-प्रलय-सिद्धिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥ श्रुत्यै नमस्त्रिभुवनैक-फलप्रसूत्यै रत्यै नमोस्तु रमणीयगुणाश्रयायै । शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥११॥ नमोऽस्तु नालीकनिभेक्षणायै नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै।नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै ॥१२॥ सम्पत्-कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि साम्राज्य-दानविभवानि सरोरुहाक्षि । त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यत् ॥१३॥ यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थ-सम्पदः। सन्तनोति वचनाङ्गमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥१४॥ सरसिज-निलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्य-शोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१५॥ दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम् । प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-लोकाधिराजगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१६॥ कमले कमलाक्ष-वल्लभे त्वं करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः । अवलोकय मामकिञ्चनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१७॥ स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् । गुणाधिका गुरुधन-भोगभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥१८॥

श्रीभगवत्पाद-शङ्कर विरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ कृष्णयजुर्वेदीय-चाक्षुषोपनिषद् ।

ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षुरोग-निवृत्तये विनियोगः ॥

ॐ चक्षुश्चचक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरो भव । मां पाहि पाहि त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय । मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय । यथा अहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय कल्याणं कुरु कुरु । यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः-प्रतिरोधक-दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ।

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय । ॐ नमः करुणाकरामृताय । ॐ नमः सूर्याय । ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः । रजसे नमः । तमसे नमः । असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा अमृतं गमय । उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः । हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः । ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी स्वाहा । ॐ विश्वरूपं घृणिं तं जातवेदसं, हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं तपन्तं । विश्वस्य योनिं प्रतपन्तं महान्तं पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां द्विजो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति । न तस्य कुले अन्धो भवति । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ।

इस चाक्षुषी विद्याके पाठसे नेत्रके रोग दूर होते हैं । आँखकी ज्योति स्थिर रहती है । इसका पाठ नित्य करनेवालेके कुलमें

कोई अन्धा नहीं होता। पाठके अन्तमें गन्धादियुक्त जल से सूर्यको अर्घ देना चाहिये।

श्रीगङ्गाष्टक

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधा भृङ्गारहारावलि स्वर्गारोहण-वैजयन्ति भवतीं भागीरथीं प्रार्थये। त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खतस्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ॥१॥ त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासंघट्टघण्टारणत्कारत्रस्तसमस्तवैरि-वनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥२॥ उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा वाराणस्याः जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः। न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं वारस्त्रीभिश्चमर-मरुतावीजितो भूमिपालः ॥३॥ काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीची-भिरान्दोलितं दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्सम्वीज्यमानः कदा द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥४॥ अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णोर्मदनमथनमौलेर्मा-लतीपुष्पमाला। जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥५॥ एतत्तालतमाल-सालसरलव्यालोलवल्लीलताच्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दु-कुन्दोज्ज्वलम्। गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूतुङ्गस्तनास्फालितं स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ॥६॥ गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्। त्रिपुरारिशिर-

श्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥७॥ पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि । झङ्कारकारि हरिपादरजोपहारि गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥८॥ गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः प्रक्ष्याल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु मोक्षं लभेत् पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥९॥

श्री वाल्मीकिविरचितं गङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीराधाकृष्णयुगलस्तोत्र

अनादिमाद्यं पुरुषोत्तमोत्तमं, श्रीकृष्णचन्द्रं निजभक्तवत्सलम् । स्वयं त्वसङ्ख्याण्डपतिं परात्परं, राधापतिं त्वां शरणं व्रजाम्यहम् ॥१॥ गोलोकनाथस्त्वमतीवलीलो लीलावतीयं निजलोकलीला । वैकुण्ठनाथोऽसि यदा त्वमेव, लक्ष्मीस्तदेयं वृषभानुजा हि ॥२॥ त्वं रामचन्द्रो जनकात्मजेयं, भूमौ हरिस्त्वं कमलालयेयम् । यज्ञावदारोऽसि यदा तदेयं, श्रीदक्षिणास्त्रीप्रतिपत्निमुख्याः ॥३॥ त्वं नारसिंहोऽसि रमा हृदीयं, नारायणस्त्वञ्च नरेण युक्तः । तदा त्वियं शान्तिरतीव साक्षाच्छायेव याता च तवानुरूपा ॥४॥ त्वं ब्रह्म चेयं प्रकृतिस्तटस्था कालो यदेमां च विदुः प्रधानम् । महान्यदा त्वं जगदङ्कुरोऽसि, राधा तदेयं सगुणा च माया ॥५॥ यदान्तरात्मा विदितश्चतुर्भिस्तदा त्वियं लक्षणरूपवृत्तिः यदा विराड्देहधरस्त्वमेव, तदाखिलं वा भुवि धारणेयम् ॥६॥ श्यामञ्च गौरं विदितं द्विधा महस्तवेव साक्षात्पुरुषोत्तमोत्तम् । गोलोक-

धामाधिपतिं परेशं परात्परं त्वां शरणं व्रजाम्यहम् ।।७।।
सदा पठेद्यो युगलस्तवं परं गोलोकधामं परमं प्रयाति सः ।
इहैव सौन्दर्यसमृद्धिसिद्धयो, भवन्ति तस्यापि निसर्गतः पुनः ।।८।।

श्री गर्गसंहितायां ब्रह्मविरचितं श्रीराधाकृष्ण-युगल-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

देव्यपराधक्षमापन-स्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।।१।।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्याच्युतिरभूत ।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरल-तरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।३।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।

परित्यक्त्वा देवान्विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि-कनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदम्
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक-पदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥
न मोक्षस्याकाङ्क्षा न च विभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥
इति देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीशीतलाष्टकम्

विनियोग—ॐ अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः शीतला देवता लक्ष्मीर्बीजम् भवानी शक्तिः सर्वविस्फोटक निवृत्तये जपे विनियोगः ।

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं, रासभस्थां दिगम्बराम् ।
मार्जनी-कलशोपेतां, शूर्पालङ्कृतमस्तकाम् ॥ १ ॥
वन्देऽहं शीतलां देवीं, सर्वरोग-भयापहाम् ।
यामासाद्य निवर्त्तेत, विस्फोटक-भयं महत् ॥ २ ॥
शीतले शीतले चेति, योब्रूयाद्दाह-पीडितः ।
विस्फोटक-भयं घोरं, क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ३ ॥
यस्त्वामुदकमध्ये तु, धृत्वा पूजयते नरः ।
विस्फोटक-भयं घोरं, गृहे तस्य न जायते ॥ ४ ॥
शीतले ज्वरदग्धस्य, पूतिगन्धयुतस्य च ।
प्रनष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥ ५ ॥
शीतले तनुजान् रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान् ।
विस्फोटक-विशीर्णानां, त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥ ६ ॥

गलगण्ड-ग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ।
त्वदनुध्यान-मात्रेण, शीतले यान्ति संक्षयम् ॥ ७ ॥
न मन्त्रो नौषधं तस्य, पाप-रोगस्य विद्यते ।
त्वामेकां शीतले धात्रीं, नान्यां पश्यामि देवताम् ॥ ८ ॥
मृणाल-तन्तु-सदृशीं, नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद्देवि, तस्य मृत्युर्न जायते ॥ ९ ॥
अष्टकं शीतला-देव्याः, यो नरः प्रपठेत् सदा ।
विस्फोटकभयं घोरं, गृहे तस्य न जायते ॥१०॥
श्रोतव्यं पठितव्यञ्च, श्रद्धा-भक्ति-समन्वितैः ।
उपसर्ग-विनाशाय, परं स्वस्त्ययनं महत् ॥११॥
शीतले त्वं जगन्माता, शीतले त्वं जगत्-पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री, शीतलायै नमो नमः ॥१२॥
रासभो गर्दभश्चैव, खरो वैशाख-नन्दनः ।
शीतला-वाहनश्चैव, दूर्वा-कन्द-निकृन्तनः ॥१३॥
एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत् ।
तस्य गेहे शिशूनां च शीतला-रुङ् न जायते ॥१४॥
शीतलाष्टकमेवेदं, न देयं यस्य कस्यचित् ।
दातव्यञ्च सदा तस्मै, श्रद्धाभक्ति-युताय वै ॥१५॥

श्रीस्कन्दपुराणोक्तं शीतलाष्टक-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्रम्

श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीसत्यनारायणाय नमः ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्

सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥ नरायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥२॥ व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् । पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥३॥ व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै ब्रह्मविधये वसिष्ठाय नमो नमः ॥४॥ अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः । अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः ॥५॥ अथ विष्णु सहस्रनाम प्रारम्भः ॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥ यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् । विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥१॥ नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते । अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥२॥ वैशम्पायन उवाच ॥ श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः । युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥३॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किमेकं दैवतं लोके किंवाप्येकं परायणम् । स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥४॥ को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः । किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥५॥ भीष्म उवाच ॥ जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् । स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥६॥ तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् । ध्यायन् स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥७॥ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् । लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥८॥ ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ॥ लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥९॥ एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽ-

T

धिकतमो मतः । यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥१०॥ परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः । परमं यो महद् ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥११॥ पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् । दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥ यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे । यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥१३॥ तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते । विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयावहम् ॥१४॥ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः । ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१६॥ विष्णोर्नाम सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः । छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥१६॥ विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ॥ अनेकरूप-दैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥१७॥ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्र-महामन्त्रस्य भगवान्वेदव्यास ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम् देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः त्रिसामा सामगः सामेति हृदयम् शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम् शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम् उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे सहस्रनामस्तोत्रजपे विनियोगः ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ उद्भवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उद्भवाय अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ देवाय करतल-

करपृष्ठाभ्यां नमः ।। इति करन्यासः ।। अथ हृदयादिषडङ्ग-न्यासः ।। सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः ज्ञानाय हृदयाय नमः । सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा । सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः शक्त्यै शिखायै वषट् । त्रिसामा सामगः साम बलाय कवचाय हुम् । रथाङ्ग-पाणिरक्षोभ्यः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् । शार्ङ्गधन्वा गदाधरः वीर्याय अस्त्राय फट् ।। इति हृदयादिन्यासः ।। ऋतुः सुदर्शनः कालः भूर्भुवस्स्वरोम् । दिग्बन्ध । अथ ध्यानम् ।

ॐ क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतैर्मौक्तिकानां मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः । शुभ्रै रभ्रै रदभ्रै रुपरि-विरचितैर्मुक्तपीयूष वर्षैरानन्दी नः पुनी-यादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः ।।१।। भूः पादौ यस्य नाभि-र्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वासोऽयमब्धिः । अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगो-भोगिगन्धर्वदैत्यैश्चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ।।२।। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।३।। मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् । पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ।।४।। सशङ्खचक्रं सकिरीट-कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् । सहारवक्षः-स्थलकौ-स्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ।।५।। ॐ विश्वं

विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः। भूतकृद् भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥ पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः। अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः। नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥३॥ सर्वः शर्वः शिवः स्थाणु-र्भूतादिर्निधिरव्ययः। सम्भवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभु-रीश्वरः ॥४॥ स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः। अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥५॥ अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः। विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥६॥ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः। प्रभूतस्त्रिककुब्धामः पवित्रं मङ्गलम्परम् ॥७॥ ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः। हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥८॥ ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः। अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥९॥ सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः। अहः सम्वत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥ अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः। वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनि-सृतः ॥११॥ वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः। अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥१२॥ रुद्रो बहु-शिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः। अमृतः शाश्वतस्थाणु-र्वरारोहो महातपाः ॥१३॥ सर्वगः सर्वविद् भानुर्विश्वक्सेनो जनार्दनः। वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥१४॥ लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः। चतुरात्मा

चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥१५॥ भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥१६॥ उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः। अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥१७॥ वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः। अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥१८॥ महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्ति-र्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥१९॥ महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः। अनि-रुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः ॥२०॥ मरीचि-र्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्म-नाभः प्रजापतिः ॥२१॥ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः। अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरा-रिहा ॥२२॥ गुरुर्गुरुतमो धाम: सत्यः सत्यपराक्रमः। निमि-षोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥२३॥ अग्रणीर्ग्रा-मणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः। सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥२४॥ आवर्तनो निवृतात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः। अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥२५॥ सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः। सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥२६॥ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः। सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥२७॥ वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः। वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥२८॥ सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः। नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः

प्रकाशनः ॥२९॥ ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः । ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥३०॥ अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः । औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥३१॥ भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः । कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥३२॥ युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः । अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥३३॥ इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः । क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥ अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः । अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥३५॥ स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः । वासुदेवोबृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥३६॥ अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः । अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥ पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् । महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥३८॥ अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः । सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥३९॥ विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः । महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥ उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः । करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥४१॥ व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः । परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥४२॥ रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः । वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥४३॥ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणमः पृथुः । हिरण्यगर्भः

शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥४४॥ ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः। उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥४५॥ विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् । अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥४६॥ अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥४७॥ यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः। सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥४८॥ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् । मनोहरो जितक्रोधो वीर बाहुर्विदारणः ॥४९॥ स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् । वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०॥ धर्मगुब्धर्मकृद् धर्मो सदसत्क्षरमक्षरम् । अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥५१॥ गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः। आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद् गुरुः ॥५२॥ उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः । शरीरभूतभृद् भोक्ता कपीन्द्रो भूरि-दक्षिणः ॥५३॥ सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुषोत्तमः । विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥५४॥ जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमित विक्रमः । अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥५५॥ अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः । आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥५६॥ महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः । त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥५७॥ महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी । गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥५८॥ वेधाः स्वाङ्गो-

ऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः । वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥५६॥ भगवान् भगहा नन्दी वन-मालो हलायुधः । आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्ग-तिसत्तमः ॥६०॥ सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः । दिविस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥६१॥ त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् । संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥६२॥ शुभांङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः । गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृष-प्रियः ॥६३॥ अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः । श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥६४॥ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः । श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥६५॥ स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः । विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्ति-श्छिन्नसंशयः ॥६६॥ उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः । भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥६७॥ अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः । अनिरुद्धोऽ-प्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥६८॥ कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः । त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥६९॥ कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः । अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥७०॥ ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः । ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥७१॥ महाक्रमो महाकर्मा महा-तेजा महोरगः । महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः

॥७२॥ स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः। पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥७३॥ मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः। वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना-हविः ॥७४॥ सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः। शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥७५॥ भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः। दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥७६॥ विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्। अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥७७॥ एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्। लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥७८॥ सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी। वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥७९॥ अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्। सुमेधाः मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥८०॥ तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वश-स्त्रभृताम्वरः। प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः॥८१॥ चतुर्मूर्तश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः। चतुरात्मा चतुर्भाव-श्चतुर्वेदविदेकपात् ॥८२॥ समावर्त्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः। दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥८३॥ शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः। इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥८४॥ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः। अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्ववि-ज्जयी ॥८५॥ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः। महा-ह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥ कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः। अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः

सर्वतोमुखः ॥८७॥ सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः। न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥८८॥ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः। अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद् भयनाशनः ॥८९॥ अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्। अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥९०॥ भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः। आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥९१॥ धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः। अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमोऽयमः ॥९२॥ सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः। अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥९३॥ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः। रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥९४॥ अनन्तो हुतभुग् भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः। अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥९५॥ सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः। स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्तिः स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥९६॥ अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः। शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥९७॥ अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः। विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥९८॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः। वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥९९॥ अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः। चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशोदिशः ॥१००॥ अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः। जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥१०१॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः । ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥१०२॥ प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः । तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१०३॥ भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः । यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥१०४॥ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः । यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥१०५॥ आत्मयोनिः स्वयञ्जातो वैखानः सामगायनः । देवकीनन्दन स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥१०६॥ शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः । रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१०७॥ सर्वप्रहरणायुध ओं नमः ॥ इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः । नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१०८॥ य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् । नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥१०९॥ वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् । वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥११०॥ धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् । कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥१११॥ भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः । सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥११२॥ यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च । अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥११३॥ न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति । भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ॥११४॥ रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् । भयान्मुच्येत भीत-

स्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥११५॥ दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् । स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥११६॥ वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः । सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥११७॥ न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् । जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११८॥ इमं स्तवमधीयानः श्रद्धा-भक्तिसमन्वितः । युज्येतात्मसुख-क्षान्ति-श्री-धृति-स्मृति-कीर्तिभिः ॥११९॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२०॥ द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः । वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥१२१॥ ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् । जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१२२॥ इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः । वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥१२३॥ सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते । आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१२४॥ ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः । जङ्गमाजङ्गमं चेदंजगन्नारायणोद्भवम् ॥१२५॥ योगो ज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च । वेदाःशास्त्राणि विज्ञानमेतत् सर्वं जनार्दनात् ॥१२६॥ एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः । त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥१२७॥ इदं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् । पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥१२८॥ विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् । भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते

यान्ति पराभवम् ॥१२९॥ अर्जुन उवाच ॥ पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम। भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥१३०॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ये मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डवा। सोहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव नसंशयः॥१३१॥ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्र-पादाक्षि-शिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥१३२॥ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तु ते॥१३३॥ वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्। सर्वभूतनिवासोसि वासुदेव नमोस्तु ते॥१३४॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥१३५॥ आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥१३६॥ एष निष्कण्टकः पन्था यत्र संपूज्यते हरिः। कुपथं तं विजानीयाद् गोविन्दरहितागमम्॥१३७॥ सर्वदेवेषु यत् पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत् फलम्। तत् फलं समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्दनम्॥१३८॥ यो नरः पठते नित्यं त्रिकालं केशवालये। द्विकालमेककालं वा क्रूरं सर्वं व्यपोहति॥१३९॥ दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सव सदा ग्रहाः। विलीयन्ते च पापानि स्तवे ह्यस्मिन्प्रकीर्तिते॥१४०॥ येन ध्यातः श्रुतो येन येनायं पठितः स्तव। दत्तानि सर्वदानानि सुराः सर्वे समर्चिताः॥१४१॥ इहलोके परे वापि न भयं विद्यते क्वचित्। नाम्नां सहस्रं योऽधीते द्वादश्यां मम सन्निधौ॥१४२॥ स निर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च। अश्वत्थसन्निधौ पार्थ तुलसी-

T

सन्निधौ तथा ॥१४३॥ पठेन्नामसहस्रन्तु गवां कोटिफलं लभेत्। देवालये पठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः ॥१४४॥ नरो मुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा। ब्रह्महत्यादिकं घोरं सर्वं पापं विनश्यति ॥१४५॥

इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्रयां संहितायां वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः ॥ पुष्पदन्त उवाच ॥ महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी, स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः। अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥ अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि। स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥ मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्। मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥ तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु। अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥ किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान

इति च। अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥ अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति। अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वा प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥ त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च। रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥ महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्। सुरास्तां तामृद्धि विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥ ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये। समस्तेऽप्येतस्मिन्-पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥ तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कंधवपुषः। ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु-गृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥ अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्। शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणा-म्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥ अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं बलात् कैला-सेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः। अलभ्या पातालेऽप्यलस-चलिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥ यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमध-

श्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनम् । न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥ अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः । स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥ असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः । स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥ मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् । मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥ वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते । जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ॥१७॥ रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति । दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥ हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् । गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥ क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते । अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु

जनः ॥२०॥ क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणा-मार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः। क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषु फलदानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥ प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा। धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥ स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत् पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि। यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्ध-घटनादवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः। अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैव-मखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥ मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रम-दसलिलोत्संगितदृशः। यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्या-मृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५॥ त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च। परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह हि यत्त्वं न भवसि॥२६॥ त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रि-भिरभिदधत्तीर्णविकृति। तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धा-नमणुभिः समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥२७॥ भवश्शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्। अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुति-

रपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥
नमो नेदिष्ठाय प्रियदवदविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः। नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥२९॥
बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः। जनसुखकृते सत्त्वोत्पत्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥ कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः। इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥ असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखिनी पत्रमुर्वी। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य। सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः। स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः। अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥ दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः। महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥ कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः। स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्य-

दिव्यं महिम्नः ॥३७॥ सुरवर-मुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः। व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥ श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण। कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥३९॥ इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः। अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥

श्रीपुष्पदन्तगन्धर्वराजविरचितं श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री शिव-मानस-पूजा-स्तोत्रम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्। जातीचम्पकबिल्वपत्रसहितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥ सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्। शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥ छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा। साष्टाङ्गप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥ आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ॥ संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं

शम्भो तवाराधनम् ॥४॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥

श्रीशिव-मानस-पूजा-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

शिवरामाष्टकम्

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविध ताप-निवारण हे प्रभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ॥१॥
कमललोचन राम दयानिधे हरगुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शंकर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥२॥
स्वजनरञ्जन मङ्गलमन्दिरं भजति तं पुरुषः परमं पदम्।
भवति तस्य सुखं परमाद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥३॥
जय युधिष्ठिरवल्लभ भूपते जय जयार्जित-पुण्य-पयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तुते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥४॥
भवविमोचन माधव मापते सुकविमानसहंस शिवारते।
जनकजारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥५॥
अवनि-मण्डल-मङ्गल मापते जलद-सुन्दर राम रमापते।
निगम-कीर्ति-गुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥६॥
पतित-पावन-नाम-मयी लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥७॥
अमरता परदेव रमापते विजयतस्तव नाम घनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥८॥
हनुमतः प्रियतोषकर प्रभो सुरसरिद्धृतशेखर हे गुरो।

मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥९॥
नरहरे रतिरञ्जन सुन्दरं पठति यः शिवराम-कृतस्तवम् ।
वसति रामरमाचरणाम्बुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ॥१०॥
श्री रामानन्दयति-विरचितं शिवरामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम्

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् । रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥१॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् । उपागम्यब्रवीद्राममगस्त्यो भगवाँस्तदा ॥२॥ राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् । येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥३॥ आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् । जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् । चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥ रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् । पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः । एष देवासुरगणाँल्लोकान्पाति गभस्तिभिः ॥७॥ एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः । महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः ॥८॥ पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः । वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥९॥ आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् । सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः॥१०॥हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् । तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥११॥ हिरण्य-

गर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः । अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः ॥१२॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः-सामपारगः । घनवृष्टिरपां मित्रो विंध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥१३॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः । कविर्विश्वो महा-तेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥१४॥ नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः । तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तुते ॥१५॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः । ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥१६॥ जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः । नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥१७॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः । नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥१८॥ ब्रह्मेशानाच्युते-शाय सूरायादित्यवर्चसे । भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥१९॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने । कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥२०॥ तप्तचामी-कराभाय हरये विश्वकर्मणे । नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥२१॥ नाशयत्येष वै भूतं तथैव सृजति प्रभुः । पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥२२॥ एष सुप्तेषु जार्गात भूतेषु परिनिष्ठतः । एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवा-ग्निहोत्रिणाम् ॥२३॥ देवाश्च क्रतवस्चैष क्रतूनां फलमेव च । यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥२४॥ एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च । कीर्तन्यपुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघवः ॥२५॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् । एतत्त्रि-गुणितंजप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥२६॥ अस्मिन् क्षणे महा-

बाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ॥ एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥२७॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा। धारयामास सुप्रीतोराघवः प्रयतात्मवान् ॥२८॥ आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्। त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥२९॥ रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्। सर्वयत्नेन महता यतस्तस्य बधेऽभवत् ॥३०॥ अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः। निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥३१॥

वाल्मीकीयरामायणोक्तं आदित्यहृदयं सम्पूर्णम् ॥

अन्नपूर्णा स्तोत्रम्

ध्यानम्—तप्तस्वर्णनिभा शशाङ्कमुकुटा रत्नप्रभा-भासुरा, नानावस्त्रविराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता। दर्वी हाटकभाजनञ्च दधती रम्योच्चपीनस्तनी, नित्यं तं शिवमाकलय्य मुदिता ध्येयान्नपूर्णेश्वरी।

ॐ नमः कल्याणदे देवि नमः शङ्करवल्लभे। नमो मुक्तिप्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तुते ॥१॥ नमो मायागृहीताङ्गि नमः शङ्करवल्लभे। माहेश्वरि नमस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥२॥ अन्नपूर्णे हव्यवाहपत्नीरूपे हरप्रिये। कलाकाष्ठास्वरूपे च अन्नपूर्णे नमोऽस्तुते ॥३॥ उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते। चन्द्रचूड़े महादेवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥४॥ विचित्रवसने देवि त्वन्नदानरतेऽनघे। शिवनृत्यकृतामोदे ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥५॥ षट्कोणपद्ममध्यस्थे षडङ्ग युवतिप्रिये।

ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ।।६।। देवि चन्द्रकला पीठे सर्वसाम्राज्यदायिनी । सर्वानन्दकरे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ।।७।। साधकाभीष्टदे देवि भवदुःख-विनाशिनी । कुच-भारनते देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ।।८।। इन्द्राद्यर्चित-पादाब्जे रुद्रादिरूपधारिणी । सर्वसम्पत्प्रदे देवि ह्यन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ।।९।। पूजाकाले पठेद्यस्तु स्तोत्रमेतत् समाहितः । तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ।।१०।। प्रातः-काले पठेद्यस्तु मन्त्रजापपुरःसरम् ।। तस्यैवान्नसमृद्धिः स्यात् वर्द्धमाना दिने दिने ।।११।।

अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीसूक्तम्

विनियोग–"ॐअस्य श्रीहिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य श्रीआनन्द-कर्दम-चिक्लीतेन्दिरा सुता यताऋषयः श्रीरग्निर्देवते आद्यत्रयस्यानुष्टुप्छन्दः कांसोऽस्मीति बृहती छन्दः चन्द्रां प्रभासामिति द्वयोस्त्रिष्टुप्छन्दः अन्त्यायाः प्रस्तार-पंक्ति-श्छन्दो व्यञ्जनानि बीजानि स्वराः शक्तयः बिन्दुः कीलकं ममा-भीष्ट - सिद्धयर्थे धन - धान्य - सकल-समृद्धयर्थे श्रीमहालक्ष्मी-प्रीति-द्वारा चतुर्विध-पुरुषार्थ-सम्पत्तये श्रीमहालक्ष्मी-सूक्त-महामन्त्र-जपे विनियोगः ।" अथ षडङ्ग-न्यासः । ॐ हिरण्यायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ चन्द्रायै तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रजत-स्रजायै मध्यमाभ्यां नमः । ॐ हिरण्यस्रजायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ हिरण्यजायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हिरण्य

चर्णायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासः ॥

ध्यानम्—"अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा करयुगल-धृतेष्टाऽभीति-युग्माम्बुजा च । मणिमय-मुकुटाढ्यालङ्कृता कल्पजालैर्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः" ॥

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि । ॐ रं अग्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि । ॐ वं अमृतात्मकं अमृत-नैवेद्यं समर्पयामि । (श्रीमहालक्ष्म्यै नमः द्वादशगुणितताम्बूलं समर्पयामि)। ॐ सं सर्वात्मकं श्रीमहालक्ष्म्यै नमः सर्वराजो-पचारान् समर्पयामि । एवं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य पाठान्तेऽपि षडङ्गन्यासं कुर्यात् ॥ पाठान्ते च लक्ष्मीगायत्रीं (१०८) जपेत् "ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ इति लक्ष्मीगायत्री मन्त्रः ॥

ॐहिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरु-षानहम् ॥२॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥ आदित्यवर्णे तप-सोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि

तपसा नुदन्तु या आन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ ता म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥ (यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥) पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१७॥ अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१८॥ पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम्। प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥१९॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्व-

रुणं धनमश्विनौ ॥२०॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२१॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥२२॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे । भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२३॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियां । विष्णोः प्रियसखीं देवीं नमाम्य-च्युतवल्लभाम् ॥२४॥ महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२५॥ पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मलायताक्षि । विश्वप्रिये विश्वमनोनु-कूले त्वत्-पादपद्मं हृदि सन्निधत्स्व ॥२६॥ आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः । ऋषयः श्रियपुत्राश्च श्रीर्देवी देवता श्रिया ॥२७॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमावि-धात् पवमानं महीयते । धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसं-वत्सरं दीर्घमायुः ॥२८॥ ऋणरोगादि दारिद्रयं पापक्षुदप-मृत्यवः । भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२९॥

ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

श्रीनवग्रह-स्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोऽरिं सर्व-पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् । नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट-भूषणम् ॥२॥ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति-समप्रभम् ।

T

कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥३॥प्रियङ्गु कलिका-श्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥ हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥ अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥८॥ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥ इति व्यास-मुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥१०॥ नरनारीनृपाणां च भवेद्दुः-स्वप्ननाशनम्। ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥११॥

श्री व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

गजेन्द्र-मोक्ष स्तोत्रम्

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्धया समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥१॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्। पुरुषा-यादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥२॥ यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्। योऽस्मात परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये

स्वयंभुवम् ॥३॥ यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम् । अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ॥४॥ कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु । तमस्तदाऽऽसीद्गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ॥५॥ न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम् । यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥६॥ दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः । चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥ न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा । तथापि लोकाप्यय-सम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥८॥ तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये । अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥९॥ नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने । नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥१०॥ सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता । नमः कैवल्यनाथाय निर्वाण-सुख-संविदे ॥११॥ नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे । निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥ क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे । पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥१३॥ सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्व-प्रत्ययहेतवे । असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥१४॥ नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय । सर्वागमाम्नाय महार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥१५॥ गुणारणिच्छन्न-

चिद्रूष्मपाय, तत्क्षोभविस्फूर्जित-मानसाय। नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम-स्वयं-प्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥ मादृक्-प्रपन्नपशुपाश-विमोक्षणाय, मुक्ताय भूरि-करुणाय नमोऽलयाय। स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत, प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥१७॥ आत्मात्मजाप्त-गृह-वित्त-जनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुण-सङ्ग-विवर्जिताय। मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय, ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥ यं धर्मकामार्थ-विमुक्ति-कामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति। किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्र-दयो विमोक्षणम् ॥१६॥ एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं, वाञ्छन्ति ये वै भगवत्-प्रपन्नाः। अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं, गायन्त आनन्द-समुद्र-मग्नाः ॥२०॥ तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिक-योग-गम्यम्। अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवाति-दूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥२१॥ यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः। नाम-रूप-विभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥२२॥ यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत्स्वरोचिषः। तथा यतोऽयं गुण-सम्प्रवाहो बुद्धिर्मनःखानि शरीरसर्गाः ॥२३॥ स वै न देवासुरमर्त्य-तिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान्न जन्तुः। नाय गुणः कर्म न सन्न चासन्निषेधशेषो जयतादशेषः ॥२४॥ जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या। इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्म-लोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥ सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम्। विश्वात्मानमजं

ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥२६॥ योग-रन्धित-कर्माणो हृदि योग-विभाविते योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥२७॥ नमो नमस्तुभ्यमसह्य-वेग-शक्ति-त्रयायाऽखिल धी-गुणाय । प्रपन्न-पालाय दुरन्त-शक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्य वर्त्मने ॥२८॥ नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहं-धिया हतम् । तं दुरत्यय-माहात्म्यं भगवन्तमितोस्म्यहम् ॥२६॥

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णित-निर्विशेषं, ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदा-भिमानाः । नैते यदोप-ससृपुर्निखिलात्मकत्वात्तत्राखिला-मरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥ तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्नि-वासः स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः । छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमानश्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥३१॥ सोऽन्तः सरस्युरु-बलेन गृहीत आर्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् । उत्क्षिप्य साम्बुज-करं गिरमाह कृच्छ्रान्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥३२॥ तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य, सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार । ग्राहाद्विपाटित-मुखादरिणा गजेन्द्रं संपश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ॥३३॥

श्रीमद्भागवते अष्टमस्कन्धे गजेन्द्रमोक्षस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता दशश्लोकी

न भूमिर्न तोयं न तेजो न वायु-
र्न खं नेन्द्रियं वा न तेषां समूहः ।

अनैकान्तिकत्वात् सुषुप्त्येकसिद्ध-
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥१॥
न वर्णा न वर्णाश्रमाचारधर्मा
न मे धारणाध्यानयोगादयोऽपि ।
अनात्माश्रयाहं ममाध्यासहानात्
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥२॥
न माता पिता वा न देवा न लोका
न वेदा न यज्ञा न तीर्थं ब्रुवन्ति ।
सुषुप्तौ निरस्तातिशून्यात्मकत्वात्
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥३॥
न साङ्ख्यं न शैवं न तत्पाञ्चरात्रं
न जैनं न मीमांसकादेर्मतं वा ।
विशिष्टानुभूत्या, विशुद्धात्मकत्वात्
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥४॥
न चोर्ध्वं न चाधो न चान्तर्न बाह्यं
न मध्यं न तिर्यङ् न पूर्वाऽपरा दिक् ।
वियद्व्यापकत्वादखण्डैकरूप-
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥५॥
न शुक्लं न कृष्णं न रक्तं न पीतं
न कुब्जं न पीनं न ह्रस्वं न दीर्घम् ।
अरूपं तथा ज्योतिराकारकत्वात्
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥६॥

न शास्ता न शास्त्रं न शिष्यो न शिक्षा
न च त्वं न चाहं न चायं प्रपञ्चः ।
स्वरूपावबोधो विकल्पासहिष्णु-
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥७॥

न जाग्रन्न मे स्वप्नको वा सुषुप्ति-
र्न विश्वो न वा तैजसः प्राज्ञको वा ।
अविद्यात्मकत्वात् त्रयाणां, तुरीय-
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥८॥

अपि व्यापकत्वाद्धितत्वप्रयोगात्
स्वतस्सिद्ध-भावादनन्याश्रयत्वात् ।
जगत्तुच्छमेतत् समस्तं तदन्यत्
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥९॥

न चैकं तदन्यद् द्वितीयं कुतस्स्यात्
न वा केवलत्वं न चाऽकेवलत्वम् ।
न शून्यं न चाशून्य-मद्वैतकत्वात्
कथं सर्ववेदान्तसिद्धं ब्रवीमि ॥१०॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचिता दशश्लोकी ॥

श्रीहनुमान-चालीसा

श्रीगुरुचरन सरोज रज निजमनमुकुर सुधारि ।
बरनौं रघुबरबिमल जस जो दायक फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै सुमिरौं पवनकुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहि हरहु कलेश बिकार ॥

जय हनुमान ज्ञानगुनसागर । जय कपीस तिहुँलोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बलधामा । अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवारि सुमतिके संगी ॥
कंचनबरन बिराज सुबेसा । काननकुंडल कुंचितकेशा ॥
हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज-जनेऊ साजै ॥
संकरसुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जगबंदन ॥
विद्यावान गुनी अतिचातुर । राम-काज करिबेकों आतुर ॥
प्रभुचरित्र सुनिबेकों रसिया । राम लखन सीता मनबसिया ॥
सूक्ष्मरूप धरि सियहिं दिखावा । बिकटरूप धरि लंक जरावा ॥
भीमरूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्रके काज सँवारे ॥
लाय सजीवन लखन जिआए । श्रीरघुबीर हरषि उर लाए ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । कहा भरतसम तुम प्रिय भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ तें । कबिकोविद कहि सकैं कहाँ तें ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन जो भानू । लील्यो ताहि मधुरफल जानू ॥
प्रभुमुद्रिका मेलि मुखमाहीं । जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगतके जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
रामदुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिन पैठारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहूको डर ना ॥
आपन तेज सम्हारौ आपै । तीनों लोक हाँकते काँपै ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महावीर जब नाम सुनावै ।।
नाशै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकटतें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सबपर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोई लावै । तासु अमित जीवन फल पावै ।।
चारों युग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु सन्तके तुम रखवारे । असुर निकन्दन रामदुलारे ।।
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता । अस वर दीन्ह जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सादर तुम रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन रामको पावै । जन्म जन्मके दुख बिसरावैं ।।
अंतकाल रघुपति पुर जाई । जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्व सुख करई ।।
संकट हरै मिटै सब पीरा । जो सुमिरत हनुमत बलवीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करो गुरुदेवकी नाईं ।।
यह शतबार पाठ कर जोई । छूटहि बन्दि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्ध साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै सदा हृदय महँ डेरा ।।

दोहा—पवन-तनय संकटहरन मंगलमूरतिरूप ।
रामलषन सीतासहित, हृदय बसहु सुरभूप ।।

श्री हनुमान चालीसा संपूर्ण ।।

श्री संकटमोचन-हनुमानाष्टक

बाल समै रवि लीलि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो । ताहि सो त्रास भयो जगको यह संकट काहु सों

जात न टारो ।। देवन जाय करी विनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो । को नहिं जानत है जगमें कपि संकट-मोचन नाम तिहारो ।।१।। बालिके त्रास कपीस बसे गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो । चौंकि महामुनि साप दियो तब चाहिय कौन उपाय बिचारो ।। कै द्विजरूप ले आए महा-प्रभु सो तुम तासुको संकट टारो । को० ।।२।। अंगदके सँग कीस अनेक गये सिय खोज कपीस उचारों । जीवित ना बचिहौं हमसों जु बिना सुधि लै इतको पगु धारो ।। हेरि थके तटसिन्धु सबै तब लाय सिया सुधि प्रान उबारो । को० ।।३।। रावन त्रास दियो सियको तब रक्षक ह्वै करि सोक निवारो । ताहि समै हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनी-चर मारो ।। माँगत सीय अशोक सों आगि सु दै प्रभु-मुद्रिका सोक निवारो । को०।।४।। बान लग्यो उर लक्ष्मन के तब प्रान तज्यो सुत रावन मारो । लै गृह वैद्य सुषेन समेत तवै गिरिद्रोन सुबीर उपारो ।। लाय सजीवन श्री हनुमान सुलक्ष्मन के तुम प्रान उबारो । को०।।५।। रावन जुद्ध अयान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो । श्रीरघुनाथ समेत सबै दल देखिकै मोह भयो अतिभारो ।। आनि खगेस तबै हनुमान सुबंधन काटि कलेश निवारो । को० ।।६।। बन्धु-समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो । देविहि पूजि भली विधिसों बलि देन दोऊ जिय मंत्र विचारो ।। जाय-सहाय भये तबही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो । को०।।७।।

काज किये बड़ देवनके कई बार महाप्रभु देखि बिचारो। कौन सों संकट मोंर गरीबको जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥ बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो। को० ॥८॥

दोहा—लाल देह लाली लसै, अरु धरि लाल लँगूर।
बज्रदेह दानवदलन, जय जय जय कपिसूर ॥

श्रीसंकटमोचन-हनुमानाष्टक संपूर्ण ॥

सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥१॥ स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥२॥ सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥ कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः। सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥४॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥५॥ सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥६॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥७॥

श्री मद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुन—सम्वादे सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा ॥

चतुःश्लोकी भागवत

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् । सरहस्यं तदङ्गञ्च गृहाण गदितं मया ।। यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः । तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ।। अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत् सदसत्परम् । पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ।। इति माहात्म्यम् ।। ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि । तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ।।१।। यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ।।२।। एतावदेव जिज्ञास्यं तत्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः । अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ।।३।। एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना । भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ।।४।।

श्रीमद्भागवते महापुराणे द्वितीयस्कन्धे चतुःश्लोकी
भागवतम् सम्पूर्णम् ।।

एकश्लोकी रामायण

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धिरामायणम् ।।१।।

गरुड-स्तुति

श्रीविष्णुवाहं प्रणमामि भक्त्या सर्पाशनं दुःखहरं खगेशम् ।
मनोहरं वायुसमानवेगं छन्दोमयं ज्ञानघनं प्रशान्तम् ।।

विष्णुपत्राय शान्ताय बलबुद्धियुताय च ।
पक्षीन्द्रायातिवेगाय गरुडाय नमोनमः ॥

श्रीहनुमत्स्तुतिः

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥
उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यःशोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

अन्नपूर्णा-स्तुतिः

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्कर - प्राण - वल्लभे ।
ज्ञान-वैराग्य-सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वती ॥

कालिका-स्तुतिः

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी ।
सर्वानन्द-करे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

शीतला-स्तुतिः

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमोनमः ॥

पीपल-स्तुतिः

अश्वत्थ हुतभुग्वास गोविन्दस्य सदाप्रिय ।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तु ते ॥

तुलसी-स्तुतिः

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः ।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये ॥

बलिवैश्वदेव

रसोई तैयार होनेपर प्रथम बलिवैश्वदेवके निमित्त पाक ले मण्डल बनाकर संकल्पवाक्यके अन्तमें **ममगृहे पञ्चसूना-जनितसकलदोषपरिहारपूर्वकनित्यकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्री-परमेश्वरप्रीत्यर्थं बलिवैश्वदेवाख्य-महायज्ञं करिष्ये"** कहकर संकल्प करें। पश्चात् अग्निपात्रमें ७, जलपात्रके समीप ३ और मण्डलमें २० आहुतियाँ अंकोंके स्थानपर दें।

नोट—यजमानके लिये करें तो अपना गोत्र तथा नाम उच्चारणकर **"मम"** की जगह यजमानका गोत्र तथा नाम कहकर संकल्पके अन्तमें **"करिष्ये"** की जगह **"करिष्यामि"** कहें।

अग्निपात्रमें (नमक रहित दें)

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम १। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्र० २। ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा इदं गृ० ३। ॐ कश्यपाय स्वाहा इदं क० ४। ॐ अनुमतये स्वाहा इदं अ० ५। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इदं वि० ६। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अ० ७॥

(जलपात्रके समीप) ॐ पर्जन्याय नमः इदं पर्जन्याय न मम १। ॐ अद्भ्यो नमः इदं अ० २। ॐ पृथिव्यै नमः इदं पृ० ३॥

मण्डल में

ॐ धात्रे नमः इदं धात्रे न मम १। ॐ विधात्रे नमः इदं वि० २। ॐ वायवे नमः इदं वा० ३। ॐ वायवे नमः इदं वा० ४। ॐ वायवे नमः इदं वा० ५। ॐ वायवे नमः इदं वा० ६। ॐ प्राच्यै नमः इदं प्रा० ७। ॐ अवाच्यै नमः इदं अ० ८। ॐ प्रतीच्यै नमः इदं प्र० ९। ॐ उदीच्यै नमः इदं उ० १०।

अग्निकोण | दक्षिण | नैर्ऋत्यकोण

पूर्व

मण्डल

७ प्राच्यै नमः

३ वायवे नमः

अग्नि पात्र O

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा १। ॐ प्रजापतये स्वाहा २। ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा ३। ॐ कश्यपाय स्वाहा ४। ॐ अनुमतये स्वाहा ५। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्य स्वाहा ६। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा७

१ धात्रे नमः

१३ सूर्याय नमः

१२ अन्तरिक्षाय नमः

११ ब्रह्मणे नमः

१५ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः

१४ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः

वायवे नमः ४

अवाच्यै नमः ८

(अपसव्य) पितृभ्यः स्वधा नमः १९

विधात्रे नमः २

(कण्ठी कृत्वा) १८

हन्त ते सनकादि मनुष्येभ्यो नमः

भूतानां पतये नमः १७

उषसे नमः १६

६ वायवे नमः

१० उदीच्यै नमः

(सव्य) २० यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः

५ वायवे नमः

९ प्रतीच्यै नमः

गोग्रास, श्वान, काक, अतिथि, पिपीलिकादि पञ्चबलि। पश्चिम

ईशानकोण | उत्तर | वायव्यकोण

पर्जन्याय नमः १ O जलपात्र

अद्भ्यो नमः २

पृथिव्यै नमः ३

T

ॐ ब्रह्मणे नमः इदं ब्र० ११ । ॐ अन्तरिक्षाय नमः इदं अ० १२। ॐ सूर्य्याय नमः इदं सू० १३। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः इदं वि० १४। ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः इदं वि० १५। ॐ उषसे नमः इदं उ० १६ । ॐ भूतानां पतये नमः इदं भू० १७ । (कण्ठी-कृत्वा) ॐ हन्त ते सनकादि मनुष्येभ्यो नमः इदं हन्त० १८ । (अपसव्य) ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः इदं पि० १९ । (सव्य होकर बचे हुए अन्नसे) ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः इदं य० २० ॥

पञ्चबलि (सव्य होकर करें)

गोग्रास (पत्तेपर)—सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥
इदमन्नं गोभ्यो नमः ॥

श्वानबलि (पत्तेपर)—द्वौ श्वानौ श्याशमबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥
इदमन्नं श्वभ्यां नमः ॥

काकबलि (पृथ्वीपर)—ऐन्द्रवारुणवायव्याः सौम्या वै नैर्ऋताः स्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् ।
इदमन्नं वायसेभ्यो नमः ॥

अतिथिबलि (पत्तेपर)—देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसङ्घाः । प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् । इदमन्नं देवादिभ्यो नमः ॥

पिपीलिकादिबलि (पत्तेपर)—पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिता कर्मनिबन्धबद्धाः । तृप्त्यर्थमन्नं हि मया प्रदत्तं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु ॥ इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो नमः ॥

श्राद्ध-विधि

श्राद्धकर्त्ता श्राद्धके उपयुक्त ब्राह्मणोंको पहिले दिन निमन्त्रित करें। वार्षिक तिथिको एकोद्दिष्ट और महालय तथा पर्वमें पार्वणादि श्राद्ध करें। यदि इस प्रकार न कर सकें तो पितृ-तृप्ति के लिये सांकल्पिक श्राद्ध तथा तर्पण अवश्य करें। श्राद्धके समय लोहेके पात्रमें पाकादि न रखें। तथा लोहेका पात्र किसी काम में न लें।

न जातीकुसुमैर्विद्वान् विल्वपत्रैश्च नार्चयेत्। सुरभिनागकर्णाद्यैर्हयारिकाञ्चनारकैः। विल्वपत्रैर्नार्चयेत्तान् पितॄन् श्राद्धविगर्हितैः। तद् भुञ्जन्त्यसुराः श्राद्धं निराशैः पितृभिर्गतम्। सर्वाणि रक्तपुष्पाणि निषिद्धान्यपराणि तु। वर्जयेत् पितृश्राद्धेषु केतकीकुसुमानि च॥ बृ० पा० स्मृ०॥

श्राद्धमें, बिल्वपत्र, मालती, चम्पा, नागकेशर, कर्णं, जवा, कनेर, कचनार, केतकी और समस्त रक्तपुष्प वर्जित हैं। इन पुष्पोंसे पूजन करनेसे पितरोंको नहीं मिलता है, उसे राक्षस ग्रहण करते हैं।

खञ्जो वा यदि वा काणो दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत्।
हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत् पुनः॥मनुस्मृति॥

लँगड़ा, काना, दाताका दास, अङ्गहीन और अधिक अङ्ग वाला निषिद्ध है।

अस्रून् गमयति प्रेतान् कोपोऽरीननृतं शुनः।
पादस्पर्शस्तु रक्षांसि दुष्कृतीनवधूननम्॥मनु०॥

श्राद्धके समय आँसू आनेसे पाक प्रेतोंको, क्रोधसे शत्रुओंको, झूठ बोलनेसे कुत्तोंको, पैरसे छूनेसे राक्षसोंको और पाक उछालनेसे पापियोंको मिलता है।

T

यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ।
तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ ! विप्राणां पादशौचने ॥

हे पाण्डवश्रेष्ठ ! कार्तिक पूर्णिमा को पुष्करतीर्थ में कपिला गौके दानका जो फल होता है, वही फल ब्राह्मणके पैर धोनेसे होता है ।

श्राद्ध (पितृ-श्राद्ध)

आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ दूसरा वस्त्र ले बाईं अनामिका अँगुली की जड़में तीन और दाहिनीमें दो कुशाओंकी पवित्री धारणकर आचमन प्राणायाम करके तीन कुशाओंको सीधी बाँटकर ग्रन्थी लगा अग्रभाग पूर्वमें रखते हुए नीचे लिखे मन्त्रसे पाक तथा सामग्रीको पवित्र करें ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
दृष्टिस्पर्शनदोषात् पाकादीनां पवित्रतास्तु ॥

बाँयें हाथमें पीली सरसों ले नीचे लिखा मंत्र बोलें ।

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम ।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥

पश्चात् उन सरसोंको दाहिने हाथसे **"ॐ प्राच्यै नमः"** (पूर्वमें) **"ॐ अवाच्यै नमः"** (दक्षिणमें) **"ॐ प्रतीच्यै नमः"** (पश्चिममें) **"ॐ उदीच्यै नमः"** (उत्तरमें) **"ॐ अन्तरिक्षाय नमः"** (ऊपर) **"ॐ भूम्यै नमः"** (नीचे) छोड़ें ।

जौ और पुष्पोंसे **"भूम्यै नमः"** बोलते हुए तीनबार पृथ्वीका पूजन करें । गायत्री तथा नीचे लिखा मन्त्र तीन बार जपें ।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमोनमः ॥

T

पिता के श्राद्ध का प्रतिज्ञा-संकल्प

पितुः की जगह, दादाको "**पितामहस्य**", परदादाको "**प्रपितामहस्य**" कहें। **ॐ अद्य विक्रमसम्वत्सरे(अमुक)सङ्ख्यके(अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) गोत्रस्य अस्मत् पितुः** (अमुक) (पितरोंके नामके अन्तमें ब्राह्मणको शर्मणः, क्षत्रियको वर्मणः, वैश्यको गुप्तस्य कहें) **सांकल्पिक-श्राद्धं तदङ्गत्वेन बलिवैश्व-देवाख्यं पञ्चबलि कर्म च करिष्ये ॥**

बलिवैश्वदेव पृष्ठ १७१ तथा पञ्चबलि पृष्ठ १७३ से करें।

आसन, पत्ता आदि दक्षिण में रखें।

अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना मोड़ पितृलोकसे आते हुए पिताका ध्यानकर नीचे लिखा संकल्प आसन पर छोड़ें।

(पितुः की जगह, दादाको '**पितामहस्य**', परदादाको '**प्रपितामहस्य**' कहें।)

अद्य (अमुक) गोत्रस्य पितुः अमुक (शर्मणः, वर्मणः, गुप्तस्य) सांकल्पिक श्राद्धे इदं आसनं ते स्वधा।

गन्धादि

आसन पर गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, सिन्दूर और वस्त्रादि रखें।

पाक लेकर नीचे लिखे मन्त्रसे बायीं ओर भूस्वामीके निमित्त पृथ्वीपर रखें।

ॐ इदमन्नमेतद्-भूस्वामि-पितृभ्यो नमः ॥

पात्रमें पाकादि परोस, पाकके ऊपर मधु लगा पितृ आसनके सम्मुख रखें। उस पात्रके पूर्वमें जलपात्रादि तथा पत्तेपर घृत रखें पश्चात् पितृ आसन तथा अन्न पात्रादिके चारों ओर जलसे मण्डल करें। फिर पात्रका स्पर्श करते हुए बायाँ हाथ अपनी दाहिनी ओर उलटा उसपर दाहिना हाथ बायीं ओर उलटा रखकर नीचे लिखा मन्त्र बोलें।

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा । ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳪंसुरे । ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।

बायें हाथको वैसे ही रखते हुए दाहिने हाथके अंगूठेसे अन्नादिका स्पर्श करें—"**इदमन्नम्**"(पाकस्पर्श),"**इमा आपः**" (जलस्पर्श), "**इदमाज्यम्**"(घृतस्पर्श),"**इदं हविः**"(फिर पाकस्पर्श करें)। पाककी रक्षाके लिये नीचे लिखे वाक्यसे पात्रके बाहर तिल छोड़ें ।

ॐ अपहता असुरा रक्षाᳪंसि वेदिषदः ।

पाकका संकल्प

पिताकी जगह दादाको "**पितामहाय**", परदादाको "**प्रपितामहाय**" कहें। **ॐ अद्य (अमुक) गोत्राय पित्रे (अमुक) (शर्मणे, वर्मणे, गुप्ताय) साङ्कल्पिक-श्राद्धे इदमन्नं परिविष्टं परिविष्यमाणं ब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्यन्तं सोपकरणं ते स्वधा ।**

"**सव्य**"तथा "**पूर्वाभिमुख**" होकर आशीर्वादके लिये प्रार्थना करें। **ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् । वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु ।। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ।। एताः सत्या आशिषः सन्तु ।।**

फिर "**अपसव्य**" तथा "**दक्षिणाभिमुख**" होकर नीचे लिखे संकल्पसे वस्त्रपर दक्षिणा रखें ।

कृतैतत् श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।।

"सव्य तथा पूर्वाभिमुख" होकर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

काक और श्वान बलि छोड़कर बाकी सभी बलि गौको दें। पश्चात् ब्राह्मणोंके पैर धोकर आसनपर बैठा पाक परोसकर भोजन करनेकी प्रार्थना करें। श्राद्धकर्ता पाकका गुण वर्णन करते हुए नम्रतापूर्वक बार-बार परोसें। ब्राह्मण पाककी प्रशंसा न करें। भोजनके पश्चात् तिलक करके दक्षिणा देकर उनसे पूछे **'शेषान्नं किं कर्त्तव्यम्'**, ब्राह्मण कहें **'इष्टैः सह भोक्तव्यम्'**, पश्चात् पितृ-तृप्तिके लिए तर्पण, पृष्ठ ४९ से करके काकबलि कौवेको और श्वानबलि कुत्तेको देकर इष्ट मित्रों सहित भोजन करें।

श्राद्ध (मातृश्राद्ध)

आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ दूसरा वस्त्र ले बाईं अनामिका अंगुलिकी जड़में तीन और दाहिनीमें दो कुशाओंकी पवित्री धारण कर आचमन प्राणायाम करके तीन कुशाओंको सीधी बाँटकर ग्रन्थि लगा अग्रभाग पूर्वमें रखते हुए नीचे लिखे मन्त्रसे सामग्रीको पवित्र करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
दृष्टिस्पर्शनदोषात् पाकादीनां पवित्रताऽस्तु॥

बायें हाथमें पीली सरसों ले नीचे लिखा मन्त्र बोलें।

ॐ नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

पश्चात् उन सरसोंको दाहिने हाथसे **"ॐ प्राच्यै नमः"** (पूर्वमें), **"ॐ अवाच्यै नमः"** (दक्षिणमें), **"ॐ प्रतीच्यै नमः"** (पश्चिममें) **"ॐ उदीच्यै नमः"**(उत्तरमें), **"ॐ अन्तरिक्षाय नमः"** (ऊपर), **"ॐ भूम्यै नमः"** (नीचे छोड़ें)।

जौ और पुष्पोंसे **"ॐ भूम्यै नमः"** बोलते हुए तीन बार पृथ्वीका पूजन करें।

गायत्री तथा नीचे लिखा मन्त्र तीन बार जपें।

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमोनमः॥

माताके श्राद्धका प्रतिज्ञा संकल्प

मातुःकी जगह, **दादीको "पितामह्याः", परदादीको "प्रपितामह्याः"** कहें। **ॐ अद्य विक्रम-सम्वत्सरे (अमुक) सङ्ख्यके (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) गोत्रायाः मातुः (अमुकी) देव्याः साङ्कल्पिक-श्राद्धं तदङ्गत्वेन बलिवैश्वदेवाख्यं पञ्चबलि कर्म च करिष्ये। बलिवैश्वदेव पृष्ठ १७१ तथा पञ्चबलि पृष्ठ १७३ से करें।**

आसन (पत्ता आदि दक्षिणमें रखें।)

"अपसव्य" तथा "दक्षिणाभिमुख" हो बायाँ घुटना मोड़ पितृलोकसे आती हुई माताका ध्यानकर नीचे लिखा संकल्प-कर आसनपर छोड़ें।

मातुःकी जगह दादीको **"पितामह्याः"**, परदादीको **"प्रपितामह्याः"** कहें। **ॐ अद्य (अमुक) गोत्रायाः मातुः (अमुकी) देव्याः साङ्कल्पिक श्राद्धे इदमासनं ते स्वधा।**

गन्धादि

आसनपर गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, सिन्दूर और वस्त्रादि रखें।

मातःकी जगह, दादीको **"पितामही"**, परदादीको **"प्रपितामही"** कहें। **अद्य (अमुक) गोत्रे मातः (अमुकी) देवी एतानि गन्ध-पुष्प-ताम्बूल-पूगीफल-सिन्दूर-वासांसि ते स्वधा।**

पाक लेकर नीचे लिखे मन्त्रोंसे बाईं ओर भूस्वामीके निमित्त पृथ्वीपर रखें।

ॐ इदमन्नमेतद्-भूस्वामि-पितृभ्यो नमः।

पात्रमें पाकादि परोस पाकके ऊपर मधु लगा मातृ-आसनके सम्मुख रखें। उस पात्रके पूर्वमें जलपात्रादि तथा पत्तेपर घृत रखें। पश्चात् मातृ-आसन तथा अन्न-पात्रादिके चारों ओर जलसे मण्डल बनायें। फिर पात्रका स्पर्श करते हुए बायाँ हाथ अपनी दाहिनी ओर उलटा, उसपर दाहिना हाथ बाईं ओर उलटा रखकर नीचे लिखा मन्त्र बोलें।

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे ॥ ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयम् ॥

बायें हाथको वैसे ही रखते हुए दाहिने हाथके अंगूठेसे अन्नादिका स्पर्श करें—**"इदमन्नम्"** (पाकस्पर्श), **"इमा आपः"** (जलस्पर्श), **"इदमाज्यम्"** (घृतस्पर्श), **"इदं हविः"** (फिर पाकस्पर्श करें)। पाककी रक्षाके लिये नीचे लिखे वाक्यसे पात्रके बाहर तिल छोड़ें।

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

पाक का संकल्प

"मात्रे"की जगह, दादीको **"पितामह्यै"**, परदादीको **"प्रपितामह्यै"** कहें। **ॐ अद्य (अमुक) गोत्रायै मात्रे (अमुकी देव्यै) इदमन्नं परिविष्टं परिवेष्यमाणं ब्राह्मणभोजन-तृप्तिपर्यन्तं सोपस्करं ते स्वधा ॥**

सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर आशीर्वादके लिए प्रार्थना करें।

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख होकर नीचे लिखे संकल्पसे वस्त्र पर दक्षिणा रखें।

कृतैतत् श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे॥

सव्य तथा पूर्वाभिमुख होकर नीचे लिखी प्रार्थना करें।

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

काक और श्वान बलिको छोड़कर बाकी सभी बलि गौको दें। पश्चात् ब्राह्मणोंके पैर धोकर आसनपर बैठा पाक परोसकर भोजन करने की प्रार्थना करें। श्राद्धकर्ता पाकका गुण वर्णन करते हुए नम्रतापूर्वक बार-बार परोसें। ब्राह्मण पाककी प्रशंसा न करें। भोजन के पश्चात् तिलक करके दक्षिणा देकर उनसे पूछें 'शेषान्नं किं कर्त्तव्यम्'; ब्राह्मण कहें 'इष्टैः सह भोक्तव्यम्', पश्चात् पितृतृप्तिके लिए तर्पण, पृष्ठ ४६ से करके काकबलि कौवेको और श्वानबलि कुत्तेको देकर इष्ट मित्रों सहित भोजन करें।

इति श्राद्धकर्म सम्पूर्णम्

T

भोजन-विधि

आयुः - सत्व - बलारोग्य - सुख - प्रीति - विवर्द्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥

आयु, सात्विकभाव, बल, आरोग्य, सुख तथा रुचिवर्द्धक घी, दूध आदि युक्त सात्विक अन्नका तथा फल आदिका भोजन करना चाहिए ।

एक पङ्क्त्युपविष्टानां विप्राणां सह भोजने ।
यद्येकोऽपि त्यजेत् पात्रं शेषमन्नं न भुज्यते ॥

एक पंक्तिमें बैठकर भोजन करते हुए ब्राह्मणोंमेंसे यदि कोई एक भी भोजन करके उठ जाय तो औरोंको भी नहीं जीमना चाहिए । अर्थात् औरोंके जीमते हुए बीचमें उठना निषिद्ध है ।

उपलिप्ते शुचौ देशे पादौ प्रक्षाल्य वाग्यतः ॥
प्राङ्मुखोऽन्नं तु भुञ्जीत शुचिः पीठमधिष्ठितः ॥

शुद्ध स्थानमें पैर धोकर आसनपर, पूर्वाभिमुख बैठकर मौन हो भोजन करें ।

नृणां भोजनकाले तु यदि दीपो निवर्त्तते ।
तदन्नं पाणिना स्पृष्ट्वा सावित्रीं मनसा स्मरेत् ॥
पुनर्दीपं ततो लब्ध्वा शेषं भुञ्जीत वाग्यतः ॥

भोजन करते समय दीपक निर्वाण (बुझ जाये) तो भोजन करना बन्द कर दें । पुनः दीपक (या बिजली बत्ती आदि) का प्रकाश होनेपर भोजन करें ।

भोजनके पहले भगवद्-दर्शन कर तुलसी-चरणामृतादि लेना चाहिए । दूसरा वस्त्र लेकर बलिवैश्वदेव करके भोजन-पात्रके चारों ओर जलसे ब्राह्मण चतुष्कोण, क्षत्रिय त्रिकोण और वैश्य गोल मण्डल बनायें । बायें हाथसे भोजनादि न करें ।

T

यदि ऊपर लिखा समस्त विधान नहीं कर सकें तो प्रत्येक मनुष्य को 'आपोशान' के तीन ग्रास अवश्य देने चाहिये।

आपोशान

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्रसे एक-एक ग्रास देकर जल छोड़ें।

ॐ भूपतये स्वाहा १। ॐ भुवनपतये स्वाहा २। ॐ भूतानाम्पतये स्वाहा ३। पश्चात् नीचे लिखा मन्त्र बोलकर आचमन करें। "ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा॥"

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्रसे ग्रास लेकर आचमन करके भोजन करें।

ॐ प्राणाय स्वाहा १। ॐ अपानाय स्वाहा २। ॐ व्यानाय स्वाहा ३। ॐ उदानाय स्वाहा ४। ॐ समानाय स्वाहा ॥५॥ भोजनके अन्तमें "ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा" बोलकर आचमन करके उच्छिष्ट अन्नको नीचे लिखे मन्त्रसे दक्षिणमें फेंक दें।

मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः।
तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

मुखशुद्धिके लिए सोलह कुल्ले करके नीचे लिखे मन्त्र बोलें।

अगस्त्यं कुम्भकर्णञ्च शनिञ्च बडवानलम्।
आहारपरिपाकाय संस्मरामि वृकोदरम्॥
आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः।
समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु॥

संक्षिप्त व्रत-तिथि-निर्णय

व्रतादिमें साधारणतः तिथि दो प्रकारकी मानी जाती है—१—शुद्धा तथा २—विद्धा। इन दोनों प्रकारोंमें जो तिथि सूर्योदयसे प्रथम आरम्भ होकर दूसरे सूर्योदय तक अथवा व्रतनियतकालपर्यन्त हो, वह शुद्धा है। उसमें कोई निर्णयकी

आवश्यकता नहीं है। जो तिथि आदि अथवा अन्तमें अर्थात् तिथिके आरम्भ या समाप्तिमें दूसरी तिथिसे संस्पृष्ट हो, वह विद्धा कहलाती है और उसके निर्णयकी आवश्यकता होती है। यह 'तिथिवेध' कहा जाता है। यह 'वेध' प्रातः सूर्योदयसे पहिले तथा सायंकालमें ३ मुहूर्त या दो मुहूर्तका माना जाता है। मुहूर्त २ घटिकाका नाम है। अन्य सर्वकार्योंमें स्व-स्व-काल-व्यापिनी तिथिका ग्रहण है। एकाहारी व्रतमें मध्याह्न-व्यापिनी तिथि ग्रहण करनी चाहिए। दो दिन हो अथवा तिथि-क्षय हो तो भी पूर्वदिन ही लेना चाहिये। रात्रिव्रतमें प्रदोषकाल-व्यापिनी ग्रहण की जाती है। (सूर्यास्तके बाद '३ मुहूर्त' प्रदोषकाल कहलाता हैं)। दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो परतिथि ग्रहण करना। यह 'अतिसंक्षिप्त' निर्णय है। इस सम्बन्धमें कुछ विशेष ज्ञातव्य है यथा—

प्रतिपदा—शुक्लपक्षकी मध्याह्नोत्तरकालपर्यन्तकी लेना। कृष्ण पक्षकी पूर्वाह्नव्यापिनी श्रेष्ठ है।

द्वितीया—हेमाद्रिके मतसे कृष्णपक्षकी पूर्वाह्नव्यापिनी और शुक्लपक्षकी पराह्नव्यापिनी लेना। माधवाचार्यके मतसे परा ही श्रेष्ठ है।

तृतीया—दोनों ही पक्षोंमें मध्याह्नोत्तरकाल पर्यन्तकी लेना। दो दिन हो तो परदिन ही श्रेष्ठ है। 'गौरी' व्रतमें परा ही लेना।

चतुर्थी—गणेश व्रतमें 'तृतीया विद्धा' पूर्वा लेना अर्थात् चन्द्रोदयकालव्यापिनी श्रेष्ठ है। दो दिन हो तो पूर्वा। अन्य व्रतोंमें 'परा' लेना।

पञ्चमी—'माधव' के मतसे दोनों पक्षकी पूर्वा ही लेना।

'हेमाद्रि' के मतसे कृष्णपक्षमें पूर्वा तथा शुक्लपक्षमें उत्तरा लेना। निर्णयसिन्धुके मतसे 'नागपञ्चमी' परा ही लेना।

षष्ठी—'स्कन्दषष्ठी' व्रतमें पूर्वा लेना। अन्य व्रतोंमें परा ग्रहण करना। षष्ठी व्रतमें अर्धकालव्यापिनी लेना। दोनों दिन अर्धकालव्यापिनीके अभावमें पूर्वा अन्यथा परा लेना।

सप्तमी—सदा पूर्वाह्णव्यापिनी ही लेना।

अष्टमी—(कृष्णजन्माष्टमी-निर्णय पृ० १८८ पर देखें) कृष्णपक्षकी पूर्वा एवं शुक्लपक्षकी उत्तरा लेना। देवीके व्रतमें कृष्णपक्षकी 'परा' ही लेना।

नवमी—दोनों पक्षोंमें पूर्वा लेना।

दशमी—हेमाद्रिके मतसे परा और माधवके मतसे कृष्णा पूर्वा और शुक्ला उत्तरा, कमलाकर भट्टके मतसे पूर्वा लेना। सूर्योदयी श्रेष्ठ है।

एकादशी—व्रतका निर्णय पृ० १८६ पर देखें।

द्वादशी—दोनों पक्षोंमें पूर्वा ही ग्रहण करना।

त्रयोदशी—शुक्लपक्षकी पूर्वा तथा कृष्णपक्षकी परा ग्रहण करना। उपवासरूपव्रतमें दोनों पक्षोंमें परा लेना, शिवरात्रि-व्रतमें रात्रिव्यापिनी लेना।

चतुर्दशी—कृष्णपक्षमें पूर्वा, शुक्लपक्षमें परा लेना। 'उपवास' व्रतमें दोनों पक्षोंकी परा ही लेना। 'शिवरात्रि' व्रतमें पूर्वा ही लेना।

पूर्णिमा तथा अमावस्या—व्रत, दान तथा पितृकार्यमें कार्यकालव्यापिनी अथवा अपराह्णव्यापिनी लेना। दो दिन अपराह्णव्यापिनी हो तो परदिनकी ग्रहण करना। क्षय तिथि पूर्वदिनकी लेना।

कुछ मुख्य व्रतोंके संक्षिप्त निर्णय

एकादशी-निर्णय

वेध-नि०—दशम्यर्कोदये चेत् स्यात् स्मार्तानां वेध इष्यते ।
वैष्णवानां तु पूर्वं स्यात् घटिकानां चतुष्टये ।
वल्लभाः पञ्चनाडीषु केचिद्यामद्वयं जगुः ।
पूर्वं सूर्योदयाद्वेधं, निर्णये वैष्णवैः समाः ।

व्रत-नि०—यो द्वादशी विरामाहः स्मार्तैस्तत्प्रथमं दिनम् ।
उपोष्यमितिहेमाद्रिर्माधवस्य मतं शृणु ।
द्वादश्यां वृद्धिगामिन्यां अविद्धैकादशी यदि ।
लभ्यते सा व्रते ग्राह्याऽन्यत्र, हेमाद्रिनिर्णयः ।
केचिदाहुर्विष्णुभक्तैः स्मार्तैः कार्यं व्रतद्वयम् ।
विद्धायां वा विवृद्धायां एकादश्यां परेऽह्नि च ।
समाप्येत परेह्न्यस्मिन् द्वादशी यदि नान्यथा ।
माधवीय—व्रतस्यैव प्रचारो व्रतनिर्णये ।
एकादशी द्वादशी वा वृद्धिगा चेत् तदा व्रते ।
शुद्धाप्येकादशी त्याज्या सदा विद्धापि वैष्णवैः ।
एकादशी व्रतं कार्यं परेह्नि त्याज्यवासरान् ।
असूयानुगमे नात्र कार्या विद्वद्भिरर्थये ॥

विद्धा और शुद्धा एकादशी

१—एकादशीके दिन सूर्योदयकालमें दशमी हो तो स्मार्त सम्प्रदायके मतमें 'विद्धा' है ।

२—सूर्योदयसे ४ घड़ी पहिले 'अरुणोदय काल' होता है, उसमें दशमी हो तो वैष्णव सम्प्रदायके मतसे 'विद्धा' है ।

३—सूर्योदयसे पूर्व ५ घड़ी, किसी मतसे अर्द्धरात्रिके बाद तक दशमी हो, तो वल्लभसम्प्रदायके मतमें 'विद्धा' होती है। 'विद्धा' एकादशीका त्याग और शुद्धाका ग्रहण करना चाहिए ।

T

१—द्वादशी जिस दिन समाप्त होती हो उसके प्रथम दिन व्रत करना। यह हेमाद्रिका मत है।

२—द्वादशी यदि दूसरे दिन भी (यहाँ प्रथम सूर्योदयसे द्वितीय सूर्योदय तक दिन समझना) हो तो सूर्योदयी वेधरहित एकादशीको व्रत करना। नहीं तो हेमाद्रि मतानुसार व्रत करना।

३—कुछ आचार्योंके मतसे—सूर्योदय वेधवाली एकादशीके दिन तथा दूसरे दिन भी, अथवा दो एकादशी हों तो दूसरी एकादशी और द्वादशी दोनों व्रत कर सकते हैं। परन्तु यह निर्णय वहीं लागू होता है; जहाँ दूसरे दिन द्वादशी समाप्त होती है। पर आजकल माधवीय मतकी ही प्रधानता देखी जाती है।

४—एकादशी या द्वादशी वृद्धि हो तो एकादशी छोड़कर दूसरे दिन व्रत करना, यह 'वैष्णव' मत है।

श्रावणी-निर्णय (संक्षिप्त निर्णय)

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा :—

ऋग्वेदियों के लिए श्रवण और हस्त नक्षत्र तथा पञ्चमी तिथि उत्तम मानी गई है परन्तु प्रधानता श्रवण नक्षत्रकी ही है। यदि पूर्णिमाको श्रवण नक्षत्र न हो तो पञ्चमी या हस्त नक्षत्र लेना चाहिए। यजुर्वेदियों के लिए पूर्णिमा श्रेष्ठ है। श्रवण नक्षत्र होनेसे अति श्रेष्ठ है। सामवेदियों की श्रावणी का समय भाद्रशुक्ल पक्षका हस्त नक्षत्र उत्तम माना गया है। ऐसा धर्मसिन्धुके मतका सारांश है। तथापि आजकल श्रावण पूर्णिमाको ही उपाकर्म करते हैं। इसमें श्रवणपूजा तथा रक्षाबन्धन भद्रारहित पूर्णिमामें ही किया जाता है। सत्यनारायण व्रत कथा भी प्रायः इसी दिन होती है। बलदेव

T

जयन्तीका उत्सव प्रायः प्रदोष—कालमें किया जाता है। पूर्णिमाके दिन संक्रान्ति या चन्द्रग्रहण हो तो ऋषिपञ्चमीको श्रावणीकर्म किया जाता है।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी

१—अर्द्ध रात्रिमें अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र हो तो सर्वोत्तम है। २—यदि रोहिणी नक्षत्र न हो तो निशीथ-व्यापिनी अष्टमीको ही कृष्ण जन्मोत्सव मनाना चाहिए। ३—धर्म सिन्धु-कारके मतमें उदयव्यापिनी अष्टमीको भी ग्रहण किया गया है। ४—रोहिणी नक्षत्र युक्ता अतिश्रेष्ठा तथा जयन्ती नामक होती है। मिलें जहाँ तक अर्द्धरात्रिव्यापिनी ही लेना चाहिए। सामान्यतया इसके भी चार भेद होते हैं।

१—सप्तमीको अर्द्धरात्रिमें अष्टमीका होना।

२—अष्टमीको अर्द्धरात्रिमें अष्टमीका होना।

३—दोनों दिन अर्द्धरात्रिमें अष्टमीका होना।

४—दोनों दिन अर्द्धरात्रिमें अष्टमी का न होना।

पूर्व दिन यदि रोहिणीयुक्ता निशीथव्यापिनी अष्टमी हो तो सर्वश्रेष्ठ है। नहीं तो अष्टमीको व्रत करना चाहिए। दोनों दिन निशीथव्यापिनी हो तो पर दिन व्रत करना। दोनों दिन अर्द्धरात्रिव्यापिनी न मिले तो उदयकालव्यापिनी लेना।

इसमें भी सप्तमी तथा नवमीका वेध और न्यून, सम और अधिक भेदसे अनेक भेद होते हैं। विस्तारभयसे नहीं लिखा गया।

होलिका-दहन

१—पूर्णिमाके दिन प्रदोषव्यापिनी लेना। २—यदि दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो पर दिनकी ग्रहण करना। ३—यदि प्रदोष-

कालमें भद्रा हो तो भद्राका मुख-(आरम्भकी ५ घटिका) भाग त्यागकर होलिका-दहन करना । ४—यदि प्रथम दिन दिनार्द्धके बाद भद्रा हो तथा दूसरे दिन प्रदोषमें पूर्णिमा न हो तो भद्राके बाद सूर्योदयसे प्रथम दहन करना । ५—रात्रिभर भद्रा हो तो भद्राके शेष (पुच्छ भाग) की ३ घटिकामें दहन करना। ६—यदि प्रथम दिन रात्रिभर भद्रा और दूसरे दिन प्रदोष-कालमें 'चन्द्रग्रहण' हो तथा भद्राका पुच्छ दिनमें सूर्योदयके बाद पड़ता हो तो भद्राका मुख भाग छोड़कर बाकी भागमें भद्रामें ही होलिका-दहन करना ।

मन्वादि-तिथि

चैत्र शुक्लमें तृतीया और पूर्णिमा, ज्येष्ठमें पूर्णिमा, अषाढ़में दशमी और पूर्णिमा, श्रावणमें कृष्णपक्षकी अष्टमी, भाद्रपदमें तृतीया, आश्विनमें नवमी, कार्तिकमें द्वादशी और पूर्णिमा, पौषमें एकादशी, माघमें सप्तमी, फाल्गुनमें अमावस्या और पूर्णिमा, ये चौदह तिथियाँ मन्वादि हैं। वैशाख, मार्गशीर्षमें मन्वादि तिथि नहीं होती। तिथियाँ शुक्लपक्षकी पूर्वाह्णव्यापिनी और कृष्णपक्षकी अपराह्णव्यापिनी लेनी चाहिए। इन तिथियोंमें पिण्डरहित श्राद्ध करनेसे भी पितरोंकी पूर्ण तृप्ति होती है।

जयन्ती-निर्णय

जयन्तियोंके प्रसंगसे दश अवतारोंकी जयन्ती-तिथियाँ लिखी जाती हैं। जिस देवताकी जयन्ती-तिथि हो उस दिन चक्रमें लिखे गये समयमें उस देवताका बड़े समारोहसे पूजन तथा भजन, कथा, उपदेश आदिके द्वारा महोत्सव मनाना चाहिए। जयन्ती महोत्सव मनानेसे मनुष्यकी सम्पूर्ण कामनाएँ सिद्ध होती हैं।

जयन्ती-तिथि-चक्रम्

मास	पक्ष	तिथि	अवतार	समय
चैत्र	शुक्ल	३	श्री मत्स्य	अपराह्न
चैत्र	शुक्ल	९	श्री रामचन्द्र	मध्याह्न
वैशाख	कृष्ण	३०	श्री कूर्म	सायंकाल
वैशाख	शुक्ल	१४	श्री नृसिंह	सायंकाल
वैशाख	शुक्ल	३	श्री परशुराम	मध्याह्न
श्रावण	शुक्ल	६	श्री वाराह	अपराह्न
श्रावण	शुक्ल	६	श्री कल्कि	सायंकाल
भाद्रपद	कृष्ण	८	श्रीकृष्ण	अर्द्ध रात्रि
भाद्रपद	शुक्ल	१२	श्री वामन	मध्याह्न
आश्विन	शुक्ल	१०	श्री बुद्ध	सायंकाल

सायं-दीपस्तुति

जिसके घरमें सूर्यास्तसे सूर्योदय तक दीपक जलता है उसके घरमें दरिद्रता नहीं रहती है। दीपक जलाकर नीचे लिखी प्रार्थना करके भजनादि करें।

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तु ते ॥

शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम् ।
मम बुद्धिप्रकाशश्च दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

शयन-विधि

रात्रिमें शयनके समय दिनमें किये हुए कर्मोंका स्मरण करें। यदि त्रुटि हो गयी हो तो उसके निमित्त यथाशक्ति भगवान्का नाम लेकर क्षमा-प्रार्थना करें, मनमें दृढ़संकल्प करें जिससे फिर त्रुटि न हो। नीचे लिखे मन्त्र बोल, पूर्व या दक्षिण की ओर सिर कर तथा भगवत्-स्मरण करते हुए निद्रा लें।

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः। अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ॥ अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः। कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः ॥ सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष । जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् । निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती । तासां स्मरणमात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः ॥ कफल्लम् । कफल्लम् । कफल्लम् ॥

सामग्री-संग्रह

सन्ध्या सामग्री	तर्पण सामग्री
आसन १। माला १। गोमुखी १। पञ्चपात्र २। चमची २। जलपात्र १। अर्घा १। कुशा। पवित्री। तष्टा १। चन्दन। पुष्प।	आसन १। जलपात्र १। टोपिया १। तिल। जौ। चावल। पवित्री २। मोटक १। कुशा। पुष्प। चन्दन। अर्घा।

देवपूजा सामग्री

घरकी—शंख १, घण्टा १, पंचपात्र १, आचमनी १, अर्घपात्र १, जलकलश १, आसन २, दीपपात्र १, धूपपात्र १, रोली, नाल (मौली), चन्दन, घी, चीनी, यज्ञोपवीत, चावल, काजल, सोनेकी टिकड़ी, वस्त्र-श्वेत, वस्त्र-लाल, गेहूँ ।

हलवाईकी—दूध, दही, लड्डू, शिव-पूजनमें भाँग ।

मालीकी—पुष्प, पुष्पमाला, दूर्वा, पञ्चपल्लव, तुलसी, बिल्वपत्र, शमीपत्र, ।

पंसारीकी—शहद, सिन्दूर, अबीर, गुलाल, धूप, सुपारी, सफेद तिल, सप्तधान्य, सर्वौषधि, सप्तमृत्तिका, पंचरत्न, पीली सरसों, कपूर, केसर, अतर, लौंग, इलायची ।

फुटकर—नारियल, फल, पान, कलश, सराँई सिकोरा ।

वसना पूजन सामग्री

घरकी—थाली १ । कटोरा २ । लोटा १ । रोली २ तोला । नाल नग २ । घी १ छ० । चावल १ पाव । चीनी १ छटाँक । रुई । दियासलाई । पाटा १ । गंगाजल । मृत्तिका ।

कपड़ेवालेकी—श्वेत वस्त्र सवा गज । लाल वस्त्र एक गज । गुलाबी रेशमी वस्त्र पाव गज । वरण वस्त्र २ ।

मालीकी—केला-खम्भा २। आमका पत्ता १००। पञ्चपल्लव। पुष्प पुड़िया। पुष्पमाला ५। कमल। दूर्वा । बिल्वपत्र। तुलसी।

कुम्हारकी—कलश १ । भाण्ड २ । सिकोरा २१ ।

हलवाईकी—लाडू यथेच्छ । दूध १ पाव । दही २ छ० ।

पंसारीकी—सुतली । पञ्चरत्न १ पु०। सर्वौषधि १ पु०। सिन्दूर १ पु०। अबीर। गुलाल। केसर। कपूर। चन्दन। धूप।

अगरबत्ती। सुपारी २५। लौंग। इलायची। धनिया। हल्दी। मजीठ। कमलगट्टा। पीली सरसों। शहद। अतर। सप्तमृत्तिका।

साग गोलाकी—नारियल १। डाभ २। पान २५। फल २५।

विशेष—गेहूँ ५ छ०। जनेऊ ५-७। गुड़। मूर्त्ति-गणेश, लक्ष्मी। वसना। चाँदी या ताँबे की घण्टी १। तामड़ी १। सोनेकी टिकड़ी २। रुपया, पैसा। खेरज।

खातेवालेकी—बही ५-७-६-११-१३-१५-२१। दवात। कलम। स्याही। पाट। सोख्ता। रेती आदि।

विशिष्ट सामग्रीका विवेचन

पञ्चपल्लव—बड़, पीपल, आम, पाकर, गूलर।

पञ्चरत्न—सोना, हीरा, मोती, पुखराज, नीलम।

अथवा–(सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, मोती।)

पञ्चगव्य—१ भाग गोबर, २ भाग गोमूत्र, ४ भाग दूध, २ भाग घी तथा २ भाग दही।

पञ्चामृत—गौ का दूध (यथेच्छ) तथा दही, घी, मधु, व चीनी (सम भाग)।

पञ्चधान्य—तिल, मूँग, जौ, उड़द, चावल।

सप्तधान्य—चावल, जौ, गेहूँ, मूँग, उड़द, तिल, काँगनी।

सप्तमृत्तिका—घोड़ा, हाथी, राजद्वार, गौ, नदीसंगम, चौरास्ता, तालाब, बल्मीक। इन स्थानों की मृत्तिका।

सर्वौषधि—मुरा, जटामांसी, वच, कूट, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, आमला, श्वेतचन्दन, नागरमोथा।

नवसमिधा—आक, ढाक, खैर, ऊँगा, पीपल, गूलर, जाँट, दूर्वा, कुशा।

नवरत्न—माणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया। ये रत्न क्रमशः ९ ग्रहों के हैं।

दीपावली पूजन में विशेष सामग्री—दीपक, बाती, तेल, नैवेद्य चक, बतासा, धानकी खील।

नवरात्र में दुर्गापूजा की विशेष सामग्री

देवताके वस्त्र तथा पूजाके वस्त्र, कलश—ताँबे या मृत्तिका का १, तामड़ी १, 'पुण्याह-वाचन' के लिये घण्टी १, काँसीकी कटोरी २, ब्राह्मण-वरणके लिये—धोती, दुपट्टा, अँगोछा, आसन, माला, गोमुखी, लोटा, पञ्चपात्र, चमची, तष्टा, अर्घा, अँगूठी, देवता, पूजाके वस्त्र—श्वेत वस्त्र, लाल वस्त्र, रेशमी वस्त्र, धोती, दुपट्टा, चूनड़ी, केलाखम्भ ४। उपर्युक्त सामग्री इच्छानुसार लेना।

सांकल्पिक श्राद्ध-सामग्री

कुशा, दो कुशाओंकी पवित्री १, तीन कुशाओंकी पवित्री १, तीन कुशाओंका मोटक १, अक्षत, तिल, पीली सरसों, चन्दन, श्वेत पुष्प, ताम्बूल, सुपारी, लवंग, इलायची, यज्ञोपवीत, वस्त्र (धोती, अँगोछा), मधु, दक्षिणा, भोजन-सामग्री।

नित्य-हवन सामग्री

ताम्र कुण्ड अथवा वेदी। घृत। चरु (तिल, चावल, जौ-उत्तरोत्तर अर्द्धभाग), घी, चीनी, मेवा, सुगन्धित द्रव्य यथेच्छ। कुशा तथा दूर्वा। अग्नि, स्रुव। घृत-पात्र। सामान्य पूजा सामग्री।

विवाह-सामग्री

घरकी—सिकोरा २०। लोढ़ी १। वरके वस्त्र २। कन्या के वस्त्र २। मेंहदी १छ०। आटा १ छ०। रोली १ तो०। घृत

आधा सेर। मिठाई आधा सेर। नाल ४-५। चावल आधा सेर। पाटा बड़ा २; छोटा १। गंगाजल। मृत्तिका। दियासलाई, रूई। दही १ छटाँक।

कुम्हारकी—कलश १। गमला १। वारुंडा ४।

खातीकी—खूंटी ४। पाटा १। स्रुव १। तोरण १।

मालीकी—वर-कन्याका हार २। पुष्प। दुर्वा। पुष्पमाला। आमका पत्ता। पञ्चपल्लव।

बरतनवालेकी—पीतलका टोपिया २। पीतलका लोटा १। काँसीकी कटोरी ४। काँसीका कटोरा १। ताँबेकी घण्टी १।

पंसारीकी—सर्वौषधि १पु०। पंचरत्न १पु०। हल्दी की गाँठ ४। सिंदूर। शहद। केसर। सुपारी २५। धूप। लौंग। इलायची। पीली सरसों।

विशेष—जनेऊ ५। नारियल १। सांठी ४। कूकड़ी १। जांट की पत्ती। धानकी खील। छाज १। गोबर। श्वेत वस्त्र १ गज। लाल वस्त्र आधा गज। शंख १। गेहूँ १ छ०। पान २५। फल। आम्रकाष्ठ १ सेर।

ब्राह्मण वरण-सामग्री—धोती, अँगोछा, लोटा, अँगूठी, जनेऊ।

उपनयन सामग्री

घरकी चीजें—नाल ३-४, रोली २ तोला, घृत ऽ१।, रूई, दियासलाई, चोनी ऽ।।, गोवर, गोमूत्र, मूँजली रस्सी (तागड़ी), भारणा ५-७, आभूषण, उबटना। चौकी १। पाटा १। दर्पण १। लाठी १। छाता १। काजल। ५ वस्त्र गुरु के। शिष्य का वस्त्र। आरती की थाली। पानी की घण्टी। चौपड़ा १। सूत की आटी १। आटा ऽ=। गंगाजल, मृत्तिका।

पंसारीकी—केसर, कपूर, धूपबत्ती, पंचमेवा ऽ।।, सुपारी ४० । लौंग, इलायची, अबार)।।, गुलाल)।।, अतर, शहद, सिन्दूर । सर्वौषधि । पीली सरसों । सुतली २ पैसा । लाल रंग २ पैसा । पीला रंग २ पैसा । हरा रंग २ पैसा । काला रंग २ पैसा । सिरयाई । गूगल ऽ= । छाडछडीला । कपूरकाचरी । बेलगिरी । चन्दन चूर । काला तिल । पंचरत्न १ पु० ।

मालीकी—पुष्प, पुष्पमाला, तुलसी ; दूर्वा, कुशा, आमका पत्ता १००, बड़का ७, पीपलका ७, पाकरका ७, गूलरका ७ । जामनका ७ । ढाकका दंड १ । समिधा ६ । आक १ । ढाक १ । खैर १ । ऊंगा १ । पीपल १ । गूलर १ । जाँट १ । दूर्वा । कुशा १ । केलाखंभ ४ । ऊंगा की दातुन १ ।

बरतन—ताम्र-कलश १ । ताम्रघण्टी १ । काँसोकी कटोरी ४ । काँसीका कटोरा १, छायापात्र १, टोपिया पीतलका २, गिलास नग ८, पंचपात्र २ । चमची २ । अर्घा २ । तामड़ी २ । लोटा २ ।

कुम्हारकी—कलश १ । सराँई २० ।

कपड़ेवालेकी—रेशमी दुपट्टा १ । श्वेत वस्त्र १० गज । लाल वस्त्र १ गज । धोती २ । अंगोछा २ । चूनड़ी १ । रेशमी वस्त्र पाव गज ।

हलवाईकी—लड्डू ऽ।।, पेड़ा ऽ।, दूध ऽ।, दही ऽ।। ।

साग गोलाकी—नारियल ५ । गुड़ ऽ। । पान ४०-५० । केला १०-१५ । फल १) । पत्तल १५ ।

अन्न—चावल ऽ२।। ; गेहूँ ऽ१। ; उड़द ऽ। ; तिल ऽ१ ; जौ ऽ।= ।

फुटकर—मृगछाला १ । खड़ाऊँ १ जोड़ा । मखाना ऽ। । तिल तेल २ छटांक । जनेऊ २० । गोमुखी २ । माला २ । आसन २ । काठकी पट्टी नग १ । सोने की टिकड़ी ३-४ ।

T

Isaiah, by Michelangelo—Sistine Chapel, Rome.

Do not feel safe. The poet remembers.
You can kill one but another arises.

—Czeslaw Milosz